सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 156, नई दिल्ली, गुरुवार 14 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आज आप जो दर्द महसूस करते हैं, वहीं कल आपकी ताकत बन जाएगा।

03 डॉक्यूबे बना प्रभावशाली और उद्देश्यपूर्ण कहानियों का अग्रणी मंच

06 12वीं के बाद आईपीएमएटी , आईआईटी(जेईई) और नीट

08 झारखंड में ओड़िया मजबूत अल्पसंख्यक पर संवैधानिक अधिकारों से दरकिनार ?

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा दिल्ली परिवहन विभाग से अपील

दिल्ली परिवहन विभाग की फेस फ्री आनलाइन सेवा पिछले एक हफ्ते से है ठप, क्या करे जनता ?

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

दिल्ली परिवहन विभाग के क्षेत्रीय कार्यालयों को 13 से 4 कर दिया गया यह कह कर की अब जनता को कार्यालय आने की आवश्यकता ही नहीं है पर सच्चाई कुछ और ही उजगार करतीं हैं।

अभी पिछले एक हफ्ते से दिल्ली परिवहन की फेस फ्री आनलाइन सेवा ठप पड़ी है और उसका समाधान करने की किसी को फिक्र नहीं यह साफ़ सिद्ध करता है की कितना जनहित में है परिवहन विभाग और उसमें विराजमान आला अधिकारी।

एक हफ़्ते से फेस फ्री आनलाइन आवेदन प्रक्रिया का ठप रहना और उस पर कोई कार्यवाही नहीं होना अपने आप में सबूत है की आनलाइन फेस फ्री आवेदन जनता के हित में नहीं अपितु उसके नाम से विभागीय खर्चों में कटौती के उद्देश्य से लागू किया गया।

शिकायत कर्ताओं ने बताया की इस परेशानी के लिए सभी अधिकारियों को बताया गया पर उनका मुख्य जवाब था की

यह परिवहन विभाग की वाहन साइट की दिक्क्त नहीं है जो हम जल्द ठीक करवा दे यह आधार से संबंधित परेशानी है और इसका निवारण भी वही करेंगे जब चाहे हमने उन्हें मेल द्वारा सुचित कर रखा है।

फीस का ना कटना भी परिवहन विभाग की साइट की दिक्क्त नहीं है इसका निवारण बैंक द्वारा किया जाएगा ओर इसके प्रति शिकायत मेल द्वारा उन्हें सूचित करने के लिए कर दी जाती हैं पर निवारण करना उनका काम है

अन्य प्रकार की समस्या ओं जो परिवहन विभाग की साइट से संबंधित हैं उसके लिए एनआईसी को मेल द्वारा सुचित कर दिया जाता है और निवारण करना उनका काम है।

यानी कुल मिलाकर देखा जाए तो। **आनलाइन फेस फ्री आवेदन प्रक्रिया में जनता को जो भी परेशानी आ रही हैं उससे परिवहन विभाग दिल्ली और उनके आला अधिकारियों का कोई लेना देना ही नहीं है क्योंकि जनता उनके कारण नहीं अपितु वाहन पोर्टल, आधार साईड और बैंक साइड नियंत्रण करने वाली एजेंसियों के कारण परेशान हैं**

अब सवाल यह उठता है की इन एजेंसियों से जनता को क्या मतलब है क्योंकि जनता तो अपने कार्यों के लिए परिवहन विभाग को सिर्फ़ जानती है और पहले भी कार्यालय में उपस्थिति (अपीयरेंस) करके आफलाइन में फीस कटवाकर पेपर जमा करवा कर अपना कार्य हाथों हाथ करवा लिया करतीं थी, और अब साइबर कैफे वाले को मुंह मांगे पैसे देकर भी फीस नहीं कटवा पाती और धक्के खाती रहती हैं **क्या इसी को कहते है सुविधाजनक फेस फ्री आनलाइन सेवा बड़ा सवाल ?**

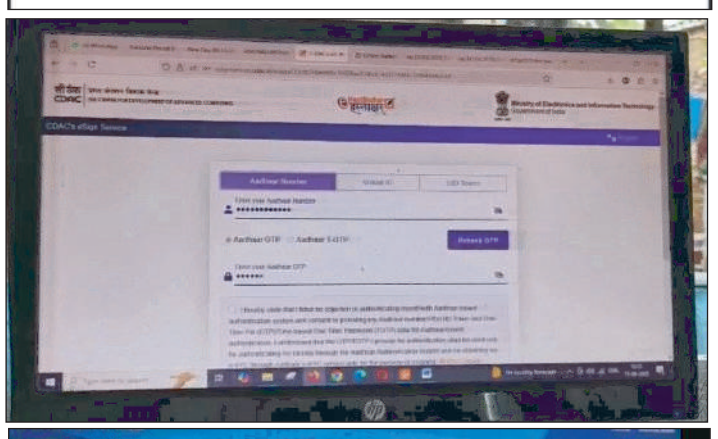

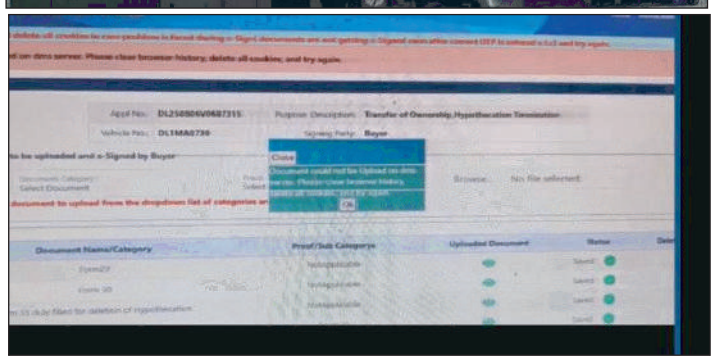

आपकी जानकारी हेतु बता दें वैसे तो आप में से अनगिनत वाहन मालिक, ड्राइवर और परिवहन विभाग के आला अधिकारी, अधिकारी और कर्मचारी अच्छी तरह जानते हैं की पिछले एक हफ्ते से दिल्ली में कोई भी फीस किसी भी वाहन के कार्य हेतू फेस फ्री आवेदन यानी आधार कार्ड द्वारा नहीं हो पाई है और सभी जानकारी होने के बावजूद विभाग ओर विभाग के आला अधिकारियों के साथ दिल्ली सरकार है चुप।

आपकी संतुष्टि के लिए कुछ पेपर साथ में सलग्न है जो इस शिकायत को पुख्ता बयान करने में सक्षम हैं

आपकी जानकारी हेतु बता दें सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा सभी वाहन मालिकों को मोबाइल मैसेज द्वारा सुचित किया गया है की (हिन्दी रूपांतरण)

सभी वाहन मालिकों से अनुरोध है कि वे अपने पंजीकृत वाहनों में आधार प्रमाणीकरण प्रक्रिया के माध्यम से मोबाइल नंबर जोड़ें/अपडेट करें और पुष्टि करें। कृपया parivahan.gov.in पोर्टल पर जाएँ और यह प्रक्रिया ऑनलाइन पूरी करें। यदि पहले ही कर लिया गया है, तो कृपया इसे अनदेखा करें। MoRTH

अब आप बताए की पिछले एक हफ्ते से जब आधार प्रमाणीकरण प्रक्रिया के कारण ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया ठप है तो वाहन मालिक जिनके मोबाइल नंबर आधार के अनुसार नहीं हैं उन्हें कैसे जोड़ / अपडेट कर सकते हैं तथा

जिनके मोबाइल नंबर अपडेट ही नहीं है उन्हें सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी यह मैसेज/ सूचना कैसे पहुंच जाएगी और वह इस प्रणाली को करने का प्रयास कर पाएंगे।

उपहास के अलावा वाहन मालिकों को परेशान करने के अलावा क्या परिवहन विभाग के पास कोई अन्य कार्य नहीं बचा क्या।

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा दिल्ली परिवहन विभाग से अपील है की ऑनलाइन फीस फ्री आवेदन में जिन भी एजेंसी के कारण जनता को इस सेवा को प्राप्त करने में परेशानी उत्पन्न होती हैं उस पर शिंकजा कसे या जनता को पहले जो सेवा आफलाइन उपलब्ध थी तत्काल प्रभाव से मुहैया करवाए।

13/8/25 सुबह जिला मजिस्ट्रेट पश्चिमी दिल्ली के आदेश पर स्वच्छ भारत अभियान के तहत **BG- 7** के अंदर पश्चिम विहार मैं स्वच्छता अभियान का कार्यक्रम किया गया सिविल डिफेंस और **RWA** के सहयोग से

आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की टैक्सी बसों को स्पीड लिमिट डिवाइस की गुलामी से आज़ादी दिलाने के लिए नितिन गडकरी से की मांग

परिहवन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट नें श्री नितिन गड्करी जी, परिवहन मंत्री को पत्र लिखकर मांग की है। हमारे ड्राइवर्स और हमारे पर्यटको को भी स्पीड लिमिट डिवाइस से आज़ादी दिलवाओ. आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की सारी टैक्सी बसों से स्पीड लिमिट हटाओ. हमें भी इस गुलामी से आजाद करो. ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना हैं की हाइवे पर आज कल काफी लूट पाट होती रहती है । जिसकी वजह से महिलाओ की सुरक्षा का खतरा बड गया है । जिस प्रकार से आज कल बलात्कार की घटनाए हो रही हे कभी भी देसी विदेशी टूरिस्ट के साथ एसी घटनाए होने की सम्भावना हो सकती हैं क्योकि हाईवे पर बदमाश ओवरटेक करके गाड़ियों को लूट लेते हे। प्राइवेट गाड़ियों की स्पीड ज्यादा होती है और हमारी टूरिस्ट टैक्सी बसों की स्पीड को 80 किलो मीटर प्रति घंटे की स्पीड में बांधा गया हैं और अजीब बात ये हैं की एक्सप्रेस वे और हाई वे पर दूसरी सारी प्राइवेट गाड़ियों की स्पीड 120 किलो मीटर प्रति घंटा हैं. सम्राट का कहना हैं की हम इन एक्सप्रेस वे हाई वे पर गाडी चलाने का करोडो रूपया टोल टैक्स के नाम पर देते हैं.

अभी हाल में ही दिल्ली में इंटरपोल के सम्मेलन में आये हुए अधिकारियो ने आगरा जाते हुए ड्राइवर द्वारा धीमी गति से टूरिस्ट टैक्सी चलाने की शिकायत की और बहुत नाराजगी जताई । क्योंकि उस टूरिस्ट टैक्सी में स्पीड लिमिट डिवाइस लगा हुआ था. वैसे भी देसी विदेसी टूरिस्ट रात को भी सफर करते हे। अगर कल को किसी भी तरह की कोई दुर्घटना या लूट पाट या बलत्कार स्पीड लिमिट डिवाइस की वजह से होती हे तो इसकी जिम्मेदारी किस विभाग की होंगी ? ? ? ये भी तय करना पड़ेगा. यें स्पीड लिमिट का फरमान मिनिस्ट्री ऑफ़ हाईवे एंड रोड ट्रांसपोर्ट मिनिस्ट्री ने मोटर व्हीकल एक्ट के प्रावधान द्वारा किया गया हैं, सम्राट का कहना हैं ये मुद्दा महिलाओ की सुरक्षा से भी जुडा हैं. स्पीड लिमिट डिवाइस आल इंडिया टूरिस्ट की सारी टैक्सी बसों से हटाना इसलिए भी जरूरी हैं जिस से महिलाओ और देसी विदेशी पर्यटको की जान माल की सुरक्षा हों सके।

दिल्ली में 12 मंजिला इमारत में होगा DTC मुख्यालय, खर्च होंगे 206 करोड़; पीपीपी मोड में तैयार होगी बिल्डिंग

दिल्ली में DTC मुख्यालय की नई इमारत बनाने की योजना को मंजूरी मिल गई है। 206 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली इस 12 मंजिला इमारत का पुनर्विकास डीएसआइआइडीसी द्वारा किया जाएगा। यह परियोजना पीपीपी मोड में होगी। पुरानी इमारत 2023 की बाढ़ में जलमग्न हो गई थी। DTC मुख्यालय के पुनर्विकास से इसकी क्षमता में वृद्धि होगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। पूर्व की आप सरकार के समय दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) के मुख्यालय की नई इमारत बनाने की जो योजना कागजों में ही रह गई थी, इसके अब जमीन पर उतरने की उम्मीद जगी है। दिल्ली की भाजपा सरकार इसे लेकर गंभीर है।

डीटीसी बोर्ड ने आइपी एस्टेट स्थित डीटीसी मुख्यालय के पुनर्विकास को 206 करोड़ रुपये की लागत से बनाए जाने की इस परियोजना को मंजूरी दे दी है। परियोजना पर पीपीपी मोड में काम किया जाएगा। यह एक अर्ध व्यावसायिक भवन होगा। मुख्यालय के लिए 12 मंजिल भवन बनाए जाने की योजना है।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) मुख्यालय का पुनर्विकास दिल्ली राज्य औद्योगिक एवं ढांचागत विकास निगम (डीएसआइआइडीसी) द्वारा किया जाएगा। इमारत के पुनर्विकास परियोजना को शुरू करने के लिए अब औपचारिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

नए भवन में भूतल के अलावा 12 मंजिलें होंगी, जिनमें पार्किंग और सेवाओं के लिए दो बेसमेंट होंगे। अधिकारियों ने बताया कि भवन का कुल निर्मित क्षेत्रफल 12,000 वर्ग मीटर होगा, जबकि 30 साल की लीज अवधि के लिए डीएसआइआइडीसी का हिस्सा निर्मित क्षेत्रफल का 40 प्रतिशत होगा।

प्रस्तावित है कि डीएसआइआइडीसी क्षेत्र में छठी मंजिल से लेकर बारहवीं मंजिल तक के स्तर शामिल होंगे। अधिकारियों ने बताया कि बस डिपो और डीटीसी मुख्यालय दोनों का निर्माण 1958 में हुआ था। बस डिपो में वर्तमान में 180 बसें खड़ी करने की क्षमता है। पुनर्विकास के बाद क्षमता में वृद्धि होगी।

डीटीसी भवन और डिपो के पुनर्विकास के प्रस्ताव को अप्रैल 2010 में तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के कार्यकाल के दौरान कैबिनेट के एक फैसले के जरिए मंजूरी मिली थी। हालांकि, यह परियोजना अधर में लटकी रही। आप सरकार के कार्यकाल के दौरान डीएसआइआइडीसी ने परियोजना का व्यवहार्यता अध्ययन करने के लिए एक सलाहकार नियुक्त किया था।

हालांकि, इस बारे में कानूनी राय लेने का फैसला किया गया कि क्या लगभग 15 साल पहले लिया गया 2010 का कैबिनेट का फैसला वर्तमान के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी है। भाजपा के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग ने अब इस परियोजना को आगे बढ़ाने का फैसला किया है। 2023 की बाढ़ के दौरान डीटीसी मुख्यालय जलमग्न हो गया था। यह इमारत अभी दो मंजिला है।

राजमाता अहिल्याबाई होलकर बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि

धर्म, न्याय और जनकल्याण की अद्वितीय प्रतिमूर्ति आज के दिन हम उस महान मातृशक्ति को नमन करते हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन जनता की सेवा, राष्ट्र की उन्नति और संस्कृति के संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया।

राजमाता अहिल्याबाई होलकर ने त्याग, पराक्रम और प्रशासनिक कुशलता का जो आदर्श स्थापित किया, वह युगों-युगों तक प्रेरणा देता रहेगा।

काशी से केदारनाथ, सोमनाथ से रामेश्वरम तक उनके निर्माण आज भी हमारी सभ्यता की जीवंत धरोहर हैं।

हे राजमाता, आपका आशीर्वाद हम सब पर बना रहे, और आपके पदचिन्हों पर चलकर हम राष्ट्र व समाज की सेवा करते रहें।

विनम्र श्रद्धांजलि

ऊब छठ व्रत आज

भाद्रपद महीने की कृष्ण पक्ष की छठ (षष्ठी तिथि) को ही ऊब छठ कहा जाता है। ऊब छठ को चन्दन षष्ठी, चानन छठ और चंद्र छठ के नाम से भी जाना जाता है।

वहीं देश के कई राज्यों में इस दिन को हलषष्ठी के रूप में भी मानते है। माना जाता है कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण के बड़े भाई भगवान बलराम का जन्म हुआ था। और उनका शस्त्र हल था, इसलिए इस दिन को हलषष्ठी भी कहा जाता है। वहीं कई जगह इस दिन को चंदन षष्ठी के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है। भगवान कृष्ण के बड़े भ्राता बलराम का जन्म दिवस (चंद्र षष्ठी पर्व) 14 अगस्त को ऊब छठ के रूप में मनाया जाएगा।

ऊब छठ पूजा विधि

==========

महिलाएं और युवतियां पूरे दिन उपवास रख, शाम को दुबारा नहाती है। फिर नए कपड़े पहन कर मंदिर जा वहां भजन करती हैं। इस दिन कुछ लोग अपने इष्ट के साथ-साथ लक्ष्मी जी और और गणेश जी की भी पूजा करते है।

ऊब छठ में चांद का महत्व

==========

जिसके बाद वह भगवान को कुमकुम और चन्दन से तिलक कर सिक्का ,फल, फूल , सुपारी अक्षत अर्पित करते है। फिर ऊब छट व्रत और गणेशजी की कहानी सुनने के बाद भी पानी नहीं पी सकते, जब तक चांद न दिख जाए। चांद दिखने के बाद चांद को जल के छींटे देकर कुमकुम, चन्दन, मोली, अक्षत चढ़ाकर भोग अर्पित कर अर्ध्य दिया जाता है।

ऊब छठ नियम

==========

ऊब छठ के व्रत का नियम है कि जब तक चांद नहीं दिखेगा तब तक महिलाओं को खड़े रहना पड़ता है। व्रती मंदिरों में ठाकुरजी के दर्शन कर पूजा अर्चना करके परिवार के सुख-समृद्धि की कामना करती हैं और खड़े रहकर पौराणिक कथाओं का श्रवण करती हैं। इसके बाद एक ही जगह खड़े होकर परिक्रमा करे के व्रत खोला जाता है। लोग व्रत खोलते समय अपने रिवाज के अनुसार नमक वाला या बिना नमक का खाना खाते है।

षष्ठी तिथि

==========

पंचांग के अनुसार, षष्ठी तिथि 14 अगस्त को सुबह 4:23 बजे शुरू से होगी और 15 अगस्त को सुबह 2:07 बजे तक खत्म होगी। कोई भी व्रत उदया तिथि के आधार पर रखा जाता है, इसलिए हलषष्ठी 14 अगस्त को मनाई जाएगी। यह त्योहार रक्षाबंधन के 6 दिन बाद और जन्माष्टमी से पहले आता है।

पूजन सामग्री

==========

कुमकुम, चावल, चन्दन, सुपारी, पान, कपूर, फल, सिक्का, सफ़ेद फूल, अगरबत्ती, दीपक।

ऊब छठ व्रत कथा

==========

ऊब छठ का व्रत और पूजा करते समय ऊब छठ व्रत की कथा सुननी चाहिए। कथा इस प्रकार है कि, किसी गांव में एक साहूकार और इसकी पत्नी रहते थे। साहूकार की पत्नी रजस्वला होने पर भी सभी प्रकार के काम कर लेती थी। रसोई में जाना, पानी भरना, खाना बनाना, सब जगह हाथ लगा देती थी, उनके एक पुत्र भी था। पुत्र की शादी के बाद साहूकार और उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई। अगले जन्म में साहूकार एक बैल के रूप में और उसकी पत्नी कुतिया बनी। ये दोनों अपने पुत्र के यहां ही थे। बैल से खेतों में हल जुताया जाता था और कुतिया घर की रखवाली करती थी। श्राद्ध के दिन पुत्र ने बहुत से पकवान बनवाये, जहां खीर भी बन रही थी। अचानक कहीं से एक चील जिसके मुंह में एक मरा हुआ सांप था, उड़ती हुए वहां आई और वो सांप चील के मुंह से छूटकर खीर में गिर गया। कुतिया ने यह देखा और उसने सोचा इस खीर को खाने से कई लोग मर सकते है। उसने खीर में मुंह अड़ा दिया ताकि उस खीर को लोग ना खाये। पुत्र की पत्नी ने कुतिया को खीर में मुंह अड़ाते हुए देखा तो गुस्से में एक मोटे डंडे से उसकी पीठ पर मारा। तेज चोट की वजह से कुतिया की पीठ की हड्डी टूट गई, जिसके बहुत उसे दर्द हो रहा था। रात को वह बैल से बात कर रही थी। उसने कहा तुम्हारे लिए श्राद्ध हुआ तुमने पेट भर भोजन किया होगा। मुझे तो खाना भी नहीं मिला, मार पड़ी सो अलग। बैल ने कहा मुझे भी भोजन नहीं मिला, दिन भर खेत पर ही काम करता रहा। ये सब बातें बहु ने सुन ली और उसने अपने पति को बताया। जिसके बाद उसने एक पंडित को बुलाकर इस घटना का जिक्र किया। पंडित में अपनी ज्योतिष विद्या से पता करके बताया की कुतिया उसकी मां और बैल उसके पिता है। उनको ऐसी योनि मिलने का कारण मां द्वारा रजस्वला होने पर भी सब जगह हाथ लगाना, खाना बनाना, पानी भरना था। उसे बड़ा दुःख हुआ और माता पिता के उद्धार का उपाय पूछा। पंडित ने बताया यदि उसकी कुंवारी कन्या भाद्रपद कृष्ण पक्ष की षष्टी यानि ऊब छठ का व्रत कर, शाम को नहा कर पूजा करें। और उसके बाद बैठे नहीं ,फिर चांद निकलने पर अर्ध्य दे। अर्ध्य देने पर जो पानी गिरे वह बैल और कुतिया को छूए तो उनका मोक्ष हो जायेगा। जैसा पंडित ने बताया था कन्या ने ऊब छठ का व्रत किया, पूजा की चांद निकलने पर चांद को अर्ध्य दिया। अर्ध्य का पानी जमीन पर गिरकर बहते हुए बैल और कुतिया पर गिरे ऐसी व्यवस्था की पानी उन पर गिरने से दोनों को मोक्ष प्राप्त हुआ और उन्हें इस योनि से छुटकारा मिल गया। हे !

ऊब छठ माता, जैसे इनका किया वैसे सभी का उद्धार करना। कहानी लिखने वाले और पढ़ने वाले का भला करना। बोलो छठ माता की.... जय !!! यह व्रत कथा पढ़ने से फल की प्राप्ति होती हैं।

दूरबीन के आविष्कार के जनक महर्षी भृगु ऋषी

आज तक हमें झुठा इतिहास
पढाया गया कि दूरबीन का
आविष्कार 17 वी शताब्दी
में गैलीलियो और हैंस लिपरशी
नामक युरोपियन लोगों ने किया। असलीयत तो यह है कि
दूरबीन का आविष्कार हजारो
वर्ष पहले महर्षी भृगु ऋषी ने
किया था। आज भी उसका प्रमाण भृगु संहिता में मिलता हैं।

श्लोक :-
मनोर्वाक्यं समाधाय
तेन शिल्पीन्द्र शाश्वतः।
यन्त्रं चकार सहसा
दृष्ट्यर्थे दूरदर्शनम्॥
पलालाग्नौ दग्धमृदा
कृत्वा काचमनश्वरं।
शोधयित्वा तु शिल्पीन्द्रो
नैर्मल्यं क्रियते च।
चकार बलवत्स्वच्छं
पातनं सूपविष्कृतं॥
वंशपर्वसमाकारं
धातुदण्डकल्पितम्।
तत्पश्चादग्रमध्येषु
मुकुरं च विवेश सः॥"
अर्थात्दूर तक देखने के लिए

इस प्रकार का यन्त्र बनाना चाहिये कि पहिले मिट्टी को जलाकर कांच तैयार करे फिर उसको साफ करके उस स्वच्छ काँच को बांस या धातु की नली में (आदि, मध्य और अन्त में) लगाकर देखे। इस तमाम वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि दूरबीन का आविष्कार युरोपियन लोगों ने नही बल्की महर्षी भृगु ऋषी ने किया है उसके साथ साथ होयसलेश्वर मंदिर की दीवार पर भी आप देख सकते है हाथ में दूरबीन पकडे हुए व्यक्ती का शिल्प बनाया गया है। होयसलेश्वर मंदिर का निर्माण

१२वीं शताब्दी में राजा विष्णुवर्धन के काल में हुआ था। मतलब जब युरोपियन लोग हाथ
में दूरबीन पकडना भी नहीं जानतें थें उससे 5 शताब्दी पहले प्राचीन भारतीय लोग दुरबीन बनाना और उसका इस्तमाल करना भी जानते थें।

महर्षी भृगु ऋषी का काल तो
5000 वर्ष इ.सा पूर्व का है मतलब, तब तो गैलीलियो और हैंस लिपरशी के दादा भी पैदा नही हुए होंगे।

सनातन संस्कृति और विज्ञान जयति पुण्य सनातन संस्कृति, जयति पुण्य भूमि भारत।

भगवान श्री कृष्ण के 12 ऐसे तीर्थ जो हैं विश्वभर में प्रसिद्ध है

भगवान श्रीकृष्णजी का जन्मोत्सव हिन्दू माह भाद्रपद की अष्टमी को आता है इस दिन को जन्माष्टमी कहते हैं। संपूर्ण भारत में भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर है लेकिन 12 मंदिर ऐसे हैं जो कि बहुत ही महत्व रखते हैं।

1. मथुरा जन्मभूमि का मंदिर : श्रीकृष्ण का जन्म उत्तर प्रदेश की प्राचीन नगरी मथुरा के कारागार में हुआ था। उस स्थान पर वर्तमान में एक हिस्से पर मंदिर और दूसरे पर मस्जिद बनी हुई है। सबसे पहले ईस्वी सन्‌1017-18 में महमूद गजनवी ने मथुरा के समस्त मंदिर तुड़वा दिए थे। तभी से यह भूमि भी विवादित हो चली है।

2. गोकुल का मंदिर : भगवान कृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ था। उनका बचपन गोकुल, वृंदावन, नंदगाव, बरसाना आदि जगहों पर बीता। गोकुल मथुरा से 15 किलोमीटर दूर है। यमुना के इस पार मथुरा और उस पार गोकुल है। कहते हैं कि दुनिया के सबसे नटखट बालक ने वहां 11 साल 1 माह और 22 दिन गुजारे थे। वर्तमान की गोकुल को औरंगजेब के समय श्रीवल्लभाचार्य के पुत्र श्रीविट्ठलनाथ ने बसाया था। गोकुल से आगे 2 किमी दूर महावन है। लोग इसे पुरानी गोकुल कहते हैं। यहां चौरासी खम्भों का मंदिर, नंदेश्वर महादेव, मथुरा नाथ, द्वारिका नाथ आदि मंदिर हैं। संपूर्ण गोगुल ही मंदिर है।

3. वृंदावन का मंदिर : मथुरा के पास वृंदावन में रमण रेती पर बांके बिहारी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। यह भारत के प्राचीन और प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। यहीं पर प्रेम मंदिर भी मौजूद है और यहीं पर प्रसिद्ध स्कॉन मंदिर भी है जिसे 1975 में बनाया गया था। यहां विदेशी श्रद्धालुओं की भी अच्छी-खासी तादाद है जो कि हिन्दू हैं। इसी बृज क्षेत्र में गोवर्धन पर्वत भी है जहां श्रीकृष्ण से जुड़े अनेक मंदिर है।

4. बरसाना का राधा-कृष्ण मंदिर : मथुरा के पास ही बरसान है। बरसाना के बीचोबीच एक पहाड़ी है। उसी के ऊपर राधा रानी मंदिर है। राधा-कृष्ण को समर्पित इस भव्य और सुन्दर मंदिर का निर्माण राजा वीर सिंह ने 1675 में करवाया था। दरअसल, राधा रानी बरसाने की ही रहने वाली थी।

5. द्वारिका का मंदिर : मथुरा को छोड़कर भगवान श्रीकृष्ण गुजरात के समुद्री तट स्थित नगर कुशस्थली चले गए थे। वहां पर उन्होंने द्वारिका नामक एक भव्य नगर बसाया। यहां भगवान श्रीकृष्ण को श्री द्वारकाधीश कहा जाता है। वर्तमान में द्वारिका 2 हैं- गोमती द्वारिका, बेट द्वारिका। गोमती द्वारिका धाम है, बेट द्वारिका पुरी है। बेट द्वारिका के लिए समुद्र मार्ग से जाना पड़ता है। द्वारकाधीश मंदिर के अलावा आप गुजरात के दाकोर में स्थित रणछोड़राय मंदिर के दर्शन भी कर सकते हैं। हालांकि गुजरात में श्रीकृष्ण के और भी मंदिर है

5. श्रीकृष्ण निर्वाण स्थलः- गुजरात स्थित सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के पास प्रभास नामक एक क्षेत्र है जहां पर यदुवंशियों ने आपस में लड़कर अपने कुल का अंत कर लिया था। वहीं एक स्थान पर एक वृक्ष ने नीचे भगवान श्रीकृष्ण लेटे हुए थे तभी एक बहेलिए ने अनजाने में उनके पैरों पर तीर मार दिया जिसे बहाना बनाकर श्रीकृष्ण ने अपनी देह छोड़ दी।

6. प्रभास क्षेत्र काठियावाड़ के समुद्र तट पर स्थित बीराबल बंदरगाह की वर्तमान बस्ती का प्राचीन नाम है। यह एक प्रमुख तीर्थ स्थान है। यह विशिष्ट स्थल या देहोत्सर्ग तीर्थ नगर के पूर्व में हिरण्या, सरस्वती तथा कपिला के संगम पर बताया जाता है। इसे प्राची त्रिवेणी भी कहते हैं। इसे भालका तीर्थ भी कहते हैं।

7. श्रीनाथजी का मंदिर : राजस्थान के नाथद्वारा में श्रीनाथजी का मंदिर। यहां भगवान श्रीकृष्ण को श्रीनाथ कहते हैं। यह मंदिर वैष्णव संप्रदाय के वल्लभ सम्प्रदाय के प्रमुख तीर्थ स्थानों में सर्वोपरि माना जाता है। नाथद्वारा धान उदयपुर से लगभग 48 किलोमीटर दूर राजसमंद जिले में बनास नदी के तट पर स्थित हैं। जब क्रूर मुगल शासक औरंगजेब ने गोकुल का मंदिर तोड़ने का आदेश दिया तब वल्लभ गोस्वामी यहां की मूर्ति लेकर नाथद्वारा में आ गए और यहां उस मूर्ति की पुनः स्थापना की। ये मंदिर 12वीं शताब्दी में बनाया गया था।

8. जगन्नाथ मंदिर : उड़ीसा राज्य में पुरी का जगन्नाथ धाम चार धाम में से एक है। मूलतः यह मंदिर विष्णु के रूप पुरुषोत्तम नीलमाधव को समर्पित है। कहते हैं कि द्वापर के बाद भगवान कृष्ण पुरी में निवास करने लगे और बन गए जग के नाथ अर्थात जगन्नाथ। यहां भगवान जगन्नाथ बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ विराजते हैं।

9. श्रीकृष्ण मठ मंदिर, उडुपी : 'उडुपी श्रीकृष्ण मंदिर' कर्नाटक में स्थित है। इसका निर्माण संत माधवचार्य ने 13वीं सदी में करवाया था। यह मंदिर लकड़ी और पत्थर से बना हुआ है। इस मंदिर के पास मौजूद तालाब के पानी में मंदिर का प्रतिबिंब दिखाई देता है। भक्ति के लिए ये मंदिर बेहद पवित्र माना जाता है।

10. अरुलमिगु श्री पार्थसारथी स्वामी मंदिर : 8वीं सदी में बना यह मंदिर चेन्नई में स्थित है। यहां पर भगवान श्रीविष्णु की कई आकर्षक मूर्तियां मौजूद हैं। यह मंदिर भी पूरे दक्षिण भारत में बहुत प्रसिद्ध है।

11. सांदीपनि आश्रम उज्जैनः- मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध तीर्थ उज्जैन में सांदीपनि आश्रम में भगवान श्रीकृष्ण के पढ़ाई की थी। इसीलिए यह स्थान भी बहुत महत्व रखता है। यहां भी श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध मंदिर है।

12. पंढरपुर का विठोबा मंदिर : पंढरपुर का विठोबा मंदिर पश्चिमी भारत के दक्षिणी महाराष्ट्र राज्य में भीमा नदी के तट पर शोलापुर नगर के पश्चिम में स्थित है। इस मंदिर में विठोबा के रूप में भगवान श्रीकृष्ण की पूजा की जाती है। यहां भक्तराज पुंडलिक का स्मारक बना हुआ है।

थायोराइड का आयुर्वेदिक इलाज

थायोराइड अन्तःस्रावी ग्रन्थियों (एंडोक्राइन ग्लैंड) में से एक है।

गले में मौजूद तितली जैसे आकार वाली यह ग्लैंड थायरॉक्सिन हॉर्मोन बनाती है जो हमारी बॉडी की ऊर्जा खर्च करने की क्षमता और कई क्रियाओं पर असर डालता है।

थाइरोइड के घरेलू उपाय

उपाय 1

काली मिर्च से वजन और हाइपोथायरॉयड दोनो ठीक करें।

पिपेराईन एक खास रसायन है जो काली मिर्च में खूब पाया जाता है और ये कमाल का फ़ैट बर्नर है।

अक्सर महिलाओं में थायरॉक्सिन लेवल कम होने से तेजी से वजन बढ़ता है, पेपेराईन इस समस्या से छुटकारा दिला सकता है।

जिन्हें हाईपोथायरॉइड की समस्या है

सिर्फ 21 काली मिर्च कुचलकर 15 दिनों तक रोज सुबह एक बार में एक साथ खा लें, सकारात्मक परिणाम आना निश्चित है।

उपाय 2

25 ग्राम शुद्ध दालचीनी लें, यह जितनी तीखी हो उतना अच्छा रहेगा।

इसे पीस कर चूर्ण बना एक चुटकी चूर्ण को प्याज के रस में मिला सेवन करें।

यह प्रयोग बासी मुंह 21 दिन करें।

21 दिन सेवन से थाइरोइड सामान्य हो जाएगा- फिर कभी नहीं बढ़ेगा।

03 महीने बाद में प्रयोग दोहराइए- अचूक लाभ होगा।

उपाय 3

अगर किसी को थाईराईड से मुक्ति पानी है तो रसाहार थैरापी प्रयोग से १००% ठीक किया जा सकता है।

हाईपर थाईरोडीजम का ईलाज उपाय

हाईपर थाईरोडीजम मे अगर ग्रीन टी का प्रयोग दिन मे 4 बार 2-2 कप लीया जाऐ 4-6 महिने मे तो थाईरोड से मुक्ति मिल सकती है।

रोज रात को 2 कप लौकी का रस मे 2 चम्मच अदरक का रस डालकर रोज रात को सोने से घन्टे पहले ले।

धनिया 1 चम्मच + सौंफ 1 चम्मच + जीरा 1 चम्मच लेकर सुबह 3 ग्लास पानी मे उबाले। जब 1 ग्लास पानी बचे तब छानकर सुबह पी लें 30 मिनिट तक कुछ भी ना खाऐ।

आयुर्वेदिक औषधियां

1. त्रिकुट चुर्ण + त्रिफला चुर्ण + वायबिडंग + अजवायन + चित्रकमूल + ताम्र भस्म + लोह भस्म + रस सिन्दुर आदि ख़ास अनुपात में डालकर तैयार की जाती हैं। वैद्य के परामर्श से बना सकते है।

हर घर तिरंगा : कुछ प्रमुख झलकियां

प्रेम पच्चीसा (भाग 2)

हालात का मारा रोहन जिसे लोग कवि, कहने लगे थे। बिड़ला मंदिर के आसपास गरीब बस्ती में तंगहाल रहता पर उसका मन कविताओं का सागर था। वह दिन-रात कागज और कलम के साथ बिताता, अपनी कविताओं में प्रेम, प्रकृति और जीवन की गहराइयों को उकेरता। उसकी कविताएँ गाँव वालों के बीच मशहूर थीं, पर उसकी जेब हमेशा खाली रहती।

उसकी प्रेमिका दीपा एक खूबसूरत और आकर्षक युवती जिसकी आँखों में सरकारी नौकरी की चमक और दिल महत्वाकांक्षाओं से भरा था। वह हमेशा वैभव और ऐश्वर्य की चाह रखती थी।

रोहन और दीपा की मुलाकात नौ महीने बाद हुई थी, रोहन पुरानी सब बातें भूलकर अपनी कविताएँ सुना रहा था। दीपा उसकी कविताओं की गहराई से प्रभावित होकर भी मानसिक रूप से रोहन के साथ नहीं थी। ऊपरी तौर पर हंस रही थी। सीधा सरल रोहन अपनी हर कविता दीपा को समर्पित करता। वह उसे भारत भवन तालाब के किनारे बिठाकर अपनी रचनाएँ सुनाता, और दीपा रोहन का मन रखने के लिए तालियाँ बजाकर उसका हौसला बढ़ाती। पर जैसे-जैसे समय बीता, दीपा की नज़रें रोहन की सादगी से हटकर शहर के चमक-दमक की ओर मुड़ने लगीं।

वह रोहन से कहती, "तुम्हारी कविताएँ तो सुंदर हैं, पर इनसे क्या होगा? हमें एक बड़ा घर चाहिए, अच्छे कपड़े चाहिए, सम्मान चाहिए। रोहन अपने प्रेम में डूबा था, दीपा की बातों को अनसुना कर देता। वह सोचता कि उसका प्रेम ही दीपा के लिए काफी है पर दीपा का मन अब बदल चुका था। एक दिन उसके ऑफिस में एक वरिष्ठ अधिकारी रमेश से उसकी भेंट हुई। वह दीपा की सुंदरता पर रमेश मोहित हो गया और उसे शादी का प्रस्ताव दे डाला।

रमेश ने दीपा को वैभवशाली जीवन का वादा किया—बड़ा घर, नौकर-चाकर, और सुख-सुविधाएँ। कुछ समय बाद दीपा ने रोहन से कहा -तुम मुझे सिर्फ कविताएँ दे सकते हो, पर रमेश मुझे दुनिया दे सकता है। "मैं तुमसे प्यार करती हूँ, पर मैं अपनी जिंदगी को गरीबी में नहीं बिता सकती"। यह सुनकर रोहन का दिल टूट गया। उसने दीपा को रोकने की कोशिश की अपनी सबसे सुंदर मार्मिक कविता उसे सुनाई, जिसमें उसने अपने प्रेम की गहराई बयाँ की पर दीपा का स्वार्थी मन नहीं पिघला वह रोहन को उसी हाल में छोड़कर रमेश के साथ चली गई।

रोहन ने उस रात तालाब के किनारे बैठकर अपनी आंसुओं में डूबी बिरहा कविता लिखी, जिसमें उसने दीपा के लिए अपने प्रेम को तो बयाँ किया पर साथ ही यह भी लिखा कि "सच्चा प्रेम स्वार्थ से परे होता है"। उसकी कविता गाँव में फैल गई, और लोग उसकी गहराई में खो गए। धीरे धीरे रोहन मंचीय कवि होकर नाम इज्जत के साथ सम्मान राशि पा रहा था।

दूसरी तरफ दीपा को रमेश के साथ सुख तो मिला, पर वह सच्चा प्रेम और सम्मान जो रोहन की कविताओं में था, वह उसे कभी नहीं मिला। सारी जिन्दगी गाड़ी, बंगला, होटल, मॉल में सुख और संतुष्टि तलाशती रही।

रोहन अपनी कविताओं में जीने लगा, और उसकी रचनाएँ दूर-दूर तक मशहूर हुईं। दीपा ने सालों बाद रोहन की एक कविता सुनी, और उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसे एहसास हुआ कि उसने सच्चे प्रेम को खो दिया था, सिर्फ चमक-दमक के पीछे भागकर,,,।

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़

दिल्ली पुस्तकालय संघ ने मनाई भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक रंगनाथन की 133 वीं जन्म जयंती मनाई....

नई दिल्ली। दिल्ली पुस्तकालय संघ ने नारायणा विहार स्थित अपने मुख्यालय पर राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस एवं भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक ₹ पद्म श्री एस. आर. रंगनाथन जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में ₹ श्रीमद भगवतगीता और पुस्तकालय विज्ञान ₹ विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया । श्री रंगनाथन जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। दिल्ली पुस्तकालय संघ के अध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय गांधी भवन के निदेशक पुस्तकालय विज्ञान के प्रो.के.पी. सिंह ने मुख्य अतिथियों का अभिनंदन स्वागत प्रतीक चिन्ह और अंग वस्त्र प्रदान करके किया। प्रो सिंह ने रंगनाथन की 133 वीं जयंती एवं विक्रम साराभाई की जयंती की शुभकामनाएं दी ।

दिल्ली पुस्तकालय संघ के विषय में सभी को विस्तृत जानकारी देते हुए प्रोफेसर के.पी.सिंह ने बताया कि यह संस्था 1939 से निरंतर पुस्तकालय शिक्षा और शोध के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रही है। उन्होंने बताया श्रीमद् भागवत गीता पर संवाद करने का उद्देश्य यह है कि हम सभी यह सीखें कि यह ग्रंथ कैसे जीवन जीना है हमें सिखाता है। यह ग्रंथ हमारे लिए ज्ञान का भंडार है । हमें अपने जीवन में धर्म को प्रधानता देनी चाहिए। गीता हमें जीवन जीने की शैली प्रदान करती है ।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि, इंडिया हैबिटेट सेंटर के निदेशक प्रो के.जी. सुरेश ने अपने संबोधन में कहा कि भगवत गीता और पुस्तकालय विज्ञान के साथ संबंध की गहन व्याख्या की। उन्होंने कहा की भगवत गीता में ज्ञान योग की बात की गई और ज्ञान योग पुस्तकालयों के अतिरिक्त कहां प्राप्त हो सकता है। उनका कहना था कि पुस्तकालय तीर्थ स्थान के समान है । आज हम सभी जो भी बन सके हैं ;वह पुस्तकालय की ही देन तो है। पुस्तकालय हमारे जीवन का आधार है। हमारे देश पर जब भी पहले हमला हुआ तो सबसे पहले हमारे पुस्तकालयों पर हुआ। उन्होंने नालन्दा व विश्वविद्यालयों का उदाहरण दिया और कहा कि आक्रमकारियों ने सबसे पहले पुस्तकालयों पर हमला किया , हमारे ग्रंथ नष्ट किए क्योंकि किसी भी देश के ज्ञान के भंडार एवं आध्यात्मिक भंडार नष्ट करना उसे देश की आत्मा को क्षीण करना है। गीता आह्वान करती है कि हम पुस्तकालय में नवाचार पर तो ध्यान दें परंतु पुस्तकों से प्रेम किए बगैर हम पुस्तकालय को महान नहीं बना सकते। हमें पुस्तकालयों के सक्रिय संचालन पर भी ध्यान देना होगा।

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में ज़म ज़म फाउन्डेशन ने डॉक्टरों और पत्रकारों को विकसित भारत सम्मान 2025 से किया सम्मानित

मुख्य संवाददाता

दिल्ली : स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में ज़म ज़म फाउन्डेशन ने आज हिन्दूराव अस्पताल के डॉ. पासी आडिटोरियम में वरिष्ठ डॉक्टरों एवं पत्रकारों को विकसित भारत सम्मान 2025 से सम्मानित किया। इस अवसर पर तिमारपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक सूर्यप्रकाश खत्री नार्थएमसीडी मेडिकल कॉलेज के डीन विनय कुमार तिवारी ज़म ज़म फाउन्डेशन के प्रमुख संरक्षक योगेन्द्र सिंह मान अध्यक्ष शमीम अहमद खान उपाध्यक्ष ममता आनन्द, दीपक चौपड़ा, मौहम्मद अनवार सचिव मौहम्मद अज़हर कोषाध्यक्ष ज़हीर आलम आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे

इस अवसर पर विधायक श्री सूर्य प्रकाश खत्री ने कहा की उत्तरी दिल्ली में कोई भी बड़ा अस्पताल नही है ऐसे में दिल्ली सरकार से आग्रह करके राजन बाबू टीबी अस्पताल में खाली पड़ी जगह पर मेडिकल कॉलेज को शिफ्ट करने का प्रयास करेंगे ताकि मेडिकल कॉलेज में सीटें भी बड़ाई जा सके और उत्तरी दिल्ली को एक बड़ा अस्पताल मिल जाएं इसके लिए भी प्रयास किया जाएगा

योगेन्द्र सिंह मान ने बताया कि ज़म ज़म फाउन्डेशन ने समाज और मानव सेवा करने वाले 45 डॉक्टरों और 25 पत्रकारों को विकसित भारत सम्मान 2025 से सम्मानित किया गया। ज़म ज़म फाउन्डेशन के अध्यक्ष शमीम अहमद खान ने बताया कि विकसित भारत सम्मान समारोह में आएं सभी लोगों का तिरंगा पटका पहनाकर सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर भाजपा मल्का गंज मण्डल के अध्यक्ष नितिन गुप्ता जपाध्यक्ष चन्दर प्रकाश प्रजापति महामंत्री भारत भूषण मंत्री दिनेश सोनकर व सूरज जैन कोषाध्यक्ष मुकेश जैन सहित नीलू सोनकर , सतीश कोहली , ब्रजमोहन प्रजापति , मेहर सिंह, विश्राम सिंह , वैशाली गुप्ता , सुदेश बख्शी , पूजा ठुकराल , इंदु शर्मा , मानसी आनन्द , जसप्रीत सिंह, मौहम्मद कामिल, मौहम्मद क़ादिर, शहज़ाद अहमद, इक़बाल चौधरी , अमित आनन्द ,मनोज आनन्द आदि भी उपस्थित थे।

बेजुबानों की रक्षा भी हमारी ही जिम्मेदारी है

आवारा कुत्ते और आवारा पशु विशेषकर शहरों में आमजन के लिए एक बड़ी समस्या रहा है। हाल ही में इस क्रम में माननीय 11 अगस्त 2025 सोमवार को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों के आतंक और रेबीज (कुत्ते के काटने से होने वाली बीमारी) से लोगों की मौत को गंभीर मानते हुए एक सख्त आदेश जारी किया है कि राजधानी दिल्ली में सभी आवारा कुत्तों को आबादी वाले क्षेत्रों से हटाकर आठ सप्ताह में शैल्टर में भेजा जाए। पाठकों को बताता चलूं कि कोर्ट ने इस संबंध में यह बात कही है कि यदि कोई व्यक्ति या संगठन इस प्रक्रिया का विरोध करता है, तो उसके खिलाफ अवमानना की कार्रवाई (कंटेप्ट आप कोर्ट) होगी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि राजस्थान हाईकोर्ट ने भी एक अलग आदेश में प्रदेश में कुत्तों व आवारा पशुओं को सड़क से हटाने के निर्देश दिए हैं। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद यह उम्मीद जताई जा सकती है कि मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ सहित देश के अन्य राज्यों में भी आवारा कुत्तों के काटने की घटनाओं को देखते हुए ऐसे ही कदम उठाए जाएंगे। वास्तव में, सुप्रीम कोर्ट व राजस्थान हाईकोर्ट का फैसलों से कहीं न कहीं आम आदमी को राहत मिल सकेगी। आज आए दिन हमें मीडिया की सुर्खियों में मनुष्य को आवारा व लावारिश कुत्तों द्वारा काटने, घायल करने की खबरें पढ़ने सुनने को मिलती रहतीं हैं। रेबीज वायरस से होने वाली एक बहुत ही खतरनाक बीमारी है, जो कुत्तों, बिल्लियों, बंदरों के काटने से हो सकती है। यदि रेबीज का समय पर इलाज न किया जाए तो यह जानलेवा हो सकती है। दरअसल, यह एक वायरल संक्रमण है, जो मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी को प्रभावित करता है। यह आमतौर पर संक्रमित जानवर के काटने या खरोंचने से फैलता है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस आर. महादेवन की बेंच ने आवारा कुत्तों द्वारा बच्चों पर हमला करने से संबंधित एक समाचार पर स्वतः संज्ञान लेते हुए दर्ज याचिका की सुनवाई कर दिल्ली के बारे में निर्देश जारी किए। बेंच ने कहा कि इस मामले में कोई नरमी नहीं बरती जाएगी और इसकी तत्काल पालना होनी चाहिए। वास्तव में यह काबिले-तारीफ है कि बेंच ने यह निर्देश दिया है कि कुत्तों के लिए शेल्टर बनाए जाएं और आठ सप्ताह में बुनियादी ढांचे के निर्माण की रिपोर्ट दी जाए। इतना ही नहीं, इस संबंध में, शेल्टर में कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण के लिए पर्याप्त कर्मचारी होने की बात भी कही गई है। गौरतलब है कि बेंच ने सुनवाई के दौरान डॉग लवर्स को कड़ी फटकार लगाई है। पीपल फॉर एनिमल की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा ने इस संबंध में अपना तर्क रखना चाहा, तो जस्टिस पारदीवाला ने कहा कि लोगों में यह भरोसा होना चाहिए कि वे कुत्तों के डर के बिना कहीं भी आजाद होकर घूम सकते हैं। पाठकों को बताता चलूं कि माननीय कोर्ट ने यहां तक कहा है कि किसी भी इलाके में एक भी आवारा कुत्ता घूमता हुआ नहीं दिखना चाहिए और इस संबंध में एक सप्ताह में हैल्पलाइन बननी चाहिए तथा, चार घंटे में कुत्ते पकड़ने की कार्रवाई होनी चाहिए। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि सरकारी अस्पताल में ही रेबीज के टीके लगें, और रेबीज वेक्सीन उपलब्धता की सूचना भी प्रकाशित की जाए ताकि आमजन को इसकी जानकारी हो सके। अच्छी बात यह है कि माननीय कोर्ट ने व्यापक जनहित में इस मामले में किसी भी हस्तक्षेप आवेदन को स्वीकार नहीं करने की बात भी कही है। कोर्ट ने यहां तक कहा है कि क्या तथाकथित पशु प्रेमी, उन बच्चों को वापस ला पाएंगे जिनकी रेबीज की वजह से जान चली गई ? बहरहाल, यह वाकई बहुत ही चिंताजनक व गंभीर बात है कि आज रोजाना औसतन 10136 लोग कुत्तों के शिकार हो रहे हैं, और साल 2024 में देशभर में 37 लाख से ज्यादा डॉग बाइट के केस सामने आए हैं। पाठकों को बताता चलूं कि केंद्रीय मंत्री एसपी सिंह बघेल ने बीती 22 जुलाई को ही संसद में बताया था कि पिछले वर्ष देश में कुत्ते के काटने के कुल मामलों की संख्या 37,17,336 थी, जबकि संदेहास्पद मानव रेबीज से मौतें 54 थीं। दिल्ली एमसीडी के आंकड़ों के अनुसार, इस साल अब तक राष्ट्रीय राजधानी में रेबीज के कुल 49 मामले सामने आए हैं। बहरहाल, यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि जस्टिस पारदीवाला ने कुत्तों की नसबंदी और उसी इलाके में उन्हें वापस छोड़ने की नगर निगमों की कार्रवाई पर भी सवाल उठाए हैं। कोर्ट ने इसे बेतुका और अनुचित नियम बताया है कि आवारा कुत्तों की नसबंदी कर उन्हें उसी इलाके में छोड़ दिया जाता है। कोर्ट ने इस संबंध में यह साफ कहा है कि इसका कोई मतलब या औचित्य नहीं है। वास्तव में, यह एक कड़वा सच है कि देश में अनेक स्थानीय निकाय आवारा श्वानों की आबादी पर अंकुश नहीं लगा पा रहे हैं और नियम के तहत न तो उनका बधियाकरण हो रहा है और न उन्हें रेबीज-रोधी टीके ही लग रहे हैं, ऐसे में समस्या बढ़ रही है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज शहर तो शहर गांवों में भी आवारा पशु एक बड़ी समस्या बनकर उभर रहे हैं। आवारा पशुओं के कारण कभी एक्सीडेंट की घटनाएं जन्म लेतीं हैं तो कभी बाजार, गलियों में व सड़कों पर इन पशुओं के आवारा घूमने से आमजन में हमेशा भय और खौफ का माहौल हमेशा बना रहता है। नगर निगम, नगर पालिकाएं हालांकि समय-समय पर इस संबंध में अभियान चलाते हैं, लेकिन कुछ समय बाद स्थिति ढाक के तीन पात वाली हो जाती है। जब कभी आवारा पशुओं के कारण कोई घटनाएं प्रकाश में आतीं हैं तो आनन-फानन में आवारा पशुओं को पकड़ने की कार्रवाई की जाती है और बाद में मामला ठंडा पड़ने पर इस पर गंभीरता व संवेदनशीलता नहीं दिखाई जाती और इसके कारण आम आदमी को इन आवारा पशुओं का शिकार होना पड़ता है। बहुत बार तो जानें तक चलीं जाती हैं। घायल होना तो जैसे आम बात है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज आवारा पशुओं के कारण नागरिकों को परेशानी और खतरा लगातार बढ़ रहा है, जिससे आम जनजीवन तो प्रभावित होता ही है साथ ही साथ पर्यटन को भी नुकसान पहुंच रहा है। यह वाकई काबिले-तारीफ है कि राजस्थान हाईकोर्ट ने भी शहरों और राजमार्गों से आवारा पशु हटाने के लिए नगर निगमों, राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण व अन्य विभागों को विशेष अभियान चलाने का निर्देश दिया है। वास्तव में माननीय सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के आवारा कुत्तों/पशुओं को लेकर हाल ही में जारी किए गए दिशा-निर्देशों को आज देश के हर गांव, शहर और कस्बे में लागू करना बहुत ही जरूरी व आवश्यक है। वैसे भी, आवारा कुत्तों/पशुओं को पकड़कर सुरक्षित डॉग शेल्टर/एनिमल शेल्टर में रखना कोई मुश्किल काम नहीं है। ईमानदारी से काम करके इसे बखूबी अंजाम दिया जा सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आवारा कुत्तों व पशुओं की समस्या आज पूरे देश में है। मध्यप्रदेश में तो आवारा कुत्तों के काटने के मामले लगातार दर्ज हो रहे हैं। इसमें सबसे ज्यादा मामले इंदौर और जबलपुर में आए हैं। भोपाल, रीवा, खंडवा और खरगोन में बच्चों की मौत भी दर्ज हो चुकी है। छत्तीसगढ़ में भी गांव-शहरों में कुत्ते के काटने की अनेक घटनाएं हुई हैं और रेबीज के इंजेक्शन की पर्याप्त आपूर्ति के अभाव में पीड़ितों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। बहरहाल, अंत में यही कहूंगा कि आवारा पशुओं/कुत्तों को लेकर माननीय कोर्ट के फैसले के सुखद परिणाम हो सकते हैं, लेकिन संवदेना का प्रश्न भी गंभीर रूप से खड़ा हो सकता है। इंसानों पर पूरी तरह से निर्भर इन बेजुबानों (आवारा कुत्ते/पशुओं) से संबंधित यह फैसला इतना आसान नहीं है, जो माननीय न्यायालयों ने लिए हैं। वास्तव में यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि बेजुबानों के साथ अमानवीय व्यवहार न हो। उनके शेल्टर साफ-सुथरे और आरामदेह हों, तथा उन्हें भरपेट भोजन (खुराक-पानी) मिले। इसके लिए फीडिंग प्वाइंट तय किए जा सकते हैं। एनजीओ और स्थानीय प्रशासन का सहयोग जरूरी है। घायल, बूढ़े या कमजोर कुत्तों को एनिमल शेल्टर भेजा जा सकता है तथा पिल्लों को एडोप्शन ड्राइव (गोद लेना) के जरिए घर दिलाने का प्रयास किया जाना चाहिए, ताकि उन्हें मालिक मिल सके। इस संबंध में श्वानों/बेजुबानों से प्रेम करने वालों को भी आगे आना चाहिए। कुत्तों की समय पर नसबंदी और टीकाकरण बहुत आवश्यक है। नगर निगम और एनजीओ इसमें सहयोग कर सकते हैं। कुत्तों का रेबीज टीकाकरण करवाया जाना चाहिए ताकि बीमारी का खतरा कम हो सके साथ ही साथ लोगों का डर भी कम हो सके। जन-जागरूकता तो जरूरी है ही। वास्तव में, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आखिर बेजुबानों की रक्षा भी हमारी ही जिम्मेदारी है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार

डॉक्यूबे बना प्रभावशाली और उद्देश्यपूर्ण कहानियों का अग्रणी मंच, 'ऑपरेशन माँ' वृत्तचित्र जल्द होगा रिलीज़

मुख्य संवाददाता

भारत में प्रीमियम और विचारोत्तेजक वृत्तचित्रों के लिए अग्रणी मंच डॉक्यूबे (DOCUBAY) अब उद्देश्य-पूर्ण कहानियों के साथ अपनी मूल श्रृंखला का विस्तार कर रहा है। IN10 मीडिया नेटवर्क का अंग यह डिजिटल मंच अब सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय पहलुओं को छूती कहानियाँ पेश कर रहा है, जो दर्शकों को सोचने पर मजबूर कर रही हैं।

डॉक्यूबे (DOCUBAY) ने अब तक कई प्रशंसित और पुरस्कार विजेता वृत्तचित्र प्रस्तुत किए हैं, इसकी बढ़ती सूची में कारगिल 1999: द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ द इन्डियन एयरफोर्स, 12 डिजिट मास्टरस्ट्रोक: द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ आधार, द दुपट्टा किलर और फैनेटिक्स। ये फिल्में भू-राजनीति, पहचान, अपराध और सामाजिक-राजनीतिक बदलाव जैसे ज्वलंत विषयों पर केंद्रित हैं।

मूल और खरीदे गए शीर्षकों की बढ़ती संख्या के साथ, डॉक्यूबे विश्वसनीय, तथ्य-आधारित कहानी कहने की बढ़ती माँग को पूरा करता आ रहा है। इसकी अगली पेशकश है 'ऑपरेशन माँ', जिसका प्रीमियर 27 अगस्त को विशेष रूप से डॉक्यूबे (DOCUBAY) पर होगा। यह वृत्तचित्र एक सच्ची और भावनात्मक कहानी को दर्शाता है, जिसमें दिखाया गया है कि कैसे एक माँ का प्रेम कश्मीर के कट्टरपंथ की चपेट में आए युवाओं को वापस मुख्यधारा में लाने का माध्यम बनता है। यह फिल्म साहस, सामंजस्य और देशभक्ति की गहराई से भरी हुई प्रेरणादायक यात्रा को दर्शाती हैं।

IN10 मीडिया नेटवर्क के प्रबंध निदेशक आदित्य पिट्टी ने इस दिशा में अपने दृष्टिकोण को साझा करते हुए कहा, "IN10 मीडिया नेटवर्क में हम हमेशा ऐसे उद्देश्यपूर्ण कंटेंट प्लेटफ़ॉर्म बनाने में विश्वास करते हैं जो आज के दर्शकों की रुचियों से मेल खाते हों। डॉक्यूबे (DOCUBAY) एक ऐसा मंच है जो वास्तविक कहानियों, वास्तविक लोगों और वास्तविक प्रभावों को पेश करता है। हम वृत्तचित्रों के लिए बढ़ती रुचि को देखकर उत्साहित हैं जो न केवल जानकारी देती हैं, बल्कि संवाद के लिए भी न केवल देश में बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रेरित करती हैं।

डॉक्यूबे (DOCUBAY) के मुख्य कंटेंट अधिकारी समर खान ने कहा, "दर्शकों की पसंद में एक स्पष्ट बदलाव देखा जा रहा है – वे अब ऐसी सामग्री की ओर आकर्षित हो रहे हैं जो गहराई, प्रामाणिकता और अर्थपूर्णता प्रदान करती हो। ऑपरेशन माँ और हमारे बढ़ते ओरिजिनल लाइनअप के माध्यम से हम ऐसी कहानियाँ सामने ला रहे हैं जो न केवल भावनात्मक स्तर पर छूती हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।"

जैसे-जैसे डॉक्यूमेंट्री शैली भारत में जोर पकड़ रही है, वैसे-वैसे डॉक्यूबे (DOCUBAY) गैर-काल्पनिक, तथ्य-आधारित और प्रेरणादायक कहानियों के साथ इस क्षेत्र में एक मजबूत नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर रहा है। यह मंच भारत और वैश्विक स्तर पर गैर-काल्पनिक कंटेंट के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

वर्किंग जॉर्नलिस्ट ऑफ इंडिया के प्रतिनिधिमंडल ने दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा से की मुलाकात

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। वर्किंग जॉर्नलिस्ट ऑफ इंडिया (WJI) के एक प्रतिनिधिमंडल ने आज दिल्ली सरकार में **पर्यावरण, परिवहन, गुरुद्वारा चुनाव, अल्पसंख्यक मामलों तथा गुरमत शिक्षा मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा से औपचारिक भेंट की। इस दौरान दिल्ली के पत्रकारों से जुड़ी कई समस्याओं, चुनौतियों और उनके समाधान पर विस्तृत चर्चा हुई।

प्रतिनिधिमंडल ने खास तौर पर दिल्ली में पुराने वाहनों के मामले में सरकार के प्रयासों का उल्लेख किया, जिनके परिणामस्वरूप अदालत ने हाल ही में महत्वपूर्ण राहत प्रदान की है। यह राहत न केवल दिल्लीवासियों के लिए बल्कि लगातार फील्ड में रहने वाले पत्रकारों के लिए भी बड़ी सहूलियत लेकर आई है।

WJI ने मंत्री सिरसा के नेतृत्व में दिल्ली सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए उठाए गए कदमों की सराहना की। प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि पत्रकार समाज और लोकतंत्र की जिम्मेदारी निभाते हुए पर्यावरण को बचाने के लिए सरकार के साथ हर संभव सहयोग देंगे।

मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने प्रतिनिधिमंडल की बातों को गंभीरता और सहजता से सुना। उन्होंने कहा कि *"पत्रकार लोकतंत्र का चौथा स्तंभ हैं, और उनकी समस्याओं पर दिल्ली सरकार संवेदनशीलता के साथ विचार करेगी। सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि उनके कार्य में आने वाली दिक्कतों का समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जाए।"

इस प्रतिनिधिमंडल में राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय उपाध्याय, राष्ट्रीय महामंत्री नरेंद्र भंडारी, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष संदीप शर्मा, दिल्ली प्रदेश महामंत्री देवेंद्र तोमर, नरेंद्र धवन, सुनील परिहार और ईश मालिक स्वतंत्र सिंह भुलर और कमल जीत सिंह वरिष्ठ फोटो पत्रकार शामिल थे।

हमारा तिरंगा हमारी पहचान है, हमारी एकता और हमारे भारत की आन-बान-शान है : अनीश अब्बासी

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : देशभक्ति की भावना और राष्ट्रीय एकता की मिसाल पेश करते हुए दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा के नेतृत्व में आज दिल्ली भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा द्वारा जामा मस्जिद क्षेत्र में मुस्लिम समाज के सैकड़ों नागरिकों के साथ पूरे जोश और उत्साह के साथ भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई।

इस तिरंगा यात्रा की शुरुआत जामा मस्जिद स्थित मीना बाजार से हुई, जिसमें भारी संख्या में मुस्लिम महिलाएं, बच्चे, युवा, बुजुर्ग शामिल हुए। सभी के हाथों में लहराता तिरंगा और आँखों में देशप्रेम की चमक देखते ही बन रही थी।

इस दौरान आज जामा मस्जिद के अनेकों रास्ते भारत माता की जय' वंदे मातरम' और 'हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद' के नारों से गूंज उठे और इस प्रकार तिरंगे की शान में लोगों ने माहौल को देशप्रेम के रंग में रंग दिया।

इस मौके पर दिल्ली भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष अनिश अब्बासी, अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष आतिफ रशीद, मोर्चा प्रभारी कारी मोहमद हारून सहित इरफान सलमानी, शबाना रहमान, इम्तियाज भी उपस्थित रहे।

तिरंगा यात्रा को संबोधित करते हुए दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि आज जामा मस्जिद से लाल किले तक हमारे अल्पसंख्यक मोर्चा द्वारा निकाली इस तिरंगा यात्रा से हमने एक संदेश देने का प्रयास किया है।

उन्होंने कहा कि धर्मस्थल जामा मस्जिद से प्रारम्भ होकर लोकतंत्र के प्रतिक लाल किला तक निकाली इस यात्रा से हमने संदेश दिया है कि किसी भी धर्म से ऊपर भारत राष्ट्र है और हमेशा रहेगा। जिस प्रकार से हमारे मुसलमान भाई बहनों ने हाथों में तिरंगा लेकर देश के प्रति अपना स्नेह दिखाया वह एक मिशाल बना है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि दिल्ली में तिरंगा यात्रा पिछले चार दिनों से चल रही है और आज इसका आखिरी दिन है। आज दिल्ली के सभी 256 मंडलों में से बचे हुए कुल 52 मंडलों में तिरंगा यात्रा निकाली जा रही है जिसमें प्रदेश पदाधिकारी एवं जिला अध्यक्षों के अलावा मंडल स्तर के कार्यकर्ता शामिल होकर देश के प्रति अपना प्यार और सम्मान जाहिर किए।

कार्यक्रम के आयोजक अनीश अब्बासी ने कहा कि हमारा तिरंगा हमारी पहचान है, हमारी एकता और हमारे भारत की आन-बान-शान है। उन्होंने कहा कि आज जामा मस्जिद इलाके में हुई इस तिरंगा यात्रा से मुस्लिम समाज ने यह साबित कर दिया है कि उनके लिए देश प्रेम सर्वप्रथम है, देशप्रेम किसी एक धर्म की नहीं बल्कि हर हिंदुस्तानी के दिल की आवाज है, देश के प्रति समर्पण, एकता और भाईचारे की जीवंत मिसाल बनकर आज देशवासियों के सामने हैं।

अब्बासी ने कहा कि आज अल्पसंख्यक समाज के लोगों को धर्म, जाति वा भाषा से ऊपर उठकर एकजुटता संग देश की अखंडता, भाईचारे और शांति को बनाए रखने का उद्देश्य रखना चाहिए।

इस अवसर पर आतिफ राशिद ने कहा कि आज जामा मस्जिद इलाके के लिए ऐतिहासिक दिन है जब इतनी भारी संख्या में मुस्लिम समाज की महिलाएं, बुजुर्ग वा बच्चे तिरंगा हाथों में लिए अपना देश प्रेम जाहिर कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार में ही संभव हो सका है जो वास्तव में सबका साथ सबका विकास के लिए काम करती है।

वहीं इस मौके पर कारी मोहम्मद हारून ने कहा कि देश की आजादी में सभी कौमों के लोगों का योगदान था और इसी लिए आज भी हम सब देशवासी उन सभी उन शहीदों के बलिदान को मिलकर याद करते हैं।

सोनी सब कलाकारों ने स्वतंत्रता दिवस पर आजादी के सच्चे अर्थ पर व्यक्त किए विचार

मुख्य संवाददाता

जैसे ही भारत अपना 79वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है, सोनी सब के प्रिय कलाकार इस अवसर पर ठहरकर सोचते हैं कि यह दिन उनके लिए क्या मायने रखता है। बचपन की यादों से लेकर दिल छू लेने वाली श्रद्धांजलियों तक, वे साझा कर रहे हैं कि कैसे देशभक्ति आज भी उन्हें पर्दे पर और पर्दे के बाहर प्रेरित करती है। आइए जानें, उनके लिए स्वतंत्रता का अर्थ क्या है और वे भारतीय होने की भावना को कैसे संजोते हैं।

उफ्फ...ये लव है मुश्किल में शौर्य सिन्हा की भूमिका निभा रहे अभिषेक वर्मा ने कहा, "स्वतंत्रता दिवस हमारे स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा हमें एक स्वतंत्र देश में रहने के लिए दिए गए बलिदानों की याद दिलाता है। मेरे लिए, स्वतंत्रता का अर्थ है सम्मान के साथ जीने की क्षमता, बिना किसी डर के चुनाव करने की क्षमता, और यह सुनिश्चित करना कि हम एक-दूसरे की व्यक्तिगत पहचान का सम्मान करें। जब भी मैं तिरंगा फहराता देखता हूँ, तो मुझे गर्व और कृतज्ञता का एहसास होता है। स्वतंत्रता दिवस हमें आज मौजूद शांति और अवसरों की कद्र करने की याद दिलाता है।"

पुष्पा इम्पॉसिबल में पुष्पा का किरदार निभा रहीं करुणा पांडे ने कहा, "यह दिन मेरे दिल को अपार गर्व से भर देता है। मेरे लिए स्वतंत्रता का अर्थ है बड़े सपने देखने और बिना किसी बाधा के उन्हें पूरा करने की आज़ादी। यह एक जिम्मेदारी भी है कि हम नागरिक के रूप में समाज में सकारात्मक योगदान दें। हर स्वतंत्रता दिवस मुझे याद दिलाता है कि हमारे छोटे-छोटे नेक काम और एकजुटता ही भारत को वास्तव में अद्भुत बनाते हैं।"

वीर हनुमान में भगवान शिव का किरदार निभा रहे तरुण खन्ना कहते हैं— "मैंने पर्दे पर अक्सर भारतीय पौराणिक किरदार, योद्धा और राजा के किरदार निभाए हैं, इसलिए मेरा हमारे देश के इतिहास से गहरा जुड़ाव है। लेकिन असली नायक हमारे स्वतंत्रता सेनानी हैं, जो सच्चे महानायक हैं। इस स्वतंत्रता दिवस पर, मैं चाहता हूं कि हम सभी एक पल निकालकर अपने इतिहास को सम्मान दें और ऐसा भविष्य बनाएं जिस पर आने वाली पीढ़ियां गर्व कर सकें।

देखते रहिए सोनी सब के उफ्फ... ये लव है मुश्किल, पुष्पा इम्पॉसिबल और वीर हनुमान।

सनातन, सच्चा, अटल, महान,

वंदन तुझको, हे भारत माँ,
तेरी मिट्टी,पे है जान कुर्बाँ।
तेरी नदियों का अमृत प्यारा,
तेरे पर्वत का सिर ऊँचा तारा।
सदियों रही अमन की निशानी,
त्याग, तपस्या, वीरों की कहानी।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
तेरी गोद में रहते भाई-भाई।
चलें मिलकर, सबके क़दम,
तेरे लिए जिएँ, और मरे हम।
तुझसे ही है,पहचान हमारी,
तू ही है,अरमान,आस हमारी।
जय माँ वसुधा,जय-जय भारत,
जां,तेरी रक्षा में जाए,मेरे भारत
सनातन, सच्चा, अटल, महान,
मेरी जान, मेरा भारत महान,,,

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सहज हरदा मध्य प्रदेश....

सिविल लाइन जोन से आने वाले मेयर राजा इकबाल सिंह अपना घर साफ नहीं कर पा रहे तो पूरी दिल्ली कैसे साफ करेंगे?- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम में आम आदमी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने बुधवार को सिविल लाइन जोन का दौरा कर भाजपा सरकार द्वारा चलाए जा रहे सफाई अभियान की पोल खोल दी। तिमारपुर विधानसभा के वार्ड 11 में कूड़े के ढेर का दौरा करने पहुंचे अंकुश नारंग कहा कि मेयर राजा इकबाल सिंह सिविल लाइन जोन से आते हैं। जब मेयर अपना घर साफ नहीं कर पा रहे हैं तो पूरी दिल्ली कैसे साफ करेंगे? जगह-जगह जल भराव और कूड़ा जमा होने की वजह से डेंगू, चिकनगुनिया व मलेरिया का खतरा बढ़ गया है। पिछले चार महीने से भाजपा एमसीडी की सत्ता में है और तब से दिल्ली में कूड़े से गंदगी बढ़ती जा रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा को फोटो शूट से बाहर निकल कर गवर्नेंस पर काम करना हो ताकि वह दिल्लीवालो की अपेक्षाओं पर खरा उतर सके।

अंकुश नारंग ने कहा कि सिविल लाइन जोन से मेयर राजा इकबाल खुद भी आते हैं और इसी वार्ड के अंदर मेयर हाउस भी है और यह तिमारपुर विधानसभा है। इसी तिमारपुर विधानसभा से राजा इकबाल सिंह खुद पार्षद है। इसके बावजूद तिमारपुर विधानसभा के हालात यह है। भाजपा ने कहा था कि एक अगस्त से 31 अगस्त सफाई अभियान चला रहे हैं। सीएम रेखा गुप्ता सफाई अभियान शुरू किया था और मेयर राजा इकबाल सिंह ने बड़े-बड़े वादे किए थे। लेकिन राजा इकबाल सिंह अपने मेयर हाउस के वार्ड के अंदर ही चारों तरफ कूड़ा फैला हुआ है। चारों तरफ पानी जमा हो रहा है, शिल्ट भी पड़ी हुई है।

उन्होंने कहा है कि यह समय मौसमी बीमारियों का है। इस मौसम में डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया का है। इसके बावजूद इतनी गंदगी है। राजा इकबाल सिंह अपना घर तो साफ करवा नहीं पाए, वह दिल्ली को कूड़ा मुक्त कैसे बना पाएंगे। मेयर पहले अपने घर को साफ कराएं, फिर पूरी दिल्ली को साफ करें। मेयर सिर्फ फोटो शूट करते हैं। भाजपा के गुलाब सिंह राठौर यहां के चेयरमैन हैं। लेकिन चार महीने से यहां कूड़ा डाला जा रहा है। चार महीने पहले ही भाजपा एमसीडी की सत्ता में आई थी। भाजपा जब से एमसीडी की सत्ता में आई है, तब से हर तरफ कूड़ा ही कूड़ा जमा हो रहा है।

अंकुश नारंग ने कहा कि भाजपा के लोग समस्या का समाधान नहीं करना चाहते हैं। ये लोग विपक्ष के साथ समाधान पर चर्चा नहीं करते हैं। भाजपा को समाधान पर चर्चा करनी चाहिए। मेयर राजा इकबाल सिंह जिस वार्ड में रहते हैं, अगर वह अपना वार्ड नहीं साफ कर सकते हैं तो पूरी दिल्ली क्या साफ कर पाएंगे। उन्होंने कहा कि इस कूड़े को हटाना कोई मुश्किल काम नहीं है। फिर भी जगह-जगह कूड़ा जमा है। बुराड़ी में भी इसी तरह कूड़ा फैला हुआ है। मजलिस पार्क में भी कूड़ा एकत्र हो रहा है। पूरी दिल्ली में धीरे-धीरे जगह-जगह कूड़ा इकट्ठा होता जा रहा है। अगर भाजपा सफाई अभियान सिर्फ कागजों में ही चलाएगी और गाड़ी से उतर कर सिर्फ फोटो खिंचवा लेगी तो इससे काम नहीं चलेगा। भाजपा को फोटो शूट से बाहर आकर गवर्नेंस करनी पड़ेगी। अब दिल्ली में उसकी चार इंजन की सरकार है। भाजपा को दिल्ली की जनता की अपेक्षाओं के अनुसार काम करना पड़ेगा।

अडानी भगाओ -- छत्तीसगढ़ बचाओ के नारे के साथ संयुक्त किसान मोर्चा ने पूरे प्रदेश में मनाया कॉर्पोरेट विरोधी दिवस

परिवहन विशेष न्यूज

रायपुर। संयुक्त किसान मोर्चा के देशव्यापी आह्वान पर आज छत्तीसगढ़ में भी मोर्चा के घटक संगठनों ने पूरे प्रदेश में कॉर्पोरेट विरोधी दिवस मनाया, धरना-प्रदर्शन आयोजित किए तथा राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपे गए। इस आंदोलन के जरिए संयुक्त किसान मोर्चा ने भारत छोड़ो आंदोलन की प्रासंगिकता को रेखांकित किया तथा देश के संसाधनों को चंद कारपोरेट घरानों के सुपुर्द करने का कड़ा विरोध किया। आंदोलनकारियों ने भारत के कृषि क्षेत्र को विदेशी आयात के लिए खोलने, बिहार में एसआईआर के नाम पर पिछले दरवाजे से एनआरसी को लागू करने का भी विरोध किया है।

संयुक्त किसान मोर्चा ने आरोप लगाया है कि छत्तीसगढ़ को अदानी कंपनी की लूट का चारागाह बना दिया गया है। पेसा और वनाधिकार अधिनियम और सभी संवैधानिक प्रावधानों का खुला उल्लंघन करते हुए यहां जल, जंगल, जमीन और पर्यावरण का विनाश किया जा रहा है। इसके लिए उन्होंने केंद्र और राज्य की कॉर्पोरेटपरस्त नीतियों को जिम्मेदार ठहराते हुए अडानी और अन्य कॉर्पोरेट कंपनियों को छत्तीसगढ़ से भगाने की जरूरत पर भी जोर दिया है।

संयुक्त किसान मोर्चा के आह्वान के पालन के क्रम में आज भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) ने गरियाबंद, दुर्ग, जगदलपुर, बीजापुर और नारायणपुर जिले में, अखिल भारतीय क्रांतिकारी किसान संगठन और आदिवासी भारत महासभा द्वारा मैनपुर, छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा द्वारा दल्ली राजहरा और बालोद में, जिला किसान संघ द्वारा राजनांदगांव में, छत्तीसगढ़ किसान महासभा द्वारा रायपुर में, हसदेव अरण्य बचाओ संघर्ष समिति द्वारा हसदेव में, छत्तीसगढ़ किसान सभा और भू विस्थापित रोजगार एकता संघ द्वारा कुसमुंडा (कोरबा) और लुण्ड्रा (सरगुजा) में धरना और प्रदर्शन किया गया। विभिन्न जगहों पर हुए इन आंदोलनों का नेतृत्व तेजराम विद्रोही, प्रवीण श्योकंद, नरोत्तम शर्मा, सौरा यादव, भीमसेन मरकाम, युवराज नेताम, जनकलाल ठाकुर, रमाकांत बंजारे, सुदेश टीकम, आलोक शुक्ला, प्रशांत झा, जवाहर कंवर, दीपक साहू, सोमेंद्र सिंह, दामोदर श्याम और ऋषि गुप्ता आदि किसान नेताओं ने किया।

आनन्द धाम आश्रम में श्रीविष्णु स्वामी जयंती महोत्सव15 अगस्त को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। चामुंडा मोड़ स्थित आनंदधाम आश्रम (ठाकुरश्री शेषनारायण मन्दिर) में श्रीविष्णु स्वामी जयंती महोत्सव दिनांक 15 अगस्त 2025 को अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है। जानकारी देते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि आनंदधाम आश्रम (ठाकुरश्री शेषनारायण मन्दिर) के संस्थापक अध्यक्ष श्रीमद् जगद्गुरु विजयराम देवाचार्य भैयाजी महाराज (बल्लभगढ़ वाले)के पावन सानिध्य में आयोजित होने वाले इस महोत्सव का शुभारंभ प्रातः 07 बजे से विष्णु स्वामी अखाड़ा (ज्ञान गुदड़ी) से आनंद धाम आश्रम (श्री शेषनारायण मंदिर) चामुंडा मोड़, परिक्रमा मार्ग तक गाजे-बाजे के मध्य निकलने वाली भव्य शोभायात्रा के साथ होगा ।तत्पश्चात पूर्वाह्न 09 बजे से वृहद संत-विद्वत सम्मेलन का आयोजन होगा ।जिसमें कई प्रख्यात संत, महंत, महामंडलेश्वर, जगद्गुरू, धर्माचार्य एवं विद्वान आदि भाग लेंगे। तत्पश्चात 11 बजे से महंतों का स्वागत व संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं भंडारा आदि के कार्यक्रम संपन्न होंगे।

नगर निगम अमृतसर द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर भव्य आयोजन हेतु सफाई के किए गए पुख्ता प्रबंध

अमृतसर 13 अगस्त (साहिल बेरी)

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व धूमधाम से मनाने हेतु नगर निगम आयुक्त श्री गुलप्रीत सिंह औलख द्वारा शहर में स्थित मंदिरों के आसपास और सड़कों की सफाई के लिए स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए गए। स्वास्थ्य विभाग के साथ-साथ निगम के सिविल विभाग, ओ एंड एम विभाग, एस्टेट विभाग और स्ट्रीट लाइट विंग को भी इन स्थानों पर जरूरी प्रबंध सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।

आयुक्त गुलप्रीत सिंह द्वारा शुरू किए गए विशेष सौंदर्यीकरण अभियान के तहत गोल्डन गेट से श्री दरबार साहिब तक चलाया गया एक विशेष सफाई अभियान भी बड़ी संख्या में व्यापारिक और सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से सफलतापूर्वक पूरा किया गया, जिसे शहरवासियों द्वारा सराहा गया।

आयुक्त औलख ने बताया कि नगर निगम अमृतसर शहर की सड़कों की सफाई को लेकर बेहद गंभीर है। प्रतिदिन लाखों श्रद्धालु धार्मिक स्थलों के दर्शन हेतु शहर आते हैं, जिसके चलते गोल्डन गेट से श्री दरबार साहिब तक विशेष सफाई अभियान चलाया गया जिसमें अवैध कब्जे हटाए गए, सड़कों की मरम्मत की गई और खराब पड़ी स्ट्रीट लाइटों को दुरुस्त किया गया।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व के सफल आयोजन हेतु उन्होंने निगम के सभी विभागों को निर्देश दिए हैं कि शहर में स्थित सभी मंदिरों के आसपास और उनसे जुड़ी सड़कों पर सफाई के पुख्ता इंतजाम किए जाएं, कूड़ा व मलबा हटाया जाए, अवैध रेहड़ियों को रोका जाए, सड़कों की मरम्मत और पैचवर्क किया जाए, सीवरेज के पानी की निकासी सुनिश्चित की जाए और स्ट्रीट लाइटें कार्यशील हालत में रखी जाएं ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

पंजाब के भले के लिए हर निर्णय में होगी पंजाब के हर वर्ग की सहमति : डॉ. जसबीर सिंह संधू

अमृतसर, 13 अगस्त (साहिल बेरी)

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान द्वारा प्रदेश के हित में जनकल्याणकारी और दूरदर्शी सोच के तहत लागू की गई लैंड पूलिंग पॉलिसी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए डॉ. जसबीर सिंह संधू ने कहा कि किसानों के कुछ वर्ग इस नीति के कुछ प्रावधानों से संतुष्ट नहीं थे। किसानों के हित को प्राथमिकता देते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने इस नीति को वापस ले लिया है ।डॉ. संधू ने कहा कि मुख्यमंत्री ने सिर झुकाकर जनता का फैसला स्वीकार किया और यह साबित कर दिया कि जनता द्वारा चुनी सरकार हमेशा लोगों के साथ खड़ी है। भाजपा सरकार की तरह निर्णय जनता पर थोपे नहीं जाते। मान सरकार ने इसे न तो अपनी जिद और न ही अपनी इज्जत का सवाल बनाया, बल्कि किसानों की बात मानने को प्राथमिकता दी। इसके विपरीत, भाजपा की केंद्र सरकार ने 750 किसानों की शहादत के बाद मजबूरी में तीन काले कानून वापस लिए थे ।डॉ. संधू ने कहा कि हमें गर्व है कि भगवंत सिंह मान जनता के सुझावों का सम्मान करते हैं। मान सरकार की यह उच्च सोच स्पष्ट करती है कि पंजाब में कोई भी निर्णय, पंजाब के लोगों की सहमति के बिना, जनता पर नहीं थोपा जाएगा। मुख्यमंत्री ने किसानों की भावनाओं और जज्बात को महत्व देते हुए लैंड पूलिंग पॉलिसी को रद्द कर दिया, जिससे पंजाब की जनता में उनके प्रति अपनत्व और विश्वास और मजबूत हुआ है। अंत में, डॉ. जसबीर सिंह संधू ने दोहराया कि पंजाब में हर फैसला जनता की सहमति से ही लिया जाएगा — चाहे वह अन्नदाता किसान हों या समाज का कोई अन्य वर्ग।

मोनिका त्यागी नॉर्थ और रजिंदर कौर रज़िया की अगुवाई में साझा तीज का त्यौहार बड़े धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया

अमृतसर 13 अगस्त (साहिल बेरी)

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अमृतसर की मेयर मोती भाटिया, डिप्टी मेयर प्रियांका शर्मा तथा तरनतारन से हरविंदर कौर संधू विशेष रूप से मौजूद रहीं ।त्यौहार में बड़ी संख्या में महिलाएं पारंपरिक रंग–बिरंगे पंजाबी परिधानों में सजधज कर शामिल हुईं। कार्यक्रम की शुरुआत गिद्धा और लोक गीतों से हुई, जिसने माहौल को पूरी तरह उत्सवमय बना दिया ।अपने संबोधन में मोनिका त्यागी नॉर्थ और रजिंदर कौर रज़िया ने कहा कि तीज का त्यौहार हमारी सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हिस्सा है, जो महिलाओं को मिल-बैठकर खुशियां साझा करने का अवसर देता है। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन आपसी रिश्तों को मजबूत करने के साथ-साथ समाज में भाईचारे की भावना को भी बढ़ावा देते हैं कार्यक्रम के अंत में सभी मेहमानों को तीज की शुभकामनाएं दी गईं और भविष्य में भी इस तरह के सांस्कृतिक आयोजनों को जारी रखने का वादा किया गया ।इस मौके पर रोबिनजीत कौर, काउंसलर निताशा गिल, शिवानी शर्मा, किरण, सीमा शर्मा, मोना महाजन, जोत बिंदर, राजवंत कौर, राजविंदर कौर, मीना, गुरप्रीत, काउंसलर शमशेर सिंह संधू, अरविंदर भट्टी, वरिष्ठ नेता जसपाल सिंह जथेदार, लाडी सहोता ब्लॉक इंचार्ज, रमन कुमार, स्पोक्समैन साउथ भूपिंदर सिंह सहित कई अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

सिविल डिफेंस ने हर घर तिरंगा अभियान के तहत किया वृक्षारोपण एवं निकली प्रभात फेरी

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: अपर जिला अधिकारी नमामि गंगे प्रभारी सिविल डिफेंस मथुरा राजेश यादव के आदेश अनुसार उप नियंत्रक मुनेश कुमार गुप्ता, चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल, डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल, डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल सीनियर स्टाफ ऑफीसर दीपक चतुर्वेदी बैंकर के नेतृत्व मे हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत सिविल डिफेंस मथुरा की वार्डन पोस्ट संख्या एक पोस्ट वार्डन अशोक यादव एवं उनकी टीम के द्वारा औरंगाबाद, दामोदरपुरा में प्रभात फेरी निकाली गई साथ ही औरंगाबाद स्थित एक विद्यालय में वृक्षारोपण किया गया गए जिसमें वार्डन पोस्ट संख्या एक के वार्डन एवं फायर फाइटरों ने भाग लिया इसी क्रम में औरंगाबाद स्थित कार्यालय वार्डन पोस्ट संख्या एक पर पोस्ट संख्या एक की मासिक बैठक जन्माष्टमी एवं 15 अगस्त को लेकर आहुत की गई बैठक में पोस्ट वार्डन अशोक यादव, सेक्टर वार्डन देवेंद्र कुमार, राम सैनी, दर्शन सिंह, पवन प्रकाश, शुभम कुमार,हेमन्त, फायर फाइटर नटवर सिंह, सोनू, योगेश, अरुण, कुलदीप सिंह, रोहित कुशवाहा, पंकज कुमार, आदि वार्डन एवं स्वयंसेवक आदि उपस्थित रहे।

दीप प्रज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ उड़िया बाबा महाराज का सप्तदिवसीय 150 वां प्राकट्योत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। दावानल कुंड क्षेत्र स्थित श्रीकृष्णाश्रम (उड़िया बाबा आश्रम) में ब्रज के प्रख्यात संत स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज का सप्तदिवसीय सार्धशताब्द (150 वां) प्राकट्योत्सव विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ प्रारंभ हो गया है ।महोत्सव का शुभारभ वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य ब्रह्मलीन स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया जाएगा ।तत्पश्चात सन्त-विद्वत में अपने विचार व्यक्त करते हुए करह आश्रम के प्रबंधक बड़े भगतजी महाराज ने कहा कि ब्रह्मलीन स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज परम तपस्वी, भगवद् प्राप्त व सिद्ध सन्त थे।अपने तपोबल से उन्होंने कई रोगियों को रोग मुक्त करके उन्हें जीवन दान दिया। जन-जन हेतु किए गए उनके कल्याणकारी सेवा कार्यों के लिए वे सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे।

श्रीराधा उपासना कुंज के महंत संतदास महाराज ने कहा कि उड़िया बाबा महाराज को बाल्यकाल से ही अनंत सिद्धियां प्राप्त थीं। मां अन्नपूर्णा उनको सिद्ध थीं। पूज्य बाबा महाराज बीहड़ जंगलों में भी लोगों के भोजन की व्यवस्था अपनी सिद्धि से कर दिया करते थे।

भागवताचार्य गोपाल भैया महाराज एवं आचार्य मृदुल कांत शास्त्री ने कहा कि पूज्य उड़िया बाबा महाराज परमहंस माने जाते थे ।उनके जीवन चरित्र और संस्मरणों का श्रवण करने मात्र से लोगों में धार्मिक व आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है

पूर्णोतम दीक्षित एवं गोविंद कृष्ण पाठक ने कहा कि ब्रह्मलीन स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज अद्वैत वेदांत के संवाहक थे ।उन्होंने असंख्य व्यक्तियों को ज्ञान और भक्ति का मार्ग दिखा कर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

इससे पूर्व प्रख्यात रासाचार्य स्वामी ताराचंद ठाकुरजी के निर्देशन में गौरांग लीला का अत्यन्त नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया गया ।सायं को रासलीला की मनोहारी प्रस्तुति दी गई ।जिसे देख सभी भक्त-श्रद्धालु भाव-विभोर हो गए।

इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक व उड़िया बाबा आश्रम के प्रभारी आचार्य पंडित कुलदीप दुबे, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, सन्त प्रवर स्वामी आवेधानंद महाराज, विष्णुकांत शर्मा (आगरा), राम स्वरूप जोशी (मुंबई), विनोद तायल (देहरादून), हरीश अग्रवाल, अश्वनी प्रताप सिंह (नोएडा), रामस्वरूप जोशी, डॉ. राधाकांत शर्मा, विष्णु शर्मा, विजय पांडे, गौरव शर्मा (दिल्ली) आदि उपस्थित रहे ।संचालन संत सेवानंद ब्रह्मचारी ने किया।

आखिर कानपुर में कौन कर भागा बुजुर्ग स्कूल गार्ड की हत्या : सिर भी गायब, जांच शुरू

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां हत्याओं के जारी क्रम में आज बुधवार को एक बुजुर्ग स्कूल गार्ड भी शिकार हो गया उसका हत्या किया हुआ शव स्कूल से ही बरामद किया गया। उसका सिर गायब मिला है, जिसके बाद पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। बताया जाता है कि इस बुजुर्ग की किसी से कोई रंजिश भी नहीं थी। जिससे सवाल रुकता है कि आखिर उसकी इस तरह से हत्या करके कौन फरार हो गया। चकेरी थाना क्षेत्र के मैरी जीसस स्कूल में हुई घटना के बारे में जानकारी तब मिली जब आज बुधवार सुबह करीब एक साल से बंद स्कूल में ठेकेदार पहुंचा, जिसके बाद घटना की जानकारी हुई। मौके पर पहुंची पुलिस को दी गई जानकारी के मुताबिक चकेरी थाना क्षेत्र का मैरी जीसस स्कूल कानपुर क्रिकेट एसोसिएशन के चेयरमैन संजय कपूर का है ,जिसे प्रबंधन ने एक साल पहले गोविंद नगर के एक बड़े कारोबारी को बेच दिया था। जिसके बाद से स्कूल बंद था। स्कूल की देखरेख ठेकेदार गंगा सिंह कर रहे थे। जिसमें गोविंद नगर एच ब्लाक के रहने वाले राम प्रसाद (60) देहली सुजानपुर स्थित इस मेरी जीसस स्कूल में 7 जुलाई से सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी कर रहे थे। पुलिस की सूचना थोड़ी ही देर में राम प्रसाद की पत्नी शांति देवी, बेटा आशीष रावत और अंकित रावत पहुंचे। पुलिस ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर हत्यारों का पता लगाया जा रहा है। पुलिस सूटों के मुताबिक घटना की वजह लूट का भी उद्देश्य हो सकता है ,लेकिन अभी तक यह बात प्रमाणित नहीं हुई है। वहीं दूसरी ओर मृतक की किसी से कोई रंजिश प्रकाश में नहीं आई है। पुलिस ने बताया कि विभिन्न पहलुओं की बारीकी से जांच करके घटना का खुलासा जल्द ही किया जाएगा।

नया आयकर बिल 2025 संसद के दोनों सदनों में पारित-राष्ट्रपति के हस्ताक्षर से अब कानून बन जायेगा-करोड़ों करदाताओं पर होगा सीधा असर !

एडवोकेट किशन सनमुखदास

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर तेज़ी से बदलते परिपेक्ष में अगर तेजी से विकास की रफ्तार पकड़ता है तो, हर देश को अपना इंफ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा, स्वास्थ्य परिवहन इत्यादि हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का लाभ लेकर उन्हें आधुनिक बनाना होगा, जिसके लिए पैसे की आवश्यकता होगी जो प्रतिवर्ष बजट के माध्यम से इंतजाम किया जाता है। भारत ने तो इन सभी उपायों पर तेजी से कदम बढ़ाना शुरू कर दिया हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि विज़न 2047 को पूरा करने के लिए आम नागरिकों को आगे आकर टैक्स भरने के लिए जागृत किया जा रहा है, इसके लिए ही आयकर अधिनियम को छोटा व आसन बनाकर 11 अगस्त को लोकसभा में व 12 अगस्त 2025 को राज्यसभा में पारित करवा गया है, जिस पर राष्ट्रपति के हस्ताक्षर होने के बाद यह कानून बन जाएगा और 1 अप्रैल 2026 से लागू होने की संभावना व्यक्ति की गई है ।मेरी केंद्र व राज्य सरकारों से इस आर्टिकल के माध्यम से अपील व सुझाव है कि करों की प्रक्रिया व शर्तों को आसान बनाकर टैक्स देनें वालों की संख्या में वृद्धि तो होगी परंतु वह अधिक मात्रा में आया हुआ टैक्स अगर रेवड़ियां बांटने में निकल जाता है तो, विकास की रफ्तार को ढीला कर देता है इसलिए रेवड़ियां बांटने पर लगाम लगाने के लिए 31 अगस्त 2025 तक चलने वाले इस मानसून सत्र में ही बिल बनाकर निचले व ऊपरी सदन में ध्वनि मत से या फिर इसी तरह 3-4 मिनट में ही पारित करा लिया जाता है तो कर दाताओं की मेहनत से कमाई गाड़ी कमाई रेवड़िया बांटने में नहीं जाएगी ।चूँकि 64 वर्षों पुराना आयकर अधिनियम 1961 को अब अनायस शब्दों धाराओं अध्यायों को हटाकर अब छोटा व आसान बनाया गया है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे नया आयकर बिल 2025 संसद के दोनों सदनों में पारित- राष्ट्रपति के हस्ताक्षर से अब कानून बन जाएगा-करोड़ों करदाताओं पर होगा सीधा असर !

साथियों बात अगर हम नए आयकर विधेयक 2025 को पारित करने की पूरी थियोरी की करें तो, केंद्रीय वित्त मंत्री ने पिछले हफ्ते लोकसभा से आयकर विधेयक, 2025 के पुराने मसौदे को औपचारिक रूप से वापस ले लिया था इस बिल का अपडेटेड वर्जन आज पेश किया गया था। लोकसभा की प्रवर समितिने लगभग 285 सिफारिशें की थीं और पिछले महीने संसद को 4,500 पन्नों की एक विस्तृत रिपोर्ट सौंपी थी, जिसमें विधेयक में सुधार का प्रस्ताव दिया गया। बता दें कि मूल विधेयक फरवरी में संसद के बजट सत्र के दौरान पेश किया गया था। विधेयक में मौजूदा कानून के अनावश्यक प्रावधानों और पुरानी भाषा को हटा दिया गया है और 1961 के आयकर अधिनियम में धाराओं की संख्या 819 से घटाकर 536 और अध्यायों की संख्या 47 से घटाकर 23 कर दी गयी है। नए आयकर विधेयक में शब्दों की संख्या 5.12 लाख से घटाकर 2.6 लाख कर दी गई है। विपक्षी सदस्यों की अनुपस्थिति के बीच वित्तमंत्री ने कहा कि ये बदलाव केवल सतही नहीं हैं। ये टैक्स प्रशासन के प्रति नए और सरलीकृत दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। यह अधिक संक्षिप्त और अधिक केंद्रित कानून है, जिसे पढ़ने, समझने और लागू करने में आसानी होगी ।कहा जा रहा है कि यह नया इनकम टैक्स बिल 1 अप्रैल 2026 से लागू होगा। इसे तैयार करने में काफी समय लगा है। इसके साथ ही डिजिटल युग की जरूरतों के अनुसार इसे ढाला गया है। वहीं प्रीवियस ईयर और असेसमेंट ईयर जैसे ऑप्शन को खत्म टैक्स ईयर कॉन्सेप्ट शुरू किया जाएगा ।वित्त मंत्री ने कहा कि 1961 का आयकर अधिनियम में दशकों तक संशोधन किया गया। इसमें कई जटिलातएं है। यह काफी पुराना हो गया था ।ऐसे में एक नए बिल की जरूरत महसूस की जा रही थी। नए बिल को आधुनिक अर्थव्यवस्था के तहत बनाया गया है। नए कानून में भाषा को सरल बनाया गया है ताकि आम टैक्सपेयर्स इसे आसानी से समझ सकें। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि नए कानून में इनकम टैक्स दरों में कोई बदलाव नहीं होगा। (1) इस नए बिल को 536 धाराओं और 16 अनुसूचियों में व्यवस्थित किया जाएगा, ताकि इसे समझना और पढ़ना दोनों आसान हो ।(2) शून्य टीडीएस प्रमाणपत्र की सुविधा मिलेगी। (3) डिविडेंड में कटौती को लेकर सेक्शन 80 एम की फिर से शुरुआत की जाएगी।

(4) आईटीआर फाइल चाहे डेडलाइन के बाद किया हो, लेकिन रिफंड मिलने में परेशानी नहीं होगी। (5) ऐसे सभी क्लास को हटाया जाएगा, जो इसे सपोर्ट नहीं करते (6) ऐसी बिजनेस प्रॉपर्टी जिनकाइस्तेमाल न हो रहा हो या लंबे से खाली हो, उनपर टैक्स नहीं लिया जाएगा ।सहित और भी ऐसे कई प्रावधान हैं, जो करदाताओं के लिए मील का पत्थर साबित होंगे।

साथियों बात अगर हम इस नए आयकर अधिनियम 2025 को पारित करने में काफी जद्दोजहद की करें तो, बता दें कि साल 2010 में प्रत्यक्ष कर संहिता विधेयक, 2010 संसद में पेश किया गया था। इसे जांच के लिए स्थायी समिति के पास भेजा गया था। हालांकि, 2014 में सरकार बदलने के कारण विधेयक निरस्त हो गया। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने शुक्रवार (7 फरवरी, 2025) को नए इनकम टैक्स बिल को मंजूरी दे दी, यह बिल छह दशक पुराने आईटी अधिनियम की जगह लेगा। नया बिल इनकम टैक्स से जुड़े उन सभी संशोधनों और धाराओं से मुक्त होगा जो अब प्रासंगिक नहीं हैं। साथ ही भाषा ऐसी होगी कि लोग इसे टैक्स एक्सपर्ट की सहायता के बिना समझ सकें। इस बिल में प्रावधान और स्पष्टीकरण या कठिन वाक्य नहीं होंगे ।इससेमुकदमेबाजी कम करने में भी मदद मिलेगी और इस तरह विवादित टैक्स डिमांड में कमी आएगी। चूँकि बजट में माननीय वित्तमंत्री ने घोषणा की थी कि एक सप्ताह के भीतर एक नया आयकर अधिनियम 2025 लाया जाएगा, इसलिए ही आज दिनांक 7 फरवरी 2025 को देर रात्रि केंद्रीय वित्तीय कैबिनेट ने आयकर अधिनियम 2025 (डायरेक्ट टैक्स कोड 2025) को मंजूरी दी थी, फ़रि संसदीय स्थाई समिति के पास भेजा गया था m नए बिल में संभावित कुछ ऐसे प्रावधान प्रस्तावित है जो कार्यकारी आदेशों के माध्यम से कटौती या छूट की सीमा और राशियों को बदलने की अनुमति देंगे

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका उद्देश्य विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि नया आयकर बिल 2025 संसद के दोनों सदनों में पारित- राष्ट्रपति के हस्ताक्षर से अब कानून बन जायेगा- करोड़ों करदाताओं पर होगा सीधा असर !64 वर्ष पुरानें आयकर अधिनियम 1961 से बहुत छोटा-अनावश्यक शब्दों धाराओं अध्यायों को हटाया गयासंसद में एसआईआर मुद्दे पर हंगामें के बीच, मात्र 3 मिनट में नया आयकर विधेयक 2025, ध्वनिमत से पारित-1 अप्रैल 2026 से लागू होने की संभावना।

अभिनेता अजित कुमार ने खरीदी शेवरले कार्वेट सुपरकार, जानें V8 इंजन समेत क्या है खास?

दक्षिण भारतीय अभिनेता Ajith Kumar जो कार रेस के शौकीन हैं ने हाल ही में Chevrolet Corvette C8 Z06 रोडस्टर खरीदी है। उन्होंने इस सुपरकार की डिलीवरी का वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया है। यह कार 5.5-लीटर LT6 V8 इंजन के साथ आती है जो 670 हॉर्सपावर की पावर जनरेट करती है।

नई दिल्ली। दक्षिण भारतीय सिनेमा के पॉपुलर एक्टर अजित कुमार कार रेस के शौकीनों में से एक हैं। हाल ही में उन्होंने रेयर हाइपरकार McLaren Senna खरीदी थी, जिसका नाम लिजेंड F1 ड्राइवर Ayrton Senna के नाम पर रखा गया है। अब इन्होंने अपने कार कलेक्शन में Chevrolet Corvette C8 Z06 रोडस्टर को शामिल किया है। अजित कुमार ने इसकी डिलीवरी का वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया है। आइए जानते हैं कि अजित कुमार की नई कार किन बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है।

Ajith Kumar ने खरीदी Chevrolet Corvette

हाल ही में अजित कुमार ने सिनेमा में अपने 33 साल पूरे किए है। एक्टर ने Chevrolet Corvette C8 Z06 रोडस्टर कार को खरीदा है। उन्होंने इसके डिलीवरी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर डाला है, जिसमें वह अपनी नई सुपरकार की डिलीवरी लेते दिख रहे हैं। इस वीडियो में वह डीलर के जरिए कार के बारे में जानकारी लेते हुए दिखाई दे रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, अजित ने दुबई के एक डीलरशिप पर शेवरले कोर्वेट की डिलीवरी ली है।

Chevrolet Corvette की खुबियां

इस सुपरकार के बारे में बात करें, तो Chevrolet Corvette C8 Z06 में एक 5.5-लीटर LT6 V8 इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जिसे बेमिसाल ताकत और परफॉर्मेंस के लिए जाना जाता है। यह इंजन 670 हॉर्सपावर की जबरदस्त पावर और 624 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करता है। इंजन को 8-स्पीड डुअल-क्लच ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा गया है। यह कार महज 3 सेकंड से भी कम समय में 0 से 100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकती है। इस सुपरकार की कीमत लगभग AED 624,800 है, जो लगभग 1.4 करोड़ रुपये के बराबर है।

अजित कुमार का कार कलेक्शन

अजित कुमार के कार कलेक्शन में कई बेहतरीन गाड़ियां शामिल है। उनके कार कलेक्शन में Chevrolet Corvette C8 Z06 के अलावा Mercedes-Benz 350 GLS, BMW 740Li, Ferrari SF90, Porsche GT3 RS, McLaren Senna समेत और भी गाड़ियां शामिल है। इसके साथ ही वह बाइक के भी शौकिन है, उनके पास MW S 1000 RR, BMW K 1300 S, Kawasaki Ninja ZX-145 जैसी मोटरसाइकिल भी है।

विनफ़ास्ट लाएगी नैनो से भी छोटी इलेक्ट्रिक कार, "एमजी धूमकेतु" को देगी कड़ी टक्कर

परिवहन विशेष न्यूज

वियतनामी वाहन निर्माता Vinfast जल्द ही भारतीय बाजार में अपनी इलेक्ट्रिक एसयूवी VF 6 और VF 7 को लॉन्च करेगी। कंपनी Vinfast Minio Green EV के लिए पेटेंट भी दायर किया है जो टाटा नैनो से भी छोटी होगी। इस 2-डोर इलेक्ट्रिक कार में 14.7 kWh का बैटरी पैक और 20 kW की इलेक्ट्रिक मोटर होगी जो 170 किमी की रेंज देगी। इसका मुकाबला MG Comet से होगा।

नई दिल्ली। Vinfast भारतीय बाजार में जल्द ही अपनी दो इलेक्ट्रिक SUV VF 6 और VF 7 को लॉन्च करने वाली है। कंपनी ने इसकी बुकिंग शुरू कर दी है। कंपनी ने हाल ही में Vinfast Minio Green EV के लिए पेटेंट दायर किया है। यह एक छोटी इलेक्ट्रिक कार होने वाली है। इस इलेक्ट्रिक कार की साइज टाटा नैनो से भी छोटा होने वाला है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला MG Comet से देखने के लिए मिलेगा। आइए विस्तार में जानते हैं कि Vinfast की यह छोटी इलेक्ट्रिक कार किन खास फीचर्स के साथ आने वाली है?

स्टाइलिंग और फीचर्स

वियतनामी बाजार में, Vinfast Minio Green को एक व्यावसायिक इलेक्ट्रिक वाहन के रूप में ऑफर किया जाता है। इसकी लंबाई 3,090 मिमी है। इसे 2-डोर ऑल-इलेक्ट्रिक सुपरमिनी सेगमेंट में पेश किया जाता है। इसे टॉल-बॉय प्रोफाइल दिया गया है, जो लोगों का काफी आसानी से ध्यान खींचती है। इसमें क्लोज्ड-ऑफ ग्रिल, अर्ध-वृत्ताकार-स्टाइल की हेडलाइट्स और प्रमुख बम्पर डिजाइन दिया गया है। इसमें छोटा बोनट, सर्कुलर व्हील आर्च, 13-इंच के पहिए और पारंपरिक दरवाजे के हैंडल दिए गए हैं। इसके पीछे की तरफ EV में एक शार्क फिन एंटीना, एक फ्लैट विंडस्क्रीन और वर्टिकली स्टैक्ड टेल लैंप भी मिलता है। इसे कुल 6 कलर ऑप्शन में लेकर आया जाएगा।

Vinfast Minio Green का इंटीरियर

इसमें डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले दिया गया है, जो इंफोटेनमेंट सिस्टम के रूप में भी काम करता है। इसमें डैश, दरवाज़े के हैंडल और अपहोल्स्ट्री पर नीले एक्सेंट के साथ एक ग्रे इंटीरियर थीम दिया गया है। बाकी फीचर्स के रूप में रोटरी डायल, कुछ फिजिकल बटन और एक फ्लैट बॉटम 2-स्पोक स्टीयरिंग व्हील दिए गए हैं। इसके साथ ही 4-तरफा एडजस्टेबल ड्राइवर सीट, फैब्रिक सीट अपहोल्स्ट्री और डे-एंड-नाइट इंटीरियर रियरव्यू मिरर भी मिलता है। इसमें पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए ड्राइवर एयरबैग, ABS और ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम जैसे फीचर्स मिलते हैं।

परफॉरमेंस और रेंज

Vinfast Minio Green में 14.7 kWh बैटरी पैक दिया जा सकता है। इसमें इलेक्ट्रिक मोटर 20 kW होगी, जो 27 PS की पावर और 65 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करेगा। Minio Green की टॉप स्पीड 80 किमी/घंटा है। NEDC मानकों के अनुसार, रेंज 170 किमी है। EV 12 kW तक की चार्जिंग को सपोर्ट करती है।

ओला की फ्यूचरिस्टिक इलेक्ट्रिक बाइक डायमंडहेड दिखी पहली झलक, 15 अगस्त को हो सकती है लॉन्च

Ola इलेक्ट्रिक जल्द ही Diamondhead इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल लॉन्च करने की तैयारी में है। हाल ही में इसका टीजर जारी किया गया है जिसमें टेस्टिंग मॉडल की झलक देखने को मिली है। इस बाइक को स्वतंत्रता दिवस पर शोकेस किया जाएगा। इसका डिजाइन फ्यूचरिस्टिक है और इसमें हीरे के आकार की फेयरिंग दी गई है। कीमत 4.5 लाख रुपये के आसपास हो सकती है। यह Ultraviolette F77 को टक्कर देगी।

नई दिल्ली। Ola Electric ने सोशल मीडिया पर अपनी आने वाली इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल Diamondhead का एक टीजर जारी किया है। इसमें इलेक्ट्रिक बाइक के वर्किंग प्रोटोटाइप की झलक देखने के लिए मिली है। यह पहली बार है कि जब इस बाइक को कॉन्सेप्ट के रूप में नहीं, बल्कि असली रूप में दिखाया गया है। आइए विस्तार में जानते हैं कि Ola Diamondhead को किन खास फीचर्स के साथ लेकर आया जा सकता है।

फ्यूचरिस्टिक डिजाइन स्टडी

Ola Diamondhead को अगस्त 2023 में फ्यूचरिस्टिक डिजाइन स्टडी के रूप में पेश किया गया था। हाल ही में इसका एक टीजर जारी किया गया है, जिसमें इसके टेस्टिंग मॉडल की झलक दिखाई गई है। कंपनी इसे 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस 2025 पर शोकेस करेगी। इसके साथ ही कंपनी कुछ प्रोडक्ट को लॉन्च भी कर सकती है।

Ola Diamondhead का डिजाइन

Ola Diamondhead को काफी ज्यादा फ्यूचरिस्टिक डिजाइन दिया गया है। इसमें हीरे के आकार की फेयरिंग, सामने की तरफ फैली हुई एक लगातार LED हेडलाइट पट्टी और क्लिप-ऑन हैंडलबार दिया गया है। यह कई मायनों में दो पहियों पर एक टेस्ला साइबरट्रक जैसी दिखती है।

अंडरपिनिंग्स और टेक्नोलॉजी

Ola Diamondhead इलेक्ट्रिक बाइक में ओवरसाइज्ड फ्रंट स्विंगआर्म दिया गया है, जो पारंपरिक फोर्क के बजाय एक हब-सेंटर स्टीयरिंग सिस्टम के इस्तेमाल का सुझाव देता है। इसमें फोर्क की तुलना में एक हब-सेंटर स्टीयरिंग सिस्टम को बेहतर स्थिरता और हैंडलिंग देने के लिए डिजाइन किया गया है। इसके दूसरी तरफ साधारण फोर्क-माउंटेड हैंडलबार की तरह सीधा स्टीयरिंग फील नहीं दे सकता है।

इसमें ज्यादा जटिल चटिल चलने वाले हिस्से भी दिए गए हैं, जिसकी वजह से यह काफी महंगी होने वाली है। इसका डिजाइन फ्यूचरिस्टिक और कूल दिखता है। इससे भी जरूरी बात यह है कि यह Diamondhead जैसी फ्यूचरिस्टिक दिखने वाली इलेक्ट्रिक बाइक पर बिल्कुल सही लगता है। उम्मीद है कि इसमें बेल्ट ड्राइव सिस्टम भी होगा, हालांकि चेन ड्राइव को अभी पूरी तरह से खारिज नहीं किया जा सकता है।

कितनी होगी कीमत?

Ola Diamondhead को प्रीमियम इलेक्ट्रिक स्पोर्ट्स बाइक सेगमेंट में लेकर आया जा सकता है, जिसकी वजह से यह सीधी तौर पर Ultraviolette F77 से मुकाबला करेगी। इसे करीब 4.5 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया जा सकता है।

2026 केटीएम 690 एंड्यूरो आर और 690 एसएमसी आर पेश; नए इंजन, इलेक्ट्रॉनिक्स और डिजाइन से लैस

KTM ने 690 Enduro R और 690 SMC R मोटरसाइकिलें पेश की हैं जिनमें नया इंजन इलेक्ट्रॉनिक्स एर्गोनॉमिक्स और स्टाइलिंग अपडेट हैं। 79hp पावर और 73Nm टॉर्क के साथ इनमें अपडेटेड TFT डिस्प्ले KTMconnect स्मार्टफोन पेयरिंग और कॉर्नरिंग ABS जैसे फीचर्स हैं। सितंबर 2025 में ग्लोबल लॉन्च की उम्मीद है भारत में लॉन्च की तारीख अभी अज्ञात है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। KTM ने अपनी दो मोटरसाइकिल 690 Enduro R और 690 SMC R को पेश किया है। यह दोनों ही बाइक को पूरी तरह से बदला हुआ इंजन, नए इलेक्ट्रॉनिक्स, अपडेटेड एर्गोनॉमिक्स और नए स्टाइलिंग के साथ लेकर आया गया है। इसके बाद भी यह अपनी अलग ऑफ-रोड और सुपरमोटो पहचान को बरकरार रखती है। आइए जानते हैं कि यह दोनों बाइक किन खास फीचर्स के साथ आने वाली है?

इंजन में हुआ बदलाव

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R को इंजन बदलाव के साथ लेकर आया गया है। इसके साथ ही क्रैंककेस, क्लच और स्टेटर कवर, ऑयल-डिलीवरी सिस्टम और फ्यूल पंप के डिजाइन में भी हल्के बदलाव किए गए हैं। इसमें अपडेटेड वाल्व टाइमिंग दी गई है। इससे इसने लेटेस्ट मानदंडों का पालन करते हुए 79hp की पावर और 73Nm का टॉर्क जनरेट करता है, जो पिछले मॉडल से 5hp ज्यादा है।

इसके साथ ही कंपन को कम करने के लिए रबर इंजन माउंट्स पेश किए गए हैं। इसमें से सरल इंटेक लेआउट के लिए सेकेंडरी एयर सिस्टम को हटा दिया गया है और ज्यादा कॉम्पैक्ट मफलर के साथ एग्जॉस्ट को फिर से तैयार किया गया है। इसमें नई 65-डिग्री ट्विस्ट ग्रिप के कारण थ्रॉटल रिएक्शन को तेज किया गया है।

अपडेटेड टेक्नोलॉजी

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R के लिए बड़ा अपडेट पुराने LCD डैश को एक 4.2-इंच के कलर TFT डिस्प्ले से बदल दिया गया है। इसमें KTMconnect स्मार्टफोन पेयरिंग, USB-C चार्जिंग, संगीत और कॉल कंट्रोल, और टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन जैसी सुविधाएं दी जाती है। इसमें नए बैकलिट स्विचगियर और एक डेडिकेटेड ABS-ऑफ बटन के साथ जोड़ा गया है।

राइडर एड्स में अब लीन-सेंसिटिव कॉर्नरिंग ABS और कॉर्नरिंग MTC मानक रूप से दिया गया है, जिसमें Enduro R में एक रैली मोड जोड़ा गया है, जो एडजस्टेबल ट्रैक्शन और मोटर-स्लिप रेगुलेशन देता है। SMC R को लॉन्च कंट्रोल, 5-स्टेज एंटी-व्हीली, स्लिप एडजस्टर और सुपरमोटो-विशिष्ट ABS सेटिंग्स के साथ एक ट्रैक मोड के साथ लेकर आया गया है।

डिजाइन और चेसिस में बदलाव

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R में अब नई LED हेडलाइट, टेल-लाइट और इंडिकेटर दिया गया है। इसके चेसिस में बदलाव किया गया है और स्टील ट्रेलिस फ्रेम को पहले की तरह बरकरार रखा गया है। इसमें सस्पेंशन ट्यूनिंग अपग्रेड किया गया है।

Enduro R को अपग्रेड बॉडीवर्क, LED लाइटिंग, नए इन-मोल्ड ग्राफिक्स के साथ लेकर आया गया है। इसमें ट्रांसफर्ड सेंटर-स्टैंड माउंट दिया गया है। दोनों WP सस्पेंशन और एक स्टील ट्रेलिस फ्रेम का इस्तेमाल पहले की तरह जारी रखा गया है।

कम होगी लॉन्च?

नई KTM 690 Enduro R और 690 SMC R को सितंबर 2025 में ग्लोबल लेवल पर लॉन्च किया जाएगा। अभी तक इन दोनों के भारत में लॉन्च की तारीख और कीमत की जानकारी सामने नहीं आई है।

नई येज्दी रोडस्टर पुरानी के मुकाबले कितनी बदली?

येज्दी ने हाल ही में 2025 Roadster को नए फीचर्स और डिजाइन बदलावों के साथ लॉन्च किया है। इसमें कटा हुआ रियर फेंडर और स्विंगआर्म-माउंटेड नंबर प्लेट है। नई स्प्लिट-सीट राइडर की पसंद के अनुसार हटाई जा सकती है। टायर को 130/80-17 से बढ़ाकर 150/70-17 किया गया है। बाइक में 34cc लिक्विड-कूल्ड इंजन है जो 29.1hp की पावर देता है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये से शुरू होती है।

नई दिल्ली। येज्दी ने हाल ही में 2025 Roadster को लॉन्च किया है। इसे कई नए फीचर्स के साथ लेकर आया गया है, इसके साथ ही इसके डिजाइन में भी कई बदलाव किए गए हैं। इसके डिजाइन में बदलाव की वजह से इसकी स्टाइल को बदलते हैं और इसके चलाने के तरीके को भी बदल सकते हैं। हम यहां पर आपको विस्तार में बता रहे हैं कि नई Yezdi Roadster पुरानी के मुकाबले कितनी बदली है?

नई Yezdi Roadster में एक कटा हुआ रियर फेंडर और एक स्विंगआर्म-माउंटेड नंबर प्लेट होल्डर दिया गया है, जो इसे एक बोल्ड और ज्यादा बॉबर इंसपायर लुक देने का काम करता है। इसमें नई मॉड्यूलर स्प्लिट-सीट दी गई है, जो राइडर के पसंद के आधार पर पीछे की सीट को पूरी तरह से हटाने की अनुमति देती है। इसके सामने की तरफ बदलाव काफी कम है, लेकिन में नया हैंडलबार और एडजस्टेबल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है। इसमें हैंडलबार, क्रैश गार्ड, वाइजर और टूरिंग गियर सहित 20 से ज्यादा एक्सेसरीज के कई कॉम्बिनेशन के साथ छह फैक्ट्री कस्टम किट भी पेश किया जा रहा है।

2025 Yezdi Roadster का चेसिस

बदलावों में मजबूत फ्रेम और एक चौड़ा रियर टायर शामिल है। इसमें सबसे बड़ा बदलाव पीछे की तरफ देखने के लिए मिलता है। इसमें टायर अब 130/80-17 से बढ़कर 150/70-17 हो गया है, जिससे बाइक को एक मजबूत लुक और एक बड़ा संपर्क क्षेत्र मिलता है जो ट्रैक्शन और कॉर्नरिंग स्थिरता में सुधार करेगा। इसके सामने का टायर 100/90-18 यूनिट ही रहता है।

नई Yezdi Roadster में पहले की तरह ही डबल-क्रैडल फ्रेम का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन इसे अपडेटेड मैन्युफैक्चरिंग के जरिए मजबूत किया गया है। इसमें नया सबफ्रेम दिया गया है। इसका सस्पेंशन और ब्रेक में काफी हद पहले जैसा ही है, हालांकि इसमें अपग्रेड स्प्रिंग और डैम्पिंग रेट दिया गया है।

बाकी बदलावों की बात करें तो ऊंचाई में 5 मिमी की बढ़ोतरी करके 795 मिमी हो गई है, जबकि कर्ब वजन 183.4 किलोग्राम हो गया है। Yezdi फ्यूल के बिना कर्ब वजन बताती है, इसलिए 12.5-लीटर टैंक 90 प्रतिशत तक भरा होने पर, वास्तविक आंकड़ा 190-192 किलोग्राम के करीब होना चाहिए।

2025 Yezdi Roadster का इंजन

नई Roadster में संशोधित गियरिंग के साथ Alpha2 इंजन मिलता है। इसमें 34cc लिक्विड-कूल्ड सिंगल-सिलेंडर Alpha2 का इस्तेमाल किया गया है, जो 29.1hp की पावर और 29.6Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन प्रत्येक मॉडल के लिए अलग तरह से ट्यून किया गया है, इसलिए हम उम्मीद कर सकते हैं कि नई Roadster का अपने सिबलिंग्स से एक अलग कैरेक्टर होगा। इसमें रियर स्प्रोकेट लगाकर फाइनल ड्राइव रेशियो को भी अपग्रेड किया गया है, जिससे कम स्पीड पर राइडबिलिटी में सुधार देखने के लिए मिल सकता है।

2025 Yezdi Roadster की कीमत

नई Roadster की कीमत पुराने की तुलना में 4,000 रुपये महंगी है। नई Yezdi Roadster की एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये से शुरू होकर 2.26 लाख रुपये तक पहुंचती है। यह कीमतें वेरिएंट और कलर ऑप्शन के ऊपर निर्भर करती है। इसे दो वेरिएंट में पेश किया गया है, जो Standard और Premium है। Standard वेरिएंट को चार कलर ऑप्शन, जबकि Premium को एक सिंगल, ब्लैक-आउट पेंट स्कीम लेकर आया गया है। Premium में एक फ्लैट हैंडलबार, ब्लैक-आउट रिम और एक चिकनी असेंबली में इंटीग्रेटेड टेल-लाइट/टर्न-इंडिकेटर यूनिट दी गई है।

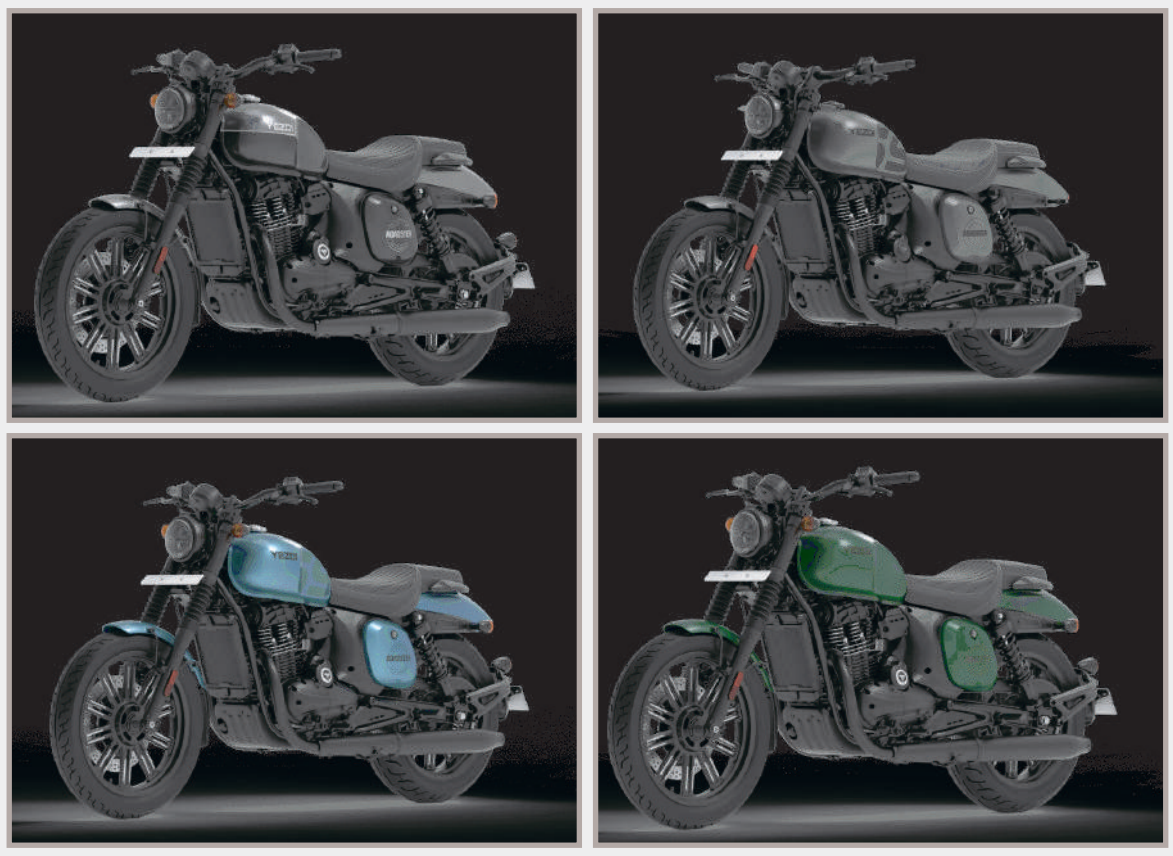

12वीं के बाद आईपीएमएटी, आईआईटी(जेईई) और नीट युजी से बेहतर क्यों है?

विजय गर्ग

12वीं के बाद सही करियर चुनना किसी भी छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण और चुनिंदा कदमों में से एक है। पहले, इंजीनियरिंग के लिए आईआईटी (जेईई एडवांस्ड के माध्यम से) और मेडिसिन के लिए मेडिकल कॉलेज (नीट के माध्यम से) दो प्रमुख रास्ते थे। हालाँकि, प्रबंधन के लिए एक अपेक्षाकृत नया रास्ता है—आईपीएमएटी, जो 12वीं कक्षा के तुरंत बाद प्रतिष्ठित भारतीय प्रबंधन संस्थानों (आईआईएम) के द्वार खोलता है।

इंटीग्रेटेड प्रोग्राम इन मैनेजमेंट एप्टीट्यूड टेस्ट (आईपीएमएटी), आईआईएम इंदौर, आईआईएम रोहतक, आईआईएम रांची, आईआईएम जम्मू और आईआईएम बोधगया के पाँच वर्षीय दोहरे डिग्री कोर्स (बीबीऐ+ एमबीऐ) के लिए प्रवेश परीक्षा है। हालाँकि आईआईटी और नीट की प्रतिष्ठा बहुत ऊँची है, आईपीएमएटी धीरे-धीरे उन छात्रों के लिए एक मज़बूत विकल्प बनता जा रहा है जो बारहवीं पास करने के बाद प्रबंधन, नेतृत्व और व्यवसाय पर केंद्रित उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। लेकिन इतने सारे प्रतिभाशाली छात्र अब आईआईटी-जेईई और नीट की बजाय आईपीएमएटी को क्यों चुन रहे हैं? आइए इसके कारणों और तुलनाओं को समझें, और फिर स्वयं निर्णय लें।

आईआईएम में शीघ्र प्रवेशः एक बढ़त

एक व्यापक, अधिक लचीला पाठ्यक्रम

मानसिक स्वास्थ्य और तैयारी का दबाव

कैरियर के परिणाम और निवेश पर लाभ

कॉर्पोरेट एक्सपोजर

समग्र कौशल विकास

समावेशी और सभी धाराओं के लिए खुला

बहुमुखी प्रतिभा और बैकअप योजनाएँ

संतुलित कैंपस जीवन और कम शैक्षणिक बोझ

निष्कर्षः एक बड़ी दुविधा

आईआईएम में शीघ्र प्रवेशः एक बढ़त

आईपीएम कार्यक्रम एक क्रांतिकारी कदम है, क्योंकि यह अभ्यर्थियों को 12वीं कक्षा के बाद ही प्रतिष्ठित आईआईएम में प्रवेश का अवसर प्रदान करता है।

मार्ग	प्रतिष्ठित संस्थान में प्रवेश
अवधि	विशेषज्ञता
आईपीएमएटी आईआईएम में सीधा प्रवेश	5 वर्ष (बीबीए+एमबीए) प्रबंध
आईआईटी-जेईई आईआईटी में प्रवेश	12वीं के बाद 4 वर्ष (बी.टेक) इंजीनियरिंग
नीट में प्रवेश	12वीं के बाद मेडिकल कॉलेज 5.5 वर्ष (एमबीबीएस)
विज्ञान	

आईआईएम में दाखिले के लिए आपको ग्रेजुएशन के 3-4 साल की कठिन पढ़ाई और उसके बाद कैट परीक्षा पास करने की ज़रूरत नहीं है। इसकी तुलना आईआईटीयन से करें जो बी.टेक की पढ़ाई के लिए 4 साल लगाते हैं और आगे की पढ़ाई के लिए अक्सर कैट या जीआरई परीक्षा देते हैं। दूसरी ओर, मेडिकल की पढ़ाई के इच्छुक छात्र एमबीबीएस में 5.5 साल लगाते हैं और उसके बाद पीजी परीक्षाओं की तैयारी में सालों लगाते हैं।

दूसरी ओर, आईपीएमएटी आपको 5 वर्षों में बीबीए + एमबीए की डिग्री दिला देगा; आप 22 वर्ष की आयु तक अपना कॉर्पोरेट कैरियर शुरू कर सकते हैं और उद्योग अनुभव, इंटर्नशिप और प्लेसमेंट ऑफर के साथ आईआईएम से स्नातक हो सकते हैं।

एक व्यापक, अधिक लचीला पाठ्यक्रम

आईपीएम करने का एक सबसे बड़ा फ़ायदा लिबरल आर्ट्स और मैनेजमेंट की नींव रखना है। पहले तीन वर्षों में मनोविज्ञान, साहित्य, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, गणित और सांख्यिकी के पाठ्यक्रम शामिल हैं। यह संचार, आलोचनात्मक सोच और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के साथ-साथ नेतृत्व कौशल विकसित करने में मदद करता है। अंतिम दो वर्ष एमबीए चरण के होंगे, जिसमें मार्केटिंग, वित्त, परामर्श, विश्लेषण आदि में विशेषज्ञता प्रदान की जाएगी।

इसके विपरीत, आईआईटी मुख्य रूप से तकनीकी विषयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और एमबीबीएस अत्यधिक डोमेन-विशिष्ट है।

मानसिक स्वास्थ्य और तैयारी का दबाव

उम्मीदवारों में तनाव और बर्नआउट सबसे आम कारक हैं। आईआईटी-जेईई की तैयारी अक्सर 9वीं या 10वीं कक्षा से शुरू हो जाती है, और छात्र कोचिंग संस्थानों में 3-4 साल बिताते हैं। लंबे अध्ययन के घंटे और अत्यधिक दबाव उम्मीदवारों के मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डालते हैं। नीट के उम्मीदवार भी सीट पक्की करने के लिए इतने दबाव से गुजरते हैं, जिससे चिंता बढ़ जाती है। इसकी तुलना में, आईपीएमएटी की तैयारी उचित रणनीति के साथ 6-10 महीनों में की जा सकती है, इसमें तार्किक तर्क, मौखिक क्षमता और गणित (ज्यादातर कक्षा 10-11) पर ज़ोर दिया जाता है, और यह कम विषाक्त प्रतिस्पर्धा और अधिक तर्कसंगत अपेक्षाएँ प्रदान करता है।

कैरियर के परिणाम और निवेश पर लाभ (आरओआई)

अधिकांश छात्रों का मुख्य लक्ष्य उच्च वेतन वाली नौकरी, संतुष्टिदायक कैरियर और एक व्यवस्थित जीवन है।

हालाँकि आईआईटीयन उच्च पैकेज के साथ प्रवेश पाते हैं, लेकिन यह आमतौर पर सीएस/आईटी शाखाओं तक ही सीमित रहता है। सिविल, मैकेनिकल और बायोटेक जैसी अन्य शाखाएँ अक्सर 6-8 लाख रुपये या उससे भी कम से शुरू होती हैं। मेडिकल साइंस के छात्र 6 से 8 साल पढ़ाई करते हैं और 5-8 लाख रुपये प्रति वर्ष से शुरुआत करते हैं, जब तक कि वे किसी और विशेषज्ञता में महारत हासिल नहीं कर लेते। दूसरी ओर, आईपीएमएटी स्नातक बीसीजी, मैकिन्से, गोल्डमैन सैक्स, जेपी मॉर्गन और गूगल जैसी शीर्ष-भुगतान वाली फर्मों में प्रवेश पा सकते हैं।

कॉर्पोरेट एक्सपोजर

प्रबंधन की पढ़ाई एक उद्योग-उन्मुख क्षेत्र चुनने जैसा है। आईपीएमएटी के छात्रों को सामाजिक इंटर्नशिप, व्यावसायिक इंटर्नशिप, ग्रीष्मकालीन प्लेसमेंट और लाइव प्रोजेक्ट्स का अनुभव प्राप्त होता है। इसके अलावा, आईपीएमएटी के छात्रों को उद्योग जगत के अग्रणी लोगों द्वारा मार्गदर्शन मिलता है, वे सम्मेलनों में भाग लेते हैं और विभिन्न प्रबंधन प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। यह कॉर्पोरेट अनुभव सुनिश्चित करता है कि उन्हें वास्तविक दुनिया की कार्यप्रणाली का ज्ञान हो, उन्हें मज़बूत नेटवर्किंग मिले और वे भविष्य के लिए तैयार प्रबंधक बनें।

समग्र कौशल विकास

आईआईटीयन अद्भुत समस्या समाधानकर्ता होते हैं, और डॉक्टर जीवन रक्षक। लेकिन आईपीएमएटी स्नातकों को ऐसे प्रबंधक और नेता बनने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है जो प्रभावी ढंग से संवाद करते हैं, दबाव में निर्णय लेते हैं, टीमों में काम करते हैं, गंभीरता से सोचते हैं और तेज़ी से अनुकूलन करते हैं। जहाँ इंजीनियरों और डॉक्टरों को ये कौशल जीवन में बाद में एमबीए या अन्य नेतृत्व कार्यक्रमों में ही मिलते हैं, वहीं आईपीएमएटी के छात्र इन्हें जल्दी और व्यावहारिक रूप से सीख लेते हैं।

समावेशी और सभी धाराओं के लिए खुला

आईपीएमएटी सभी स्ट्रीम के लिए खुला है: वाणिज्य, मानविकी और विज्ञान। गणित न जानने वाले उम्मीदवार भी आईआईएम और आईपीएमएटी स्वीकार करने वाले अन्य संस्थानों में आवेदन कर सकते हैं। यह लाखों प्रतिभाशाली छात्रों के लिए द्वार खोलता है, जिनका विज्ञान में रुझान भले ही न हो, लेकिन उनमें तर्क और संचार क्षमताएँ मज़बूत होती हैं। आईआईटी-जेईई के लिए पीसीएम अनिवार्य है, और नीट के लिए पीसीबी अनिवार्य है।

बहुमुखी प्रतिभा और बैकअप योजनाएँ

आईपीएमएटी का एक बड़ा फायदा यह है कि इसका पाठ्यक्रम कई अन्य प्रवेश परीक्षाओं जैसे सीयूईटी (केंद्रीय विश्वविद्यालय), क्राइस्ट यूनिवर्सिटी बीबीए, एनपीएटी (नरसी मोनजी), एक्सयूबी (जेवियर्स), एसईटी (सिम्बायोसिस), आदि के साथ ओवरलैप होता है। इसलिए, अगर कोई छात्र आईपीएमएटी में सफल नहीं भी होता है, तो भी उसकी तैयारी बेकार नहीं जाएगी। दूसरी ओर, जेईई और नीट बेहद विशिष्ट परीक्षाएँ हैं, और इनमें फेल होने का मतलब है शुरुआत से शुरुआत करना या कॉलेज की गुणवत्ता से समझौता करना।

संतुलित कैंपस जीवन और कम शैक्षणिक बोझ

अगर आप किसी भी आईआईटीयन या एमबीबीएस छात्र से पूछें, तो पाएंगे कि कैंपस का जीवन बहुत व्यस्त और मानसिक रूप से थका देने वाला होता है। पढ़ाई की मात्रा और गहराई अक्सर छात्रों को थका देती है। हालाँकि, आईआईएम कैंपस में सहकर्मी से सहकर्मी सीखने, केस चर्चाओं, प्रस्तुतियों और वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। विभिन्न क्लबों और अंतर्राष्ट्रीय विनिमय कार्यक्रमों के साथ-साथ नेतृत्व शिखर सम्मेलनों के साथ एक सक्रिय कैंपस जीवन।

निष्कर्षः एक बड़ी दुविधा

कोई भी रास्ता श्रेष्ठ या निम्न नहीं होता; हर रास्ता अपनी चुनौतियों, पुरस्कारों और दर्शनों के साथ आता है। असली सवाल यह है कि आप क्या करना चाहते हैं? आईपीएमएटी बनाम आईआईटी बनाम नीट में से चुनना अब प्रतिष्ठा का सवाल नहीं रह गया है; बल्कि यह व्यक्तिगत लक्ष्यों, मानसिक स्वास्थ्य और करियर विकल्पों का सवाल है।

यदि आप व्यवसाय में एक लचीला, उच्च वेतन वाला और नेतृत्व-उन्मुख कैरियर चाहते हैं, तो आईपीएमएटी पर गंभीरता से विचार करना उचित है।

यदि आप विज्ञान, नवाचार या जीवन बचाने के प्रति जुनूनी हैं, तो आईआईटी या एमबीबीएस अभी भी आपका रास्ता हो सकता है।

लेकिन यदि आप आईआईएम में शीघ्र प्रवेश, कम तनाव, कौशल निर्माण और शीर्ष कॉर्पोरेट अनुभव की तलाश में हैं, तो आईपीएमएटी आज भारत में सबसे कम आंकी गई परीक्षाओं में से एक है।

कुछ लोग नींद में क्यों सोते हैं या नींद में बात करते हैं?

विजय गर्ग

स्लीपवॉकिंग (सोमनामबुलिज्म) और स्लीप टॉकिंग (सोमनिलोकी) दोनों को पैरासोमियास के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो नींद के दौरान होने वाले असामान्य व्यवहार हैं। हालांकि इन व्यवहारों के सटीक कारणों को पूरी तरह से समझा नहीं गया है, आनुवंशिक और पर्यावरणीय कारकों का एक संयोजन इसका कारण माना जाता है। यहां प्रमुख कारकों का टूटना शामिल है: 1. | आनुवंशिकी: स्लीपवॉकिंग और स्लीप टॉकिंग दोनों के लिए एक मजबूत आनुवंशिक घटक है। यदि आपके माता-पिता में से एक या दोनों का इन व्यवहारों का इतिहास है, तो आप उन्हें स्वयं अनुभव करने की अधिक संभावना रखते हैं। 1. | स्लीप-वेक संक्रमण: ये व्यवहार अक्सर तब होते हैं जब नींद के चरणों के बीच सामान्य संक्रमण में व्यवधान होता है।

स्लीपवॉकिंग आमतौर पर नींद के गहरे, गैर-आरईएम (एनआरईएम) चरण के दौरान होता है, विशेष रूप से रात के पहले भाग में। इस अवस्था के दौरान, मस्तिष्क मिश्रित अवस्था में होता है - आंशिक रूप से जटिल क्रियाओं को करने के लिए पर्याप्त जागृत होता है, लेकिन पूरी तरह से सचेत नहीं होता है। नींद की बात नींद के किसी भी चरण के दौरान हो सकती है, लेकिन यह अक्सर NREM नींद या REM नींद के हल्के चरणों से जुड़ा होता है, जहां मस्तिष्क अधिक सक्रिय होता है। आरईएम नींद में, यह सपने के भाषण की "मोटर सफलता" हो सकती है, जहां एक सपने में बोले गए शब्द जोर से बोले जाते हैं। 3. | आम ट्रिगर: नींद की कमी: पर्याप्त नींद नहीं लेना स्लीपवॉकिंग और स्लीप टॉकिंग दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण ट्रिगर है।

तनाव और चिंता: तनाव, चिंता या भावनात्मक संकट के उच्च स्तर नींद के पैटर्न को बाधित कर सकते हैं और इन व्यवहारों को जन्म दे सकते हैं।

बीमारी और बुखार: बीमार होने या बुखार होने से नींद-जागने के चक्र में व्यवधान पैदा हो सकता है, जिससे परसोमियास की संभावना बढ़ जाती है।

शराब और कुछ दवाएं: शराब, शामक और कुछ एंटीडिप्रेसेंट का उपयोग नींद में हस्तक्षेप कर सकता है और स्लीपवॉकिंग या बात करने के एपिसोड को ट्रिगर कर सकता है।

अन्य नींद विकार: ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया, नाइट टेरर और बेचैन लेग्स सिंड्रोम जैसी स्थितियां भी स्लीपवॉकिंग और स्लीप टॉकिंग से जुड़ी हो सकती हैं। 4. | उम्र: दोनों स्लीपवॉकिंग और स्लीप टॉकिंग बच्चों में बहुत अधिक आम हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि बच्चे गहरी NREM नींद में अधिक समय बिताते हैं, वह चरण जहां आमतौर पर स्लीपवॉकिंग होता है। अधिकांश बच्चे बड़े होने पर इन व्यवहारों को आगे बढ़ाते हैं। मस्तिष्क में क्या हो रहा है?

एक सामान्य नींद चक्र में, आपके सपनों को पूरा करने से रोकने के लिए REM नींद के दौरान शरीर की मांसपेशियों को अनिवार्य रूप से लकवा मार जाता है। स्लीपवॉकिंग और बात करने के मामलों में, मांसपेशियों की गति को नियंत्रित करने या नींद के चरणों का समन्वय करने के लिए जिम्मेदार मस्तिष्क के कुछ हिस्सों में खराबी हो सकती है। यह शारीरिक और मौखिक क्रियाओं को होने की अनुमति देता है जबकि व्यक्ति पूरी तरह से सचेत नहीं होता है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अधिकांश लोगों के लिए, नींद की बात करना और कभी-कभी नींद आना चिंता का कारण नहीं है। हालांकि, यदि एपिसोड लगातार होते हैं, विघटनकारी होते हैं, या चोट का खतरा पैदा करते हैं, तो किसी भी अंतर्निहित चिकित्सा स्थितियों से इंकार करने के लिए डॉक्टर या नींद विशेषज्ञ से परामर्श करना एक अच्छा विचार है।

स्वतंत्रता के बाद से भारत में कंप्यूटर विज्ञान की यात्रा

विजय गर्ग

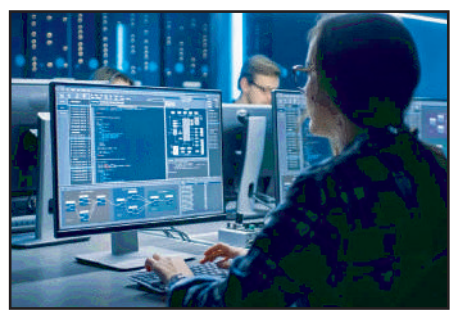

स्वतंत्रता के बाद से भारत में कंप्यूटर विज्ञान की यात्रा क्रमिक लेकिन निर्धारित प्रगति की एक आकर्षक कहानी है, जो अकादमिक अनुसंधान के नवजात क्षेत्र से सूचना प्रौद्योगिकी के वैश्विक पावरहाउस में बदल जाती है। इस विकास को मोटे तौर पर कई प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है, प्रत्येक को अलग-अलग तकनीकी, शैक्षणिक और सरकारी विकास द्वारा चिह्नित किया जाता है। प्रारंभिक वर्ष: 1950 से 1970 तक

पायनियरिंग शुरुआत: कंप्यूटर विज्ञान की नींव 1950 के दशक के मध्य में रखी गई थी। कलकत्ता में भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आईएसआई) ने 1956 में भारत का पहला कंप्यूटर, एचईसी -2 एम का अधिग्रहण किया। यह एक महत्वपूर्ण कदम था, क्योंकि इसने पहली बार देश में कम्प्यूटेशनल शक्ति की शुरुआत की, मुख्य रूप से शैक्षणिक अनुसंधान और आर्थिक नियोजन के लिए।

स्वदेशी प्रयास: मुंबई में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टीआईएफआर) ने भारत के पहले स्वदेशी कंप्यूटर, टीआईएफआरएसी को डिजाइन और निर्माण करके एक महत्वपूर्ण कदम उठाया, जो 1960 के दशक की शुरुआत में चालू हो गया। इसने प्रौद्योगिकी को सक्रिय रूप से अपने विकास में संलग्न करने के लिए आयात करने से एक बदलाव को चिह्नित किया।

अकादमिक फाउंडेशन: 1950 और 60 के दशक में स्थापित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। IIT कानपुर एक ट्रेलब्लेजर था, जो 1963 में कंप्यूटर से संबंधित पाठ्यक्रम शुरू कर रहा था और अंततः कंप्यूटर विज्ञान में भारत का पहला स्नातक (M.Tech।) और बाद में स्नातक (B.Tech।) कार्यक्रम शुरू कर रहा था। ये संस्थान कंप्यूटर वैज्ञानिकों की अगली पीढ़ी के लिए प्रजनन आधार बन गए।

सरकारी हस्तक्षेप: सरकार ने राष्ट्रीय विकास के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स और कंप्यूटर के महत्व को मान्यता दी। इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग (DoE) की स्थापना 1970 में इस क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने और विनियमित करने के लिए की गई थी। इस अवधि के दौरान, इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड जैसी सरकारी सहायक कंपनियों के साथ, आत्मनिर्भरता पर ध्यान केंद्रित किया गया था। (ECIL) घरेलू रूप से निर्मित घटकों का उपयोग करके कंप्यूटर को डिजाइन और बाजार में लाने के लिए। टर्निंग प्वाइंट: 1980 के दशक

पॉलिसी शिफ्ट: 1980 के दशक में महत्वपूर्ण नीतिगत बदलाव की अवधि थी। 80 के दशक के मध्य में सरकार की नई कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर नीतियों ने आयात को उदार बना दिया और सॉफ्टवेयर विकास और निर्यात के लिए प्रोत्साहन की पेशकश की। इसने निजी क्षेत्र के लिए अधिक अनुकूल वातावरण बनाया।

सॉफ्टवेयर उद्योग का उदय: इस अवधि में एक नयापन सॉफ्टवेयर उद्योग का उदय हुआ। भारतीय कंपनियों ने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों के लिए सॉफ्टवेयर विकसित करने के लिए अपने कुशल कार्यबल का लाभ उठाना शुरू किया। उपग्रह संचार लिंक के साथ सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी पार्क (एसटीपी) की स्थापना ने इस वृद्धि को सुगम बनाया, जिससे भारतीय फर्मों को विदेशों में ग्राहकों के लिए परियोजनाओं पर सीधे काम करने की अनुमति मिली।

सुपरकंप्यूटिंग महत्वाकांक्षाएं: भारत ने अपने स्वयं के सुपर कंप्यूटर बनाने के लिए एक महत्वाकांक्षी यात्रा शुरू की। सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (C-DAC) 1988 में स्थापित किया गया था, और इसके प्रयासों का समापन 1991 में PARAM 8000 के निर्माण में हुआ, जो भारत का पहला सुपर कंप्यूटर था। यह एक प्रमुख मील का पत्थर था, जो उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग में भारत की क्षमता का प्रदर्शन करता था। आईटी बूम एंड ग्लोबल इंटीग्रेशन: 1990 से 2000 तक

उदारीकरण और वैश्वीकरण: 1991 के आर्थिक उदारीकरण ने भारत की अर्थव्यवस्था को दुनिया के लिए खोल दिया। इसने विश्व स्तर पर आईटी सेवाओं की बढ़ती मांग के साथ मिलकर भारतीय आईटी क्षेत्र में अभूतपूर्व उछाल ला दिया।

Y2K अवसर: ₹Y2K बग₹ ने भारतीय सॉफ्टवेयर कंपनियों के लिए एक बड़ा अवसर प्रदान किया। वे विरासत प्रणालियों को अपडेट करने और ठीक करने के अपार कार्य को संभालने के लिए अच्छी तरह से तैनात थे, जिससे उन्हें विश्वसनीयता और गुणवत्ता के लिए प्रतिष्ठा बनाने में मदद मिली।

₹भारत की सिलिकॉन वैली₹: बैंगलोर (अब बेंगलुरु) और हैदराबाद जैसे शहर प्रमुख आईटी हब बन गए, जिससे ₹सिलिकॉन वैली ऑफ इंडिया₹ का खिताब मिला। इससे बहुराष्ट्रीय निगमों, भारतीय आईटी सेवाओं के दिग्गजों और एक संपन्न स्टार्टअप संस्कृति के एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का विकास हुआ।

बड़े पैमाने पर कौशल विकास: आईटी पेशेवरों की मांग के कारण इंजीनियरिंग कॉलेजों और निजी प्रशिक्षण संस्थानों का प्रसार हुआ। कंप्यूटर विज्ञान तकनीकी रूप से कुशल स्नातकों के एक विशाल पूल का उत्पादन करते हुए, अध्ययन के सबसे अधिक मांग वाले क्षेत्रों में से एक बन गया।

प्रारंभिक इंटरनेट दत्तक ग्रहण: 1990 के दशक के उत्तरार्ध में भारत में इंटरनेट युग की शुरुआत हुई। 1998 में सरकार की नई इंटरनेट सेवा प्रदाता नीति ने बाजार को खोल दिया, जिससे व्यापक इंटरनेट एक्सेस और ई-कॉमर्स और अन्य डिजिटल सेवाओं का विकास हुआ। आधुनिक युग: 2010 से वर्तमान तक

डिजिटल इंडिया और ई-गवर्नेंस: सरकार ने सार्वजनिक सेवाओं और शासन को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना और डिजिटल इंडिया कार्यक्रम जैसी पहल शुरू की। इससे बड़े पैमाने पर डिजिटल बुनियादी ढांचे और आधार, यूपीआई और विभिन्न सरकारी पोर्टलों जैसी सेवाओं का विकास हुआ है।

अनुसंधान और नवाचार पर ध्यान दें: जबकि भारत आईटी सेवाओं में अग्रणी रहा है, अनुसंधान और विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। सरकार के राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM) ने सुपर कंप्यूटर की एक नई पीढ़ी के स्वदेशी विकास का नेतृत्व किया है।

स्टार्टअप क्रांति: भारत में गेंडा और एक जीवंत स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का उदय इस अवधि की एक परिभाषित विशेषता है। भारतीय उद्यमी अब फिनटेक से ई-कॉमर्स और एआई तक विभिन्न क्षेत्रों में अभिनव उत्पादों और सेवाओं का निर्माण कर रहे हैं।

उभरती हुई प्रौद्योगिकियां: भारतीय कंप्यूटर वैज्ञानिक अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन, साइबर सुरक्षा और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान और विकास में सक्रिय रूप से शामिल हैं, दोनों शिक्षा और उद्योग वैश्विक ज्ञान आधार में योगदान करते हैं। स्वतंत्रता के बाद से भारत में कंप्यूटर विज्ञान की यात्रा अपने शुरुआती अग्रदूतों, सरकार के रणनीतिक समर्थन और अपने लोगों की सरासर प्रतिभा और समर्पण के दृष्टिकोण के लिए एक वसीयतनामा है। शैक्षणिक संस्थानों में मुट्ठी भर मेनफ्रेम से, क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का एक आधारशिला बन गया है और वैश्विक तकनीकी परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है।

स्वतंत्रता के बाद से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के साथ भारत की यात्रा

विजय गर्ग

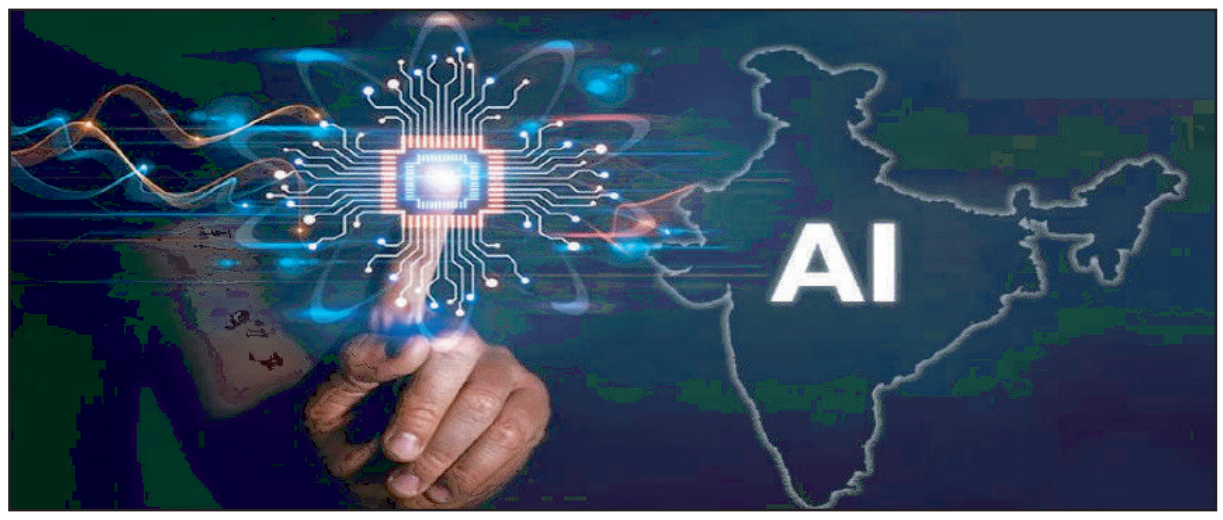

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के साथ भारत की यात्रा अपनी स्वतंत्रता के बाद से क्रमिक विकास, मूलभूत अनुसंधान और, हाल ही में, सरकारी नीति और एक जीवंत स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा संचालित एक तेजी से त्वरण की कहानी रही है। जबकि देश शुरुआती एआई अनुसंधान में सबसे आगे नहीं था, इसने रणनीतिक रूप से सॉफ्टवेयर विकास में अपनी ताकत और वैश्विक एआई परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाने के लिए एक बड़ी प्रतिभा पूल का लाभ उठाया है। शुरुआती दिन: नींव रखना (1960s-1990s)

अकादमिक शुरुआत: भारत में एआई के लिए आधार 1960 और 70 के दशक में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर और भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बैंगलोर जैसे प्रमुख संस्थानों में रखा गया था। इन संस्थानों ने कंप्यूटर विज्ञान कार्यक्रमों को शुरू करना शुरू किया और बाद में, एआई और पैटर्न मान्यता पर समर्पित पाठ्यक्रम।

सरकार के नेतृत्व वाला शोध: भारत सरकार ने 1980 के दशक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग ने संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के समर्थन से 1986 में नॉलेज बेस्ड कंप्यूटर सिस्टम्स प्रोजेक्ट शुरू किया। इसने भारत के पहले प्रमुख एआई अनुसंधान कार्यक्रम को चिह्नित किया।

सुपरकंप्यूटिंग और सी-डैक: 1988 में सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सी-डैक) की स्थापना एक महत्वपूर्ण क्षण था। सुपरकंप्यूटिंग पर ध्यान केंद्रित करते हुए, सी-डैक के काम ने आवश्यक बुनियादी ढांचे और क्षमताओं को रखा जो बाद में उन्नत एआई अनुसंधान और विकास का समर्थन करेंगे। विकास चरण: आईटी सेवाओं से AI (2000s-2010s) तक

आईटी दिग्गज इसमें शामिल हों: 2000 के दशक में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), इंफोसिस और विप्रो जैसी भारत की प्रमुख आईटी कंपनियों से बढ़ती रुचि देखी गई। उन्होंने समर्पित एआई अनुसंधान और विकास में निवेश करना शुरू किया, शुरू में व्यापार प्रक्रिया स्वचालन के लिए और बाद में अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए।

₹डिजिटल इंडिया₹ और एआई: 2014 में ₹डिजिटल इंडिया₹ पहल का शुभारंभ एक प्रमुख उत्प्रेरक था। इसने एआई सहित उभरती प्रौद्योगिकियों के महत्व पर जोर दिया, और व्यापक एआई अपनाने के लिए आवश्यक डिजिटल बुनियादी ढांचे का निर्माण किया।

स्टार्टअप का उदय: 2010 के दशक में एआई-केंद्रित स्टार्टअप में उछाल देखा गया। बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे जैसे शहर एआई नवाचार के लिए महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरे, प्रतिभा और निवेश को आकर्षित किया।

आधुनिक क्रांति: एक राष्ट्रीय एआई रणनीति (2018-वर्तमान) पिछले कुछ वर्षों में हाइपर-त्वरण की अवधि रही है, भारत सरकार एआई विकास के लिए एक सक्रिय और रणनीतिक दृष्टिकोण ले रही है।

राष्ट्रीय एआई रणनीति: 2018 में, भारत सरकार ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए अपनी राष्ट्रीय रणनीति शुरू की। ₹एआई फॉर ऑल₹ शीर्षक वाली इस रिपोर्ट में स्वास्थ्य सेवा, कृषि, शिक्षा और स्मार्ट शहरों जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए सामाजिक और आर्थिक लाभों के लिए एआई का उपयोग करने की दृष्टि को रेखांकित किया गया है।

द इंडियाएआई मिशन: एक ऐतिहासिक पहल 2024 में India 10,300 करोड़ के महत्वपूर्ण परिव्यय के साथ IndiaAI मिशन की मंजूरी थी। यह मिशन सात प्रमुख स्तंभों के माध्यम से एक व्यापक एआई पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है:

इंडियाएआई इनोवेशन सेंटर: स्वदेशी मूलभूत मॉडल विकसित करने के लिए।

इंडियाएआई एप्लीकेशन डेवलपमेंट इनिशिएटिव: सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के लिए स्केलेबल एआई समाधानों को बढ़ावा देना।

AIKosh प्लेटफ़ॉर्म: डेटासेट और टूल के लिए एक एकीकृत हब।

IndiaAI गणना क्षमता: बड़ी संख्या में GPU के साथ एक स्केलेबल AI पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण।

IndiaAI स्टार्टअप फाइनेंसिंग: डीप-टेक AI स्टार्टअप्स को फंडिंग प्रदान करना।

IndiaAI FutureSkills: सभी स्तरों पर AI शिक्षा का विस्तार करना।

सुरक्षित और विश्वसनीय एआई: जिम्मेदार और नैतिक एआई विकास सुनिश्चित करने के लिए।

स्वदेशी एआई और ओपन सोर्स: भारत एआई विकास के लिए एक खुले स्रोत-पहले दृष्टिकोण का एक मजबूत प्रस्तावक रहा है। भाशिनी मंच जैसी पहल प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) मॉडल बनाने के लिए ओपन-सोर्स फ्रेमवर्क का लाभ उठा रही है जो भारत की 22 आधिकारिक भाषाओं और कई बोलियों का समर्थन करते हैं, जिससे एआई अधिक सुलभ और समावेशी बन जाता है।

वैश्विक मान्यता और प्रभाव: भारत को अपनी एआई प्रतिभा के लिए विश्व स्तर पर मान्यता दी गई है। स्टैनफोर्ड एआई इंडेक्स 2024 के अनुसार, एआई कौशल प्रवेश के लिए भारत दुनिया में पहले स्थान पर है। यह प्रतिभा पूल, सरकारी पहल और एक संपन्न स्टार्टअप दृश्य के साथ संयुक्त, भारत को एक प्रमुख एआई हब के रूप में पेश कर रहा है। अर्थव्यवस्था और समाज पर प्रभाव एआई क्रांति का भारत पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है, सकारात्मक और चुनौतीपूर्ण दोनों:

आर्थिक विकास: एआई को आने वाले वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण राशि जोड़ने की उम्मीद है। यह विनिर्माण, खुदरा और आईटी सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादकता और नवाचार को बढ़ावा दे रहा है।

सामाजिक अनुप्रयोग: एआई का उपयोग सामाजिक चुनौतियों को दूर करने के लिए किया जा रहा है, जैसे:

हेल्थकेयर: एआई-चालित निदान ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टर की कमी को दूर करने में मदद कर रहे हैं।

कृषि: एआई-आधारित मौसम की भविष्यवाणी का उपयोग करके सटीक खेती किसानों को अपनी पैदावार बढ़ाने में मदद कर रही है।

शिक्षा: एआई-संचालित प्लेटफॉर्म व्यक्तिगत शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जो शहरी-ग्रामीण डिजिटल विभाजन को कम करने में मदद करते हैं।

जॉब मार्केट व्यवधान: जबकि एआई नई नौकरियां पैदा कर रहा है, यह भी बदलने की उम्मीद है और संभावित रूप से मौजूदा भूमिकाओं की एक महत्वपूर्ण संख्या को विस्थापित करता है, विशेष रूप से वे जो दोहराव और कम कौशल हैं। इसके कारण एआई-संचालित भविष्य की तैयारी के लिए कार्यबल को अपस्किलिंग और रिस्किलिंग पर ध्यान केंद्रित किया गया है। अंत में, एआई के साथ भारत की यात्रा प्रारंभिक शैक्षणिक जिज्ञासा से लेकर एक ठोस राष्ट्रीय प्रयास तक विकसित हुई है। एक मजबूत प्रतिभा पूल, एक सहायक सरकार और एक गतिशील स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा ईंधन, भारत अब एआई क्रांति में सबसे आगे है, जिसका उद्देश्य समावेशी विकास और सामाजिक विकास के लिए इस परिवर्तनकारी तकनीक का लाभ उठाना है।

आज़ादी के 'जश्न' के साथ मिली विभाजन की 'त्रासदी'

प्रदीप कुमार वर्मा

भारत माता के कई वीर सपूतों की कुर्बानी के बाद 15 अगस्त सन 1947 को भारत देश विदेशी दासता की बेड़ियों से मुक्त हो गया। भारतीयों के लिए यह एक सुखद पल था लेकिन टीस यह रही कि भारतवर्ष को अपनी आजादी की कीमत एक नए देश पाकिस्तान के रूप में भारत भूमि का ₹बंटवारा₹ करके चुकानी पड़ी। ब्रिटिश हुकूमत ने भारतवर्ष को आजाद करने से पूर्व दो स्वतंत्र देश भारत और पाकिस्तान के रूप में बांट दिया। इसके बाद पाकिस्तान को संयुक्त राष्ट्र संघ में एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता मिल गई। भारत की भूमि का भारत और पाकिस्तान के रूप में दो देशों के बीच महज भूमि का बंटवारा ही नहीं हुआ, यह विभाजन एक ₹त्रासदी₹ लेकर आया। विभाजन के दौरान जब भारत और पाकिस्तान बने तो हिंदू बहुल इलाके भारत में और मुस्लिम बहुल इलाके पाकिस्तान में शामिल किए गए। इस दौरान आबादी की अदला-बदली हुई और बड़े पैमाने पर हिंदू- मुस्लिम दंगे हुए। जिसमें लाखों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी।

भारत की आजादी के 70 साल से अधिक कालखंड के बाद भी विभाजन की त्रासदी की टीस अभी भी भारतीयों के दिलों में नासूर की तरह जिंदा है। भारत और पाकिस्तान के बीच विभाजन की विभीषिका के अतीत पर गौर करें तो पता चलता है कि भारत सरकार के आवाहन पर अब देश भर में आजादी की तारीख 15 अगस्त से एक दिन पहले यानी ₹14 अगस्त₹ को विभाजन विभीषिका दिवस के रूप में याद किया जाता है। आज का दिन उन लोगों की स्मृति को पुनर्जीवित करने का दिन है जिन्होंने भारत की आजादी की बलि वेदी पर विभाजन के दौरान अपने प्राणों की आहुति दी।

यह सर्व विदित है कि भारत के ब्रिटिश शासकों ने हमेशा ही भारत में ₹फूट डालो और राज्य करो₹ की नीति का अनुसरण किया। अंग्रेजों की इसी नीति के कारण हिंदू और मुसलमान के बीच पहले अविश्वास की खाई पैदा हुई और वक्त के साथ यह खाई और अधिक चौड़ी और गहरी होती गई। नतीजतन आजादी के दौरान ही टू-नेशन थ्योरी का सिद्धांत कुछ लोगों के दिलों दिमाग पर चढ़कर बोलने लगा।

इस सिद्धांत का अंत भारत भूमि के बंटवारे के बाद पाकिस्तान के रूप में हुआ। स्वाधीनता संग्राम के दौरान हालात ऐसे बने कि कांग्रेस में शामिल कुछ मुस्लिम नेताओं ने यह आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी में ही मुसलमान के साथ समान व्यवहार नहीं होता तथा भारत में भी मुसलमान को हिंदुओं के बराबर अधिकार नहीं है। इसी क्रम में वर्ष 1906 में ढाका में बहुत से मुसलमान नेताओं ने मिलकर मुस्लिम लीग की स्थापना की। इन नेताओं का मानना था कि मुसलमानों को बहुसंख्यक हिन्दुओं से कम अधिकार उपलब्ध थे तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व करती थी। मुस्लिम लीग ने अलग-अलग समय पर अलग-अलग मांगें रखीं। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के तत्कालीन इतिहास के मुताबिक वर्ष 1930 में मुस्लिम लीग के सम्मेलन में प्रसिद्ध उर्दू कवि मुहम्मद इक़बाल ने एक भाषण में पहली बार मुसलमानों के लिए एक अलग राज्य की माँग उठाई। वर्ष 1935 में सिंध प्रांत की विधान सभा ने भी यही मांग उठाई।

इक़बाल और मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने मुहम्मद अली जिन्ना को इस मांग का समर्थन करने को कहा। इस समय तक जिन्ना हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्ष में लगते थे लेकिन धीरे-धीरे उन्होने आरोप लगाना शुरू कर दिया कि कांग्रेसी नेता मुसलमानों के हितों पर ध्यान नहीं दे रहे। पाकिस्तान बनने की कड़ी में एक अहम पड़ाव 23 मार्च 1940 को आया। इस दिन मुस्लिम लीग ने लाहौर में एक प्रस्ताव रखा, जिसे बाद में 'पाकिस्तान प्रस्ताव' के नाम से भी जाना गया। इसके तहत एक पूरी तरह आज़ाद मुस्लिम देश बनाए जाने का प्रस्ताव रखा गया। मुस्लिम लीग सम्मेलन में जिन्ना ने साफ़ तौर पर कहा कि वह दो अलग-अलग राष्ट्र चाहते हैं। महात्मा गाँधी और जिन्ना ने सितंबर 1944 में पाकिस्तान की मांग पर बातचीत की, पर ये वार्ता नाकाम रही. इस मुद्दे पर दोनों में गहरे मतभेद थे। जिन्ना को पाकिस्तान पहले चाहिए था और आज़ादी बाद में जबकि गाँधी का कहना था कि आज़ादी पहले मिलनी चाहिए।

वर्ष 1946 में मुस्लिम लीग ने कैबिनेट मिशन की योजना से खुद को अलग कर लिया और आंदोलन छेड़ दिया जिसके बाद देश भर में मारकाट शुरू हो गई। भारत के विभाजन की पृष्ठभूमि में हिंसा की पहली लहर कलकत्ता में 16 से 18 अगस्त के बीच शुरू हुई,जिसे 'ग्रेट कैलकटा किलिंग्स' के नाम से याद किया जाता है। इस घटना में करीब 4 हजार लोग मारे गए, हज़ारों घायल हुए और लगभग एक लाख लोग बेघर हुए। इस हिंसा की आग पूर्वी बंगाल के नोआखाली ज़िले और बिहार तक फैल गई। हिन्दू बहुमत वाले इलाके भारत में और मुस्लिम बहुमत वाले इलाके पाकिस्तान में शामिल किए गए। भारत के विभाजन के ढांचे को '3 जून प्लान' या माउण्टबैटन योजना का नाम दिया गया।

छिपकली: डर और भ्रांतियों के पीछे छुपा पर्यावरण मित्र

विश्व छिपकली दिवस हमें उस छोटे से जीव की ओर ध्यान आकर्षित करने का अवसर देता है, जिसे हम अक्सर दीवारों पर रेंगते हुए नजरअंदाज कर देते हैं। छिपकली, जो नजरों में साधारण और कभी-कभी डरावनी लगती है, वास्तव में प्रकृति की एक ऐसी कृति है, जो अपने अनोखे गुणों, जैविक महत्व और सांस्कृतिक प्रतीकवाद के कारण विशेष सम्मान की हकदार है। यह जीव न केवल पारिस्थितिकी तंत्र का अभिन्न हिस्सा है, बल्कि यह हमें अनुकूलन, लचीलापन और पर्यावरणीय संतुलन की गहरी सीख भी देता है।

छिपकलियां, जो लगभग 6000 प्रजातियों में विश्व भर में फैली हैं, अपनी विविधता और अनुकूलनशीलता के लिए अद्भुत हैं। गेको से लेकर गिरगिट तक, इगुआना से लेकर कोमोडो ड्रैगन तक, ये जीव आकार, रंग और व्यवहार में इतने भिन्न हैं कि इन्हें प्रकृति का जीवंत कैनवास कहा जा सकता है। कुछ छिपकलियां, जैसे गिरगिट, रंग बदलने की अपनी क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं, जो न केवल शिकार से बचाव बल्कि संचार का भी एक अनोखा तरीका है। दूसरी ओर, उड़ने वाली छिपकलियां (फ्लाइंग गेको) पंख जैसे त्वचा के विस्तार के सहारे हवा में ग्लाइड कर सकती हैं। यह विविधता हमें बताती है कि छिपकलियां केवल रेंगने वाले जीव नहीं हैं, बल्कि प्रकृति की रचनात्मकता का एक जीवंत प्रमाण हैं।

इन जीवों का पारिस्थितिक योगदान अनमोल है। एक सामान्य घरेलू छिपकली (जैसे हेमिडैक्टाइलस फ्रेनाटस) प्रतिदिन 10-20 कीड़े खा सकती है, जिसका अर्थ है कि एक वर्ष में यह हजारों कीटों को नियंत्रित करती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, मच्छरों जैसे कीटों से होने वाली बीमारियां, जैसे मलेरिया और डेंगू, हर साल लाखों लोगों को प्रभावित करती हैं। छिपकलियां इन कीटों को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करके न केवल मानव स्वास्थ्य की रक्षा करती हैं, बल्कि कीटनाशकों के उपयोग को भी कम करती हैं, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक होते हैं। उदाहरण के लिए, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां छिपकलियां घरों और खेतों में आम हैं, ये फसलों को कीटों से बचाने में अप्रत्यक्ष रूप से किसानों की मदद करती हैं। यह योगदान आर्थिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि कीटों से होने वाला नुकसान वैश्विक स्तर पर कृषि उत्पादन का 20-40% तक हो सकता है, जैसा कि संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ने अनुमान लगाया है।

छिपकलियों की पुनर्जनन क्षमता एक और आश्चर्यजनक विशेषता है, जो वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा का स्रोत रही है। जब कोई छिपकली अपनी पूंछ खो देती है, तो वह न केवल नई पूंछ उगा लेती है, बल्कि इसमें हड्डी, मांसपेशियां और तंत्रिकाएं भी विकसित हो जाती हैं। यह प्रक्रिया स्टेम सेल अनुसंधान और पुनर्योजी चिकित्सा के लिए एक महत्वपूर्ण मॉडल है। उदाहरण के लिए, वैज्ञानिक इस प्रक्रिया का अध्ययन करके यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या मानव शरीर में अंगों या ऊतकों के पुनर्जनन को संभव बनाया जा सकता है। यह संभावना क्रांतिकारी हो सकती है, खासकर उन लोगों के लिए जो दुर्घटनाओं या बीमारियों के कारण अंग खो देते हैं। इस तरह, छिपकली न केवल प्रकृति की रक्षा करती है, बल्कि मानवता के भविष्य को बेहतर बनाने में भी योगदान दे सकती है।

हालांकि, छिपकलियों का अस्तित्व आज खतरे में है। विश्व संरक्षण संघ (आईयूसीएन) के अनुसार, लगभग 20% छिपकली प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर हैं। शहरीकरण, वनों की कटाई, और रासायनिक कीटनाशकों का अंधाधुंध उपयोग इनके प्राकृतिक आवास को नष्ट कर रहा है। उदाहरण के लिए, भारत में आम गृह छिपकली (हाउस गेको) की संख्या शहरी क्षेत्रों में घट रही है, क्योंकि कंक्रीट की इमारतें और स्वच्छता के नाम पर कीटनाशकों का उपयोग उनके लिए जीवित रहना मुश्किल बना रहा है। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन ने भी उनके प्रजनन और व्यवहार को प्रभावित किया है। गर्म होती जलवायु के कारण कुछ प्रजातियों में अंडों का तापमान-निर्भर लिंग निर्धारण प्रभावित हो रहा है, जिससे लिंग अनुपात में असंतुलन पैदा हो रहा है। यह पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक गंभीर खतरा है, क्योंकि छिपकलियां खाद्य श्रृंखला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

छिपकली का सांस्कृतिक महत्व भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। भारत में, विशेष रूप से दक्षिण भारत में, छिपकली की आवाज को शुभ या अशुभ संकेत के रूप में देखा जाता है, जिसे "पल्ली शास्त्र" के नाम से जाना जाता है। यह मान्यता, हालांकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तर्कसंगत न हो, छिपकली के प्रति लोगों की गहरी जिज्ञासा और सम्मान को दर्शाती है। इसी तरह, ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी समुदायों में, छिपकली को सृष्टि की कहानियों में एक महत्वपूर्ण पात्र के रूप में देखा जाता है, जो धरती और आकाश के बीच संतुलन का प्रतीक है। प्राचीन मिस्र में, छिपकली को पुनर्जनन और अनंत जीवन का प्रतीक माना जाता था। ये सांस्कृतिक संदर्भ हमें यह याद दिलाते हैं कि छिपकली केवल एक जीव नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की कहानियों और विश्वासों का हिस्सा भी है।

छिपकलियां पर्यावरणीय स्वास्थ्य की सूचक भी हैं। उनकी उपस्थिति या अनुपस्थिति किसी क्षेत्र के पारिस्थितिक स्वास्थ्य का संकेत देती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी बगीचे में छिपकलियां अचानक गायब हो जाएं, तो यह रासायनिक प्रदूषण, कीटों की अधिकता या प्राकृतिक संसाधनों के असंतुलन का संकेत हो सकता है। वैज्ञानिक इन जीवों का उपयोग करके जलवायु परिवर्तन के प्रभावों, जैसे तापमान वृद्धि और वर्षा पैटर्न में बदलाव, का अध्ययन करते हैं। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि छोटे से छोटा जीव भी हमारे ग्रह की सेहत का एक महत्वपूर्ण थर्मामीटर हो सकता है।

छिपकली का जीवन हमें कई जीवन-प्रेरणाएं भी देता है। उनकी सतर्कता हमें सिखाती है कि हमें अपने परिवेश के प्रति हमेशा जागरूक रहना चाहिए। उनकी पूंछ पुनर्जनन की क्षमता यह संदेश देती है कि विपत्तियों के बाद भी नया निर्माण संभव है। उनका शिकार पकड़ने का धैर्य हमें बताता है कि सही समय का इंतजार सफलता की कुंजी है। ये गुण हमें न केवल जीव विज्ञान, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में भी प्रेरित करते हैं।

विश्व छिपकली दिवस पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम इन जीवों के प्रति अपनी सोच को बदलें। हमें उनके आवास की रक्षा करनी चाहिए—बागानों में रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग कम करना, उनके प्राकृतिक आवास को संरक्षित करना, और उन्हें मारने के बजाय सुरक्षित रूप से बाहर निकालना। स्कूलों और समुदायों में जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को इनके महत्व के बारे में शिक्षित करना भी जरूरी है। बच्चों को यह सिखाना कि छिपकली दुश्मन नहीं, बल्कि प्रकृति की सहयोगी है, भविष्य के लिए एक सकारात्मक कदम हो सकता है।

विश्व छिपकली दिवस हमें यह याद दिलाता है कि प्रकृति का हर जीव, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, इस ग्रह के संतुलन में एक अनमोल भूमिका निभाता है। छिपकली, जो दीवारों पर चुपके से रेंगती है, वह केवल एक जीव नहीं, बल्कि प्रकृति का एक मौन प्रहरी है, जो बिना किसी अपेक्षा के पर्यावरण की रक्षा करता है। यह दिन हमें यह सिखाता है कि हमें इस छोटे से जीव के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए, और इसके अस्तित्व को सुरक्षित रखने का वादा करना चाहिए। क्योंकि, जब तक दीवारों पर छिपकलियां रेंगती रहेंगी, तब तक हमारी धरती की कहानी जीवंत और संतुलित रहेगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सड़क के कुत्तों को डॉग शेल्टर होम में रखने के सुप्रीम आदेश के व्यवहारिक मायने दिलचस्प

कमलेश पांडेय

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने गत सोमवार को दिल्ली-एनसीआर के इलाकों से सड़क के कुत्तों को पकड़ने और उन्हें डॉग शेल्टर में रखने का निर्देश दिया है, उसके व्यवहारिक मायने दिलचस्प हैं जबकि कतिपय नेताओं व पशु प्रेमियों ने इस सुप्रीम आदेश की सड़क छाप मुखालफत शुरू कर दी है। देखा जाए तो यह प्रेम या घृणा का मामला नहीं है बल्कि वह सामाजिक न्यायिक पहल है जिससे सबका लोकतंत्र सुनिश्चित होता है, खासकर उन बच्चों-बुजुर्गों का जिन्हें इनसे सर्वाधिक खतरा रहता है। इसी भय से कई बार वे अकेले पार्क या पड़ोस में जाने से घबराते हैं।

दरअसल, कोर्ट ने ऐसा आदेश कुत्तों के काटने और रेबीज के खतरे के बढ़ने के मद्देनजर स्वत: संज्ञान लेते हुए उक्त आदेश दिया है। इसलिए वह आलोचना नहीं बल्कि बधाई का पात्र हैं। इससे मीडिया रिपोर्ट्स की गंभीरता और प्रासंगिकता भी परिपुष्ट हुई है। मेरी व्यक्तिगत राय है कि इसका दायरा बढ़ाकर इसमें बंदरों और उन जानलेवा आवारा जानवरों को भी इसमें शामिल किया जाना चाहिए।

सच कहूं तो सभ्य समाज के लिए खतरा बनते जा रहे स्ट्रीट क्रिमिनल्स और स्ट्रीट बायस्ड पॉलिटिकल एक्टिविस्ट, जिनकी लोकल थानों व पुलिस चौकियों से सांठगांठ होती है, यदि इन जैसों के खिलाफ भी ऐसा ही सुप्रीम आदेश निर्गत हो जाए तो सभ्य समाज का भला हो जाएगा क्योंकि कोई भी लोकतंत्र उन असभ्य लोगों को आजादी का अधिकार नहीं दे सकता जो कि समाज के अन्य वर्गों के लिए खतरा बनते जा रहे हों। संभव है कि भविष्य में न्यायालय इन विडंबना भरे सामाजिक स्थितियों पर भी गौर करेगा और बेलगाम राजनीतिक व प्रशासनिक हुक्मरानों को समाज के प्रति उसी तरह से संवेदनशील बनाएगा, जैसा कि उसके ताजा निर्णयों से महसूस किया जाता है।

बताते चलें कि अपने आदेश में कोर्ट ने साफ कहा है कि सरकार, एमसीडी और एनडीएमसी को अगले 6-8 हफ्तों में शेल्टर रूम की शुरुआत करनी होगी क्योंकि यहां स्थिति बेहद गंभीर है। लिहाजा, कुत्तों के काटने की समस्या से निपटने के लिए प्रशासन को तुरंत एहतियाती कदम उठाने की जरूरत है। लगे हाथ कोर्ट ने पशु प्रेमियों को यह दो टूक चेतावनी भी दे दी है कि अगर कोई व्यक्ति या संगठन इन आवारा कुत्तों को पकड़ने में बाधा डालेगा तो उसके खिलाफ भी सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

वाकई, कोर्ट ने साफ-साफ कहा है कि किसी भी कीमत पर शिशु और छोटे बच्चे रेबीज के शिकार नहीं होने चाहिए। उल्लेखनीय है कि जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और जस्टिस आर. महादेवन की बेंच ने स्पष्ट कहा है कि इस कार्रवाई से लोगों में यह भरोसा पैदा होना चाहिए कि वे बिना डर के स्वतंत्र रूप से घूम सकें, बिना इस भय के कि कोई सड़क का कुत्ता उन्हें काट लेगा। इस प्रकार देखा जाए तो कोर्ट के फैसले की कुछ अन्य अहम बातें इस प्रकार हैं-

पहला, कोर्ट ने सड़क के कुत्तों को गोद लेने की दलील खारिज करते हुए स्पष्ट कहा है कि सड़क के कुत्ते अचानक पालतू नहीं बन सकते। इसलिए इसकी इजाजत नहीं दी जा सकती है। दूसरा, मानव जीवन और सुरक्षा सबसे पहले है। इसलिए तुरंत कदम उठाए जाने चाहिए। तीसरा, रोजाना पकड़े गए और शेल्टर में रखे गए कुत्तों का रेकॉर्ड बनाएं। चतुर्थ, एक सप्ताह के भीतर हेल्पलाइन बनाई जाए ताकि कुत्ता-काटने के मामलों की रिपोर्ट हो सके।

वहीं, सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में स्पष्ट रूप से पूछा है कि, क्या एनिमल एक्टिविस्ट और 'कथित पशु प्रेमी' उन बच्चों को वापस ला पाएंगे जो रेबीज का शिकार हो गए। बता दें कि कोर्ट ने गत 28 जुलाई को स्वत: संज्ञान लेते हुए यह मामला उठाया था, जब एक रिपोर्ट में दिल्ली-एनसीआर में रेबीज के बढ़ते मामलों, बच्चों और बुजुर्गों की मौत पर चिंता जताई गई थी।

वहीं, दिल्ली-एनसीआर में सड़क के कुत्तों को शेल्टर होम में भेजने के आदेश के एक दिन बाद, सुप्रीम कोर्ट ने एक और नया सर्कुलर जारी किया। कोर्ट ने मंगलवार को कहा कि सुप्रीम कोर्ट परिसर में बचे खाने को खुले में न फेंकें। उसे सिर्फ ढक्कन लगे कूड़ेदान में डालें जिससे कि जानवरों के काटने की घटनाओं से बचा जा सके। सर्कुलर में इस मामले में नोटिस लिया गया कि सुप्रीम कोर्ट परिसर में गलियारों और लिफ्ट के अंदर कुत्तों के घूमने की घटनाओं में 'काफी' बढ़त देखी गई है।

वहीं, यह सबकुछ करते हुए भी कोर्ट की भाषा विनम्र है और उसने विज़टिर्स से भी निर्देश लागू करने में सहयोग मांगा है। जारी सर्कुलर में आगे कहा गया कि बचा हुआ सारा खाना सिर्फ कूड़ेदान में डाला जाए। किसी भी परिस्थिति में खुली जगह या बिना ढक्कन वाले बर्तनों में खाना नहीं फेंका जाना चाहिए। यह कदम जरूरी है जिससे कि जानवरों (सड़क के कुत्तों) को खाने की गंध से आकर्षित होकर इधर-उधर घूमने से रोका जा सके। कोर्ट ने माना कि इससे काटने की घटनाओं का खतरा कम होगा और परिसर में साफ-सफाई भी बनी रहेगी। सभी आगंतुकों से इस निर्देश को लागू करने में सहयोग को कहा गया है। बता दें कि यह सब एक स्वस्थ सामाजिक आचरण है, लेकिन जब शिक्षक व प्रशासकों ने अपनी जिम्मेदारी स्वत: न समझी और सामाजिक स्थिति बद से बदतर होती गई तो कोर्ट को हस्तक्षेप करना पड़ा।

उधर, कोर्ट के आदेश पर नेताओं का अलग-अलग नज़रिया सामने आया है। सड़क के कुत्तों को शेल्टर होम भेजने के सुप्रीम आदेश के खिलाफ कई नेताओं, संगठनों और बॉलिवुड सितारों ने आवाज बुलंद की है। एक ओर जहां दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने इस फैसले पर साफ कहा है कि सरकार जल्द ही एक स्ट्रीट डॉग नीति लेकर आएगी और योजनाबद्ध तरीके से कोर्ट के आदेश को लागू करेगी क्योंकि दिल्ली के लोग इससे तंग आ चुके हैं। इसलिए हम इस मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं क्योंकि हम लोगों को राहत देना चाहते हैं। चूंकि सड़क के कुत्तों की समस्या विकराल रूप ले चुकी है, इसलिए हम एक नीति बनाएंगे और लोगों को राहत देंगे।

राजनीतिक स्वाधीनता के बाद अब– लड़नी होगी आर्थिक आजादी की जंग!

डॉ घनश्याम बादल

15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ भारत आज 2025 में आजादी के 78 साल बाद एक दूसरी आजादी के जंग में खड़ा है । बेशक हम एक संप्रभु राष्ट्र हैं, राजनीतिक रूप से हमारा एक अलग देश है और हम स्वतंत्र राष्ट्र हैं लेकिन पिछले कुछ दिनों से दुनिया भर में जिस तरह अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 'ट्रंप टैरिफ' लागू किया है, उसकी छाया हम पर भी पड़ी है बल्कि कहें कि यदि किसी पर इस तथाकथित ट्रंप टैरिफ की मार पड़ी है तो वह भारत ही है।

हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी बार-बार कहते रहे हैं कि यह समय युद्ध का नहीं बल्कि शांति एवं समृद्धि की राह पर चलने का है लेकिन आज दुनिया भर में युद्ध के बादल छाए हुए हैं। यूक्रेन और रूस का युद्ध पिछले करीब 3 साल से जारी है, इसराइल और फिलिस्तीन में भारी संघर्ष हुआ और गाजा पट्टी का इलाका लगभग तबाह हो गया। इस बीच अमेरिका ने ईरान पर भी हमला किया, 22 अप्रैल को हुए पहलगाम हमले के बाद भारत और पाकिस्तान में भी तीखा संघर्ष हुआ जिसमें पस्त हो रहे पाकिस्तान ने त्राहिमाम त्राहिमाम करते हुए युद्ध विराम की प्रार्थना की और भारत मान गया।

शायद यही बहुत बड़ी ग़लती हुई और इस युद्ध विराम का श्रेय लूटने के लिए नोबेल शांति पुरस्कार पर निगाह गड़ाए बैठे डोनाल्ड ट्रंप मैदान में कूद पड़े। यह बड़ी अजीब स्थिति थी। यदि भारत यह स्वीकार करता कि डोनाल्ड ट्रंप ने ही यह युद्ध विराम कराया है, तब सरकार और देश दोनों की भद्द पिटती।

राजनीतिक दूर दृष्टि एवं अंदरूनी सियासत दोनों पर निगाह रखते हुए प्रधानमंत्री ने यह बात न स्वीकार की और न ही इस पर टिप्पणी की। इससे देश के अंदर भी माहौल गर्माया. शायद प्रधानमंत्री की इसी चुप्पी से डोनाल्ड ट्रंप चिढ़ गए और उन्होंने व्यापार घाटे की आड़ में भारत पर पहले 25% का टैरिफ लगाया और फिर भारत द्वारा यह कहने पर कि किसी भी देश ने भारत से युद्ध विराम की बात ही नहीं की, वह और भी ख़फ़ा हो गए और उन्होंने 25% का अतिरिक्त टैरिफ भी 27 अगस्त 2025 से भारत पर थोपने की घोषणा कर दी।

प्रश्न यह उठता है कि आज स्वाधीनता दिवस के अवसर पर इस घटना का जिक्र क्यों किया जा रहा है। तो इसका सीधा सा जवाब यह है कि हम राजनीतिक रूप से तो आज स्वतंत्र हैं, स्वाधीन है और आज़ादी की हवा में सांस ले रहे हैं लेकिन आर्थिक रूप से हम आज भी इतने मज़बूत नहीं हैं कि आर्थिक मार को झेल सकें। टैरिफ प्रकरण की वजह से एक बार फिर से देश के सामने आर्थिक आजादी पाने का संघर्ष मुंह बाए खड़ा है।

हमने सैन्य संघर्ष में तो पाकिस्तान के घुटने टिकवा दिए लेकिन आर्थिक युद्ध में हम आज चारों तरफ से घिरे हुए हैं। हमारी अर्थव्यवस्था भले ही विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बन गई हो लेकिन हम आज भी अमेरिका, चीन रूस और जापान जैसे देशों से बहुत पीछे हैं। हमने विकास तो किया है 'चार कदम सूरज की ओर' बढ़ाए भी हैं और 'उभरते हुए भारत' यानी 'इमर्जिंग इंडिया' की बातें भी जोर-जोर से उछलीं है लेकिन असली बात यही है कि आज भी आर्थिक रूप से हम आत्मनिर्भर देश के रूप में नहीं जाने जाते हैं।

जीवन के कई क्षेत्रों में हम दूसरे देशों पर निर्भर हैं और व्यापार घाटे का सामना भी कर रहे हैं । हमारे निर्यात पर अकेले अमेरिका द्वारा टैरिफ लगा दिए जाने से भारी आशंकाएं उभर कर सामने आई है और विशेषज्ञ मान रहे हैं कि इससे हमारी विकास दर एवं अर्थव्यवस्था को भारी झटका लग सकता है तो इस दृष्टि से देखें तो आज भी आर्थिक आज़ादी हमसे बहुत दूर है।

रक्षा उपकरण, विमान, हथियार और तकनीकी विकास के मामले में हम बहुत हद तक विदेशों पर निर्भर हैं । डॉलर, पौंड, युआन और रूबल तथा यूरो आदि के मुकाबले आज भी रुपए की हालत बहुत खराब है और लगातार यह है स्थिति बद से बदतर होती दिखती है । यदि हम आर्थिक रूप से सबल राष्ट्र के रूप में खड़े नहीं हो पाते हैं तो फिर राजनीतिक स्वाधीनता भी बेमानी हो जाती है।

यदि आर्थिक रूप से हमें स्वाधीनता प्राप्त करनी है तो ऊर्जा, खनिज पदार्थ, तेल, तकनीकी और रक्षा उपकरणों के मामले में हमें बहुत दूर तक जाना होगा । अपने बल पर अंतरिक्ष तक जाने लायक बनना होगा और निर्यात की दृष्टि से भी पूरे विश्व पर कड़ी दृष्टि रखनी होगी । विश्व भर के बाजार में अपने आयात निर्यात का इस प्रकार से विस्तार करना होगा कि आने वाले समय में हम किसी एक राष्ट्र या गुट पर निर्भर न रहें जिससे अपनी आयात निर्यात की नीति और राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिति के हिसाब से अपने निर्णय बेख़ौफ़ होकर लेने की सामर्थ्य जुटा सकें।

उत्तरी भारत के गांवों में एक बड़ी मशहूर कहावत है 'एक पैसा -एक अकल और चार पैसे- दस अकल', यानी आप जितने समृद्ध होंगे, जितने आत्मनिर्भर होंगे और अपनी रक्षा करने में समर्थ होंगे ,आपकी आजादी उतनी ही यथार्थ परक होगी तथा ठोस धरातल पर खड़े होकर आप पूरी दुनिया को अपने अनुसार चलने के लिए राज़ी कर पाएंगे तथा ज़रूरत पड़ी तो झुकने के बजाय झुकाने का सामर्थ्य भी तब आप में होगा।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक रूप से स्वावलंबी और सफल होने के लिए देश को अंदरुनी स्तर पर भी उत्पादन का स्तर एवं गुणवत्ता दोनों पर ध्यान देना होगा। कृषि क्षेत्र के साथ-साथ उद्योग तथा स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण के साथ-साथ तकनीकी तथा हस्त कौशल को बहुत आगे ले जाना होगा। स्वदेशी के प्रचार प्रसार और प्रयोग से ही सचमुच में 'सबका साथ, सबका विकास' के नारे को यथार्थ के धरातल पर उतर जा सकता है।

आंतरिक स्तर पर भी आय का वितरण समान करने पर काफी कार्य करना पड़ेगा । खासतौर पर कृषि को केवल वर्षा या प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर नहीं छोड़ा जा सकता है । साथ ही साथ अचानक आने वाली प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने के लिए भी एक 'प्रोएक्टिव सिस्टम' तो तैयार करना ही होगा किसी प्राकृतिक आपदा के आ जाने पर उससे निपटने के त्वरित उपाय एवं संसाधन भी जुटाने होंगे।

यदि हमें सचमुच में एक विश्वगुरु व आत्मनिर्भर, उभरता हुआ भारत बनाना है तो फिर आर्थिक स्थिति को मजबूत करना ही पड़ेगा लेकिन साथ ही साथ हमें अपनी परंपरा संस्कृति एवं विरासत को भी अक्षुण्ण रखते हुए उसे समृद्ध भी करना पड़ेगा । विकास के लिए किसी का भी अंधानुकरण करना लंबे समय तक कभी सार्थक नहीं हो सकता है । यदि हमें एक समर्थ और महाशक्तिवान भारत बनाना है तो आर्थिक एवं सामरिक दृष्टि से भी सशक्त,समर्थ, सक्षम एवं ठोस भारत का निर्माण करना होगा।

अटल बिहारी वाजपेयी: धड़कते भारत का अनंत हृदयस्पंदन

अटल बिहारी वाजपेयी की पुण्यतिथि वह पवित्र क्षण है, जब भारत न केवल एक युगदृष्टा नेता को श्रद्धांजलि देता है, बल्कि उस अमर आत्मा को नमन करता है, जिसने अपनी कविता की कोमलता, साहस की अटलता और संवेदनशीलता की गहराई से इस राष्ट्र के हृदय को स्पर्श किया। वे महज एक राजनेता नहीं थे; वे एक कवि थे, जिनके शब्दों में जीवन का सत्य और संघर्ष की प्रेरणा थी; एक दूरदर्शी थे, जिनके स्वप्नों में भारत का गौरव और वैश्विक सम्मान झलकता था; और एक सच्चे देशभक्त थे, जिनका हर निर्णय, हर कदम, इस देश की आत्मा को बलवती बनाने के लिए उठाया गया। वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को ग्वालियर की पवित्र माटी में हुआ, किंतु उनका जीवन किसी एक तारीख या स्थान की सीमाओं में नहीं बँधा। यह एक ऐसी यात्रा थी, जो भारत की हर धड़कन से जुड़ी—गाँव की मिट्टी की सौंधी खुशबू से लेकर संसद के गलियारों की गूंज तक। उनके पिता, पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी, एक कवि और शिक्षक थे, जिन्होंने उन्हें साहित्य की गहराई और संस्कृति की गरिमा का प्रेम सौंपा। लेकिन वाजपेयी की असली शिक्षा जीवन के कठोर अनुभवों और समाज की सच्चाइयों से मिली। कम लोग जानते हैं कि किशोरावस्था में ही उन्होंने सामाजिक भेदभाव के खिलाफ विद्रोह का बीज बोया था। ग्वालियर में एक बार उन्होंने दलित बच्चों के साथ भोजन करने का साहसिक आग्रह किया, जो उस समय की जड़ रूढ़ियों पर एक करारा प्रहार था। यह छोटी-सी घटना उनके उस अटल चरित्र की नींव थी, जो बाद में उनकी समावेशी नीतियों में उजागर हुआ—एक ऐसा भारत, जहाँ हर दिल की धड़कन सुनी जाए, हर इंसान का सम्मान हो, चाहे उसकी जाति, धर्म या पृष्ठभूमि कुछ भी हो।

उनकी काव्यात्मक आत्मा उनकी सबसे अनमोल धरोहर थी। उनकी कविता "मेरी ईश्वर से प्रार्थना नहीं, शक्ति दे मुझको इतनी, कि मैं न झुकूँ कभी" उनके जीवन का मंत्र थी। यह केवल शब्द नहीं थे; यह उनकी वह दृढ़ता थी, जो 1998 के पोखरण परमाणु परीक्षण में दिखी। इस साहसिक कदम ने भारत को वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित किया, लेकिन इसके पीछे उनकी एक अनदेखी रणनीति थी। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि भारत इस कदम के बाद कूटनीतिक रूप से अलग-थलग न पड़े। तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के साथ उनके पत्राचार और संवाद ने भारत को न केवल एक परमाणु शक्ति के रूप में बल्कि एक जिम्मेदार वैश्विक खिलाड़ी के रूप में पेश किया। यह उनकी वह कला थी, जो साहस और संयम का संगम थी—एक ऐसी कला जो आज के नेताओं के लिए एक सबक है।

वाजपेयी का पर्यावरण के प्रति प्रेम भी उनकी संवेदनशीलता का एक अनछुआ पहलू है। 1970 के दशक में, जब पर्यावरण का मुद्दा भारतीय राजनीति में गौण था, उन्होंने अपने भाषणों में नदियों, जंगलों और जैव-विविधता की रक्षा की वकालत की। उनकी यह सोच कि "हमारी नदियाँ हमारी सभ्यता की धरोहर हैं, और जंगल हमारे मंदिर हैं," आज के पर्यावरण संकट के दौर में और भी प्रासंगिक है। उनकी सरकार ने नदी संरक्षण के लिए प्रारंभिक योजनाएँ शुरू कीं, जो बाद में नमामी गंगे जैसे कार्यक्रमों की नींव बनीं। उत्तर प्रदेश में शुरू की गई "अटल वन" योजना, जिसमें 2020 से अब तक 22 जिलों में 12 लाख से अधिक पेड़ लगाए गए हैं, उनकी इस सोच का जीवंत प्रमाण है। यह योजना न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक कदम है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि वाजपेयी की विरासत आज भी नीतियों को प्रेरित करती है।

उनका इन्फ्रास्ट्रक्चर के प्रति दृष्टिकोण केवल सड़कों और भवनों तक सीमित नहीं था; यह एक सामाजिक क्रांति का माध्यम था। स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना, जिसने दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को जोड़ा, केवल एक सड़क नेटवर्क नहीं थी। यह भारत के गाँवों, कस्बों और शहरों को आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से जोड़ने का एक सपना था। आँकड़ों के अनुसार, इस परियोजना ने 2000-2010 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापार और रोजगार में 22% की वृद्धि दर्ज की। वाजपेयी का मानना था कि सड़कें केवल यात्रा का साधन नहीं, बल्कि अवसरों का सेतु हैं। यह उनकी वह दूरदृष्टि थी, जो आज भी भारत के विकास की रीढ़ बनी हुई है।

उनकी सांस्कृतिक दृष्टि भी उतनी ही प्रेरक थी। 2000 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में उनका भाषण एक ऐतिहासिक क्षण था। यह केवल भाषाई गर्व का प्रदर्शन नहीं था; यह भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को वैश्विक मंच पर स्थापित करने का साहस था। इस कदम ने न केवल हिंदी को सम्मान दिलाया, बल्कि भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी प्रोत्साहन दिया। यह वाजपेयी का वह विश्वास था कि भारत अपनी जड़ों के साथ ही वैश्विक मंच पर चमकेगा। उनकी यह पहल आज भी उन लोगों के लिए प्रेरणा है, जो अपनी भाषा और संस्कृति को गर्व के साथ अपनाना चाहते हैं।

वाजपेयी की कविताएँ और लेखन उनके दिल की आवाज़ थीं। उनकी रचना "कदम मिलाकर चलना होगा" न केवल एक कविता थी, बल्कि उनकी सामाजिक एकता की सोच का प्रतीक थी। उनकी एक कम चर्चित रचना "गीत नया गाता हूँ" में वे बदलाव और आशा की बात करते हैं, जो उनकी आंतरिक आशावादिता को दर्शाता है। यह वह पक्ष था, जो राजनीति के शोर में अक्सर अनदेखा रहा, लेकिन जिसने उन्हें जन-जन का प्रिय बनाया। उनकी लेखनी में एक ऐसी गहराई थी, जो न केवल मन को छूती थी, बल्कि आत्मा को भी झकझोरती थी।

उनका नेतृत्व एक ऐसी अमर मशाल था, जो सिखाता है कि सत्ता का सच्चा अर्थ सत्ता नहीं, बल्कि सेवा है। उनकी सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान का शंखनाद किया, जिसने 2000-2004 के बीच 2.5 करोड़ बच्चों के हाथों में किताबें और भविष्य की रोशनी थमाई। यह उनकी उस समावेशी दृष्टि का जीवंत प्रमाण था, जो हर बच्चे के सपनों को उड़ान देने का संकल्प रखती थी। वाजपेयी एक ऐसे भारत के स्वप्नद्रष्टा थे, जहाँ अवसरों की गंगा हर दरवाजे तक बहे, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म या पृष्ठभूमि का हो। उनकी नीतियों में राष्ट्रीय गौरव की गूंज थी, पर कट्टरता का कहीं नामोनिशान नहीं; उनमें आधुनिकता की चमक थी, पर अपनी सांस्कृतिक जड़ों से गहरा जुड़ाव। यह उनकी वह अनुपम कला थी, जो भारत को एक साथ सशक्त और संवेदनशील बनाती थी।

वाजपेयी की पुण्यतिथि केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक प्रेरणा का आलोक है, जो हमें उनके जीवन के अनमोल सबक याद दिलाता है। उनका जीवन कोई अतीत की कथा नहीं, बल्कि भविष्य का वह मार्गदर्शन है, जो हमें सिखाता है कि सच्चा भारत वही है, जो शक्ति के साथ संवेदना को, प्रगति के साथ परंपरा को गले लगाए। उनकी कविताएँ, जो आत्मा को झकझोरती हैं, उनके भाषण—जो हृदय में देशभक्ति की ज्योत जलाते हैं, और उनकी नीतियाँ—जो आज भी विकास का आधार हैं, हमें निरंतर प्रेरित करती हैं। उनकी पुण्यतिथि पर हमें यह संकल्प लेना है कि हम उनके स्वप्नों को साकार करेंगे—एक ऐसा भारत, जो विश्व मंच पर गर्व से सिर उठाए, पर अपने हर नागरिक के दिल में प्रेम और सम्मान के साथ बसे। उनकी स्मृति में हम यह प्रण लें कि हम उनके दिखाए पथ पर चलेंगे, उनके गीतों को गुनगुनाएँगे, और उनके सपनों को हकीकत में बदलेंगे—एक ऐसा भारत, जो अटल है, अडिग है, और अनंत है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत जैन",

स्वतंत्रता: सिर्फ़ तारीख नहीं, ज़िम्मेदारी का दर्पण

स्वतंत्रता का पर्व केवल एक दिन नहीं, बल्कि एक जीवंत स्मृति है, जो हमें हमारे बलिदानों की चिंगारी, संघर्षों की गाथा और सपनों की उड़ान को हमारे दिलों में जागृत करती है। 1947 में हमने अंग्रेज़ी हुकूमत की बेड़ियों को नहीं, बल्कि अपनी नियति की जंजीरों को तोड़ा। यह आज़ादी सिर्फ़ भौगोलिक सीमाओं की मुक्ति नहीं, बल्कि उस अटूट विश्वास का प्रारंभ थी, जो कहता है—हम भारतवासी अपने भविष्य को अपने हाथों से संवार सकते हैं। मगर आज, जब हम 78 साल बाद तिरंगे को नमन करते हैं, एक गहरा सवाल हमें झकझोरता है—क्या हम उस स्वतंत्रता के मोल को सचमुच जी रहे हैं, जिसके लिए लाखों प्राणों ने बलिदान दिया? क्या हमने स्वतंत्रता को केवल एक राष्ट्रीय अवकाश तक सीमित कर दिया है, या इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाया है?

स्वतंत्रता का मतलब सिर्फ़ विदेशी हुकूमत से छुटकारा नहीं है। यह उस मानसिकता से मुक्ति है, जो हमारे भीतर की शंकाओं को जलाकर राख कर दे। यह उस सोच से आज़ादी है, जो हमें दूसरों की नकल करने के लिए प्रेरित करती है, बजाय इसके कि हम अपनी अनूठी पहचान को गले लगाएँ। 1947 में हमने एक औपनिवेशिक ताकत को परास्त किया, मगर आज का दुश्मन कहीं अधिक चालाक और अदृश्य है—भ्रष्टाचार, सामाजिक गैर-बराबरी, अज्ञानता, और सबसे खतरनाक, हमारी अपनी उदासीनता। क्या हम इनके खिलाफ वही जुनून और निडरता दिखा रहे हैं, जो भगत सिंह ने फाँसी के फंदे को गले लगाते वक्त दिखाई थी? क्या हम उस दृढ़ संकल्प को जी रहे हैं, जिसके साथ गांधीजी ने सत्य और अहिंसा का रास्ता चुना था?

आज भारत दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जिसकी जीडीपी 2024 में 3.57 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँची, और हम 2030 तक 7 ट्रिलियन डॉलर का सपना संजोए हुए हैं। इसरो का चंद्रयान-3 चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर उतरकर इतिहास रच चुका है, और यूपीआई जैसी डिजिटल क्रांति ने दुनिया को भारत की ताकत दिखा दी है। मगर इन चमकती उपलब्धियों के पीछे एक कड़वा सच भी छिपा है। 2023 के ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में भारत 40वें पायदान पर खड़ा है, जबकि स्विट्ज़रलैंड जैसे छोटे देश शिखर पर हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था अभी भी जूझ रही है—राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बावजूद, केवल 26% युवा ही उच्च शिक्षा तक पहुँच पाते हैं। क्या यही वह स्वतंत्रता का स्वप्न है, जिसमें हर भारतीय अपनी पूरी क्षमता को छू सके?

स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ केवल बाहरी बेड़ियों से मुक्ति नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक आत्मा को पुनर्जनन देना है। हमारी भाषाएँ, परंपराएँ और कला हमारी धरोहर हैं, फिर भी हमने उन्हें आधुनिकता की चकाचौंध में किनारे कर दिया। 2021 की जनगणना बताती है कि भारत में 19,500 से अधिक बोलियाँ और 22 अनुसूचित भाषाएँ हैं, मगर कितने बच्चे अपनी मातृभाषा में सपने संजोते हैं? यूनेस्को के मुताबिक, 37% भारतीय अपनी स्थानीय भाषा को प्राथमिकता नहीं देते। हमारी संस्कृति हमारा गौरव है, पर हम इसे विदेशी चमक के सामने फीका पड़ने दे रहे हैं। आधुनिकता का अर्थ अपनी जड़ों को काटना नहीं, बल्कि उन्हें नए युग के साथ जोड़ना है। क्या हम ऐसी शिक्षा प्रणाली बना सकते हैं, जो बच्चों को उनकी संस्कृति पर गर्व करना सिखाए, साथ ही उन्हें वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धी बनाए?

स्वतंत्रता का एक और अनदेखा आयाम है—सामाजिक स्वतंत्रता। हमने संविधान में समानता का वादा किया, पर आज भी 2023 के आँकड़ों के अनुसार, भारत में 21% ग्रामीण आबादी गरीबी रेखा से नीचे रहती है। लैंगिक असमानता भी बरकरार है—विश्व आर्थिक मंच की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत जेंडर गैप इंडेक्स में 129वें स्थान पर है। स्वतंत्रता का सपना तब तक अधूरा है, जब तक समाज का हर वर्ग—चाहे वह महिला हो, दलित हो, या ग्रामीण हो—वास्तविक आज़ादी का अनुभव न करे। हमें यह सवाल पूछना होगा—क्या हमारी स्वतंत्रता केवल शहरों की चकाचौंध, मॉल्स और ऊँची इमारतों तक सिमटी है? या वह उन गाँवों तक पहुँच रही है, जहाँ बिजली और स्वच्छ पानी आज भी एक दूर का सपना हैं?

लोकतंत्र हमारी सबसे बड़ी ताकत है, पर यह ताकत तभी सार्थक है, जब हर नागरिक इसमें हिस्सा ले। 2019 के लोकसभा चुनाव में 67% मतदान हुआ, जो एक उपलब्धि थी, पर 33% लोग क्यों वोट देने नहीं आए? क्या यह हमारी उदासीनता का सबूत नहीं? स्वतंत्रता की रक्षा केवल संसद में नहीं होती, यह हर उस छोटे-बड़े फैसले में होती है, जो हम अपने दैनिक जीवन में लेते हैं। जब हम रिश्वत देने से इनकार करते हैं, जब हम कूड़ा सड़क पर न फेंकने का फैसला करते हैं, जब हम किसी अन्याय के खिलाफ बोलते हैं— तब हम सच्चे अर्थों में स्वतंत्रता के सिपाही बनते हैं।

आज का सबसे बड़ा खतरा है हमारी आत्मसंतुष्टि। हम यह मान लेते हैं कि स्वतंत्रता एक स्थायी उपहार है, जिसे कोई छीन नहीं सकता। मगर इतिहास चीख-चीखकर बताता है कि स्वतंत्रता नाजुक है। रोमन साम्राज्य हो या मिस्र की सभ्यता—वे बाहरी हमलों से कम, अपनी आंतरिक कमज़ोरियों से ज़्यादा ढहीं। आज हमारा दुश्मन बाहरी शक्तियों से ज़्यादा हमारी अपनी कमियाँ हैं—जातिवाद, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार, और सबसे खतरनाक, हमारा यह विश्वास कि "बदलाव कोई और लाएगा।" स्वतंत्रता दिवस हमें झकझोरता है, हमें याद दिलाता है कि बदलाव का बीज हर नागरिक के दिल में अंकुरित है, बस उसे सींचने की हिम्मत चाहिए।

इस स्वतंत्रता दिवस पर हमें एक ऐसा संकल्प लेना है, जो बड़े-बड़े वादों की चकाचौंध से परे हो—यह है छोटे, मगर ठोस कदमों का संकल्प। अगर हर भारतीय अपने काम में 1% ज़्यादा जुनून, अपने समाज में 1% ज़्यादा संवेदना, और अपने देश के लिए 1% ज़्यादा ज़िम्मेदारी लाए, तो ये छोटे-छोटे कदम मिलकर एक विराट क्रांति रच सकते हैं। हमें यह भी याद रखना होगा कि स्वतंत्रता सिर्फ़ हमारा अधिकार नहीं, बल्कि एक पवित्र कर्तव्य है, जो हमें हर दिन निभाना है।

लहराता तिरंगा केवल रंगों का प्रतीक नहीं, बल्कि उन अनगिनत शहीदों की कुर्बानी का आलम है, जिन्होंने अपने सपनों को हमारे भविष्य के लिए बलिदान कर दिया। हर बार जब वह हवा में फहराता है, वह हमसे सवाल करता है—तुमने मेरे लिए क्या किया? क्या तुमने मुझे और मज़बूत किया, या सिर्फ़ मेरे नाम पर सीना चौड़ा किया? स्वतंत्रता का असली जश्न तब होगा, जब हम अपने भीतर के आलस्य, भय, और संकीर्णता को हराएँगे। जब हम अपने बच्चों को सिर्फ़ डिग्रियाँ नहीं, बल्कि चरित्र की विरासत देंगे। जब हम अपनी संस्कृति को संग्रहालयों की धूल में नहीं, बल्कि अपने जीवन में जीवित रखेंगे।

यह स्वतंत्रता दिवस महज़ एक उत्सव नहीं, बल्कि एक पवित्र आत्ममंथन का क्षण है। यह वह दिन है, जब हमें ठान लेना है कि हम केवल स्वतंत्रता के वारिस नहीं, बल्कि इसके सर्जक भी हैं। लहराता तिरंगा हमें ललकारता है—उठो, जागो, और तब तक न थमो, जब तक भारत वह स्वप्निल देश न बन जाए, जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने अपने प्राण न्यौछावर किए। एक ऐसा भारत, जो न केवल आर्थिक और वैज्ञानिक शक्ति का प्रतीक हो, बल्कि नैतिकता और सांस्कृतिक दृढ़ता का झंडाबरदार भी हो। एक ऐसा भारत, जो दुनिया को सिर्फ़ तकनीक नहीं, बल्कि शांति, सहिष्णुता और मानवता की मशाल सौंपे। यही होगी हमारी सच्ची आज़ादी की जीत।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

परम्परागत संस्कृत अध्ययन की अनिवार्यता ही लौटाएगी देववाणी का पुरातन गौरव

सुनील बाजपेई

चाणक्य नीति का एक प्रसिद्ध श्लोक है जो आज के समय में देववाणी संस्कृत पर सटीक बैठता है। कार्यार्थी भजते लोकं यावत्कार्य न सिद्धति उत्तीर्णे च परे पारे नौकायां किं प्रयोजनम लोग तब तक दूसरों की प्रशंसा करते हैं जब तक उनका काम नहीं निकल जाता। एक बार जब उनका काम हो जाता है, तो वे उन लोगों को भूल जाते हैं, जिन्होंने उनकी मदद की थी। यह एक सामान्य स्वभाव है, नदी पार के बाद नौका की कोई पूछ नहीं होती है। संस्कृत के साथ भी कुछ ऐसा ही है। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसमें संस्कृत से कुछ न लिया गया हो। संस्कृत को दिया किसी ने भी नहीं।

संस्कृत देव भाषा है। संस्कृति का आधार है। वेदों, उपनिषदों, और पुराणों जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की जननी है। भारतीय संस्कृति, दर्शन और साहित्य का भंडार है। आदि वाक्यों से पिछले एक सप्ताह संस्कृत का खूब गुणगान किया गया। विभिन्न मंत्रियों, क्रिकेटरों ,बॉलीवुड यहां तक प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि तक ने संस्कृत की महत्ता को वर्तमान समय के लिए आवश्यक बताते हुए इसे आत्मसात करने का आह्वान किया। पर वास्तव में क्या आज संस्कृत का हमारे जीवन में वह स्थान है जिसकी वो बाकायदा अधिकार है। सवाल है कि कहने भर से क्या संस्कृत अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर लेगी। जवाब होगा, नहीं। जिस भाषा का गौरवमयी स्वर्णिम अतीत रहा हो, आज वह जिस गति से धरातल की ओर बढ़ रही है। वह भाषा विशेषज्ञों के साथ-साथ आमजन के लिए भी कम चिंता का विषय नहीं है। संस्कृत की वर्तमान स्थिति का जिम्मेदार कौन है, इस पर चिंतन समय की जरूरत है।

भारत में प्रतिवर्ष श्रावणी पूर्णिमा के पावन अवसर को संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। इससे पहले के तीन दिन और बाद के तीन दिनों को मिलाकर संस्कृत सप्ताह का नाम दिया गया है। इस बार यह आयोजन 6 अगस्त से 12 अगस्त तक रहा। 9 अगस्त को विश्व संस्कृत दिवस भी मनाया गया। यह दिन संस्कृत भाषा के महत्व को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है, जिसे भारत की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक माना जाता है।

श्रावणी पूर्णिमा अर्थात रक्षाबन्धन ऋषियों के स्मरण तथा पूजा और समर्पण का पर्व माना गया है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि ऋषि ही संस्कृत साहित्य के आदि स्रोत हैं इसलिए श्रावणी पूर्णिमा को ऋषि पर्व और संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाना सार्थक भी है। इस अवसर पर हर वर्ष की तरह राज्य तथा जिला स्तरों पर संस्कृत दिवस आयोजित गए। संस्कृत कवि सम्मेलन, लेखक गोष्ठी, भाषण तथा श्लोकोच्चारण प्रतियोगिताओं आदि का भी व्यापक स्तर पर आयोजन हुआ।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि क्या संस्कृत सप्ताह मात्र संस्कृत संस्थानों और संगठनों का सामान्य कार्यक्रम होकर ही होकर रहना चाहिए? क्या संस्कृत के प्रति हमारी जिम्मेदारी नहीं है ? आज जब बात संस्कार की हो, संस्कृति की हो तो क्या संस्कृत को नजर अंदाज कर सकते हैं। संस्कृत सभी की है और सभी को संस्कृत सीखना या संस्कृत के लिये कार्य करना आवश्यक है।

संस्कृत की जो वर्तमान में स्थिति है उसके जिम्मेदार राजनेताओं के साथ-साथ हम सब संस्कृत की रोटी खाने वाले भी हैं। हमने सिर्फ अपने समय के बारे में सोचा है। जैसा है, जो है बस उसी को सिरोधार्य कर संस्कृत सेवा की इतिश्री कर ली। जो संस्कृत विद्वान है उन्हें अपनी विद्वता पर इतराने से फुर्सत नहीं। जो सामान्य है उन्हें इससे आगे बढ़ना नहीं। यही वजह है कि संस्कृत समय के साथ अपने आपको बरकरार नहीं रख पा रही।

एक समय था जब संस्कृत की रोजगार प्रतिशतता सौ फीसदी थी। गुरुकुल, संस्कृत महाविद्यालयों में दाखिलों के लिए होड़ बनी रहती थी। आज हालत यह है कि दाखिलों के अभाव में गुरुकुल बंद होते जा रहे हैं। जो शेष है या तो उन्होंने समय के साथ आधुनिकता का समावेश कर लिया है या फिर कर्मकांड ज्योतिष प्रशिक्षण तक अपने आपको सीमित कर लिया है। जब सामान्य संस्कृत की पढ़ाई से ही शिक्षक, व्याख्याता आदि की नौकरी प्राप्त होने की योग्यता प्राप्त हो रही है तो क्यों फिर तपस्वियों जैसे रहकर विशारद, शास्त्री, आचार्य, विद्यावारिधि, विद्यावाचास्पति की उपाधियां प्राप्त कर जीवन के कीमती 10 वर्ष खराब करें। सामान्य व्याकरण से काम चलता हो तो क्यों अष्टाध्यायी, महाभाष्य, कौमुदी त्रय लघु सिद्धांत,मध्य सिद्धांत, वैयाकरण सिद्धांत पढ़कर सोशल मीडिया पर व्यतीत होने वाला समय क्यों गंवाएं। महाकाव्य रामायण, महाभारत, भगवतगीता, मेघदूत, कुमारसंभव, कादंबरी, काव्य शास्त्र, अलंकार शास्त्र, चरक संहिता सरीखे बहुमूल्य

झारखंड में ओड़िया मजबूत अल्पसंख्यक पर संवैधानिक अधिकारों से दरकिनार?

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला, भारतीय स्वतंत्रता के 77 वर्ष हो गये हैं, पर झारखंडी ओड़िया लोगों को उनका संवैधानिक हक आजतक नहीं मिल पाना बड़ा ही खेदजनक विषय है एक गणतांत्रिक देश के लिए ।

झारखंड में संवैधानिक तौर पर मजबूत भाषाई अल्पसंख्यक की बात की जाय तो वे ओड़िया ही है। चाहे सरायकेला खरसावां हो या समग्र सिंहभूम । पर वे आर्थिक , सामाजिक, भाषाई, सांस्कृतिक, शैक्षणिक रूप से न्याय की बाट जोहते पीढ़ी दर पीढ़ी मर रहे हैं, सुनने वाला कोई नहीं । जिस सरायकेला खरसावां दो देशी रियासत कभी ओडिशा का एक राजस्व जिला रहा, या समुचा सिंहभूम जो 1936 के पहले तक ओडिशा रहा तब बिहार -ओडिशा व्यवस्थापक सभा में 11 सदस्य हुआ करते थे । जहां स्वयं मधूसुदन दास जैसे व्यक्ति 1923 में वहां बिहार ओडिशा के मंत्री रहे ।

पर बड़ी चालाकी से समुचे सिंहभूम में ओड़िया को नगण्य कर रखा गया है आज । आजाद मुल्क में संविधान बनने के बाद उसके एस आर सी रिपोर्ट के अनुसार सातवां संसोधन झारखंड में उस ओडिशा जैसे ढाई हजार साल की पुरानी भाषा उसकी संस्कृति जो उत्तर भारत की एकमात्र शास्त्रीय भाषा को उसका हक नहीं दिया जाना सरकार को कटघरे में लाकर खड़ा करता है ।

आइये जानते है अल्पसंख्यकों को भारत के भूभाग या उसके किसी भाग में निवास करने वाले व्यक्तियों के समूह या समूहों के रूप में माना जाता है, जिनकी अपनी एक विशिष्ट भाषा या लिपि होती है। यद्यपि भारत के संविधान में भाषाई अल्पसंख्यक शब्द को परिभाषित नहीं किया गया है, फिर भी अल्पसंख्यक समूह की भाषा संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित बाईस भाषाओं में से एक होना आवश्यक नहीं है।

संक्षेप में, राज्य स्तर पर भाषाई अल्पसंख्यकों का अर्थ ऐसे लोगों के समूह या समूहों से है जिनकी मातृभाषा राज्य की मुख्य भाषा से भिन्न है, और ज़िला तथा तालुका/तहसील स्तर पर, संबंधित ज़िले या तालुका/तहसील की मुख्य भाषा से भिन्न है।

इसलिए, राज्य पुनर्गठन आयोग (एसआरसी) 1956 ने भाषाई अल्पसंख्यकों की शिकायतों के समाधान हेतु एक तंत्र के निर्माण की सिफारिश की।

एसआरसी की सिफारिशों के आधार पर, 7वां संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1957 अधिनियमित किया गया, जिसके द्वारा संविधान में अनुच्छेद 350 (क) और (ख) को शामिल किया गया।

अनुच्छेद 350-बी भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए एक विशेष अधिकारी का प्रावधान करता है, जिसे भारत में भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए आयुक्त (सीएलएम) के रूप में जाना जाता है, जो संविधान के तहत भारत में भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए प्रदान किए गए सुरक्षा उपायों से संबंधित सभी मामलों की जांच करेगा और राष्ट्रपति को उन मामलों पर ऐसे अंतरालों पर रिपोर्ट करेगा जैसा कि राष्ट्रपति निर्देश दे सकते हैं और राष्ट्रपति ऐसी सभी रिपोर्टों को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाते हैं और संबंधित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की सरकार/प्रशासन को भेजते हैं।

बैधनाथ धाम का मामला चीफ सेक्रेटरी ,डीजीपी ,डीएम को अब विशेषाधिकार हनन की नोटिस: निशिकांत दुबे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

राची , गोड्डा सांसद निशिकांत दुबे और दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी पर बाबा मंदिर थाना में प्राथमिकी दर्ज होने के बाद, सांसद निशिकांत दुबे ने शुक्रवार को लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर इसे विशेषाधिकार हनन का मामला बताया था। सांसद डॉ. निशिकांत दुबे ने बताया अब मामले में मुख्य सचिव, डीजीपी, देवघर के उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक को विशेषाधिकार हनन का नोटिस भेजा गया है ।

गोड्डा सांसद डॉ. निशिकांत दुबे और दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी पर बाबा मंदिर थाना में प्राथमिकी दर्ज होने के बाद, सांसद ने शुक्रवार को लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर इसे विशेषाधिकार हनन का मामला बताया था। सांसद निशिकांत दुबे ने बताया कि मामले में मुख्य सचिव, डीजीपी, देवघर के उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक को विशेषाधिकार हनन का नोटिस भेजा गया है ।

जानकारी हो कि सांसद ने इस पूरे मामले को घोर असंवैधानिक कार्य बताते हुए विशेषाधिकार हनन का मामला बताया था। उन्होंने प्रोटोकॉल मानदंडों का भी उल्लंघन बताया था। सांसद दुबे ने लोकसभा अध्यक्ष से अनुरोध किया था कि झारखंड सरकार के मुख्य सचिव, झारखंड के पुलिस महानिदेशक, देवघर के जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाए। साथ ही यह भी अनुरोध किया था कि इस बात की जांच का आदेश दिया जाए कि हेमंत सोरेन के मुख्यमंत्री बनने के बाद से उनके विरुद्ध कितनी प्राथमिकी दर्ज की गई हैं।

बता दें कि शुक्रवार को पंडा धर्मरक्षिणी सभा के पूर्व महामंत्री कार्तिक नाथ ठाकुर के बयान पर गोड्डा सांसद डॉ. निशिकांत दुबे और दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी एवं अन्य पर निकास द्वार से मंदिर में प्रवेश करने का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज की गई थी। शनिवार को सांसद डॉ. दुबे देवघर आए और बाबा मंदिर थाना पहुंचकर गिरफ्तार करने का आग्रह किया, लेकिन कानूनी प्रावधानों में तकनीकी कारणों से उनकी गिरफ्तारी करने से इनकार कर दिया।

सिंहभूम में एक नक्सली ढेर ,राइफल बरामद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

चाईबासा , झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के चाईबासा में पुलिस एवं सुरक्षा बलों के साथ हुई मुठभेड़ में एक माओवादी नक्सली मारा गया। बुधवार सुबह गोइलकेरा थाना क्षेत्र के सौता गांव के पास हुई इस घटना में पुलिस ने एक एसएलआर राइफल भी बरामद की है। आपको बता दें कि जिले के नक्सल प्रभावित इलाकों, खासकर सारंडा और आसपास के जंगलों में पिछले कुछ समय से पुलिस लगातार अभियान चला रही है। इन सर्च ऑपरेशनों के तहत पुलिस ने हाल ही के दिनों में कई नक्सली बंकर ध्वस्त किए हैं और बड़ी संख्या में आईईडी व हथियार बरामद किए हैं। क्षेत्र को पूरी तरह नक्सल मुक्त बनाने के लिए यह अभियान चलाए जा रहे है।

इसी के तहत बुधवार को चाईबासा के गोइलकेरा इलाके में पुलिस टीम ने सर्च ऑपरेशन चलाया था। झारखंड पुलिस के आईजी अभियान डॉ. माइकल राज ने जानकारी देते हुए बताया कि अभियान के तहत जैसे ही टीम सौता के जंगल-पहाड़ी इलाकों में पहुंची तो नक्सलियों की तरफ से अचानक गोलीबारी होने लगी। इसकी जवाबी कार्रवाई में पुलिस और सुरक्षा बलों की टीम ने भी फायरिंग शुरु की जिसके बाद करीब एक घंटे तक दोनों तरफ से कई राउंड गोलियां चलती रही। आईजी अभियान ने बताया कि, मुठभेड़ के बाद जब इलाके की तलाशी ली गई उस दौरान एक नक्सली का शव बरामद हुआ। फिलहाल उसकी शिनाख्त नहीं हुई है।

उत्कल विश्वविद्यालय के छात्रावासों को गैर-छात्रों से खाली नहीं कराया जाता है, कार्रवाई के आदेश

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वरः उत्कल विश्वविद्यालय परिसर में गैर-छात्रों का बाहर निकलना मना है। शाम होते ही शराबियों का अड्डा शुरू हो जाता है। सिर्फ़ परिसर ही नहीं, कुछ लोगों ने छात्रावास पर भी कब्ज़ा कर लिया है। ऐसी शिकायतें बार-बार आ रही हैं। प्रशासन उन्हें खदेड़ने के लिए बार-बार पुलिस का इस्तेमाल कर रहा है, और हालात फिर से जस के तस हैं।कई छात्र अपने नाम से छात्रावासों के लिए आवेदन कर रहे हैं। सीटें आवंटित होने के बाद, वे उन्हें बाहरी लोगों को बेच रहे हैं। ऐसे आरोप लगाए गए हैं। उत्कल विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने इन गैर-छात्रों के खिलाफ कार्रवाई करने की इच्छा व्यक्त की है। यह सच है कि उन्होंने गैर-छात्रों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी है, लेकिन यह देखना बाकी है कि यह कितना प्रभावी होगा।

विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि सोमवार तड़के 3:45 बजे उत्कल विश्वविद्यालय के छात्रावास संख्या 3, यानी फकीरमोहन छात्रावास की दूसरी मंजिल के गलियारे से गिरकर एक 40 वर्षीय युवक की मौत हो गई। बताया गया है कि छात्रावास में चार गैर-छात्र शराब और मांस का सेवन कर रहे थे। उक्त 40 वर्षीय युवक नशे में धुत था। गलियारे में चलते समय उसका संतुलन बिगड़ गया और उसकी मौत हो गई। छात्रावास के जिस कमरे में ये गैर-छात्र रह रहे थे, उसे किसी अन्य छात्र को आवंटित कर दिया गया है। इस बीच, अधिकारियों ने परिसर की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए काम करना शुरू कर दिया है। अब से, छात्रों की ज़रूरतों के आधार पर छात्रावास की सीटें आवंटित की जाएँगी।

उनके आवेदनों पर विचार किया जाएगा। छात्रावास में छात्रों के नाम पर आवंटित सभी कमरों की पहचान की जाएगी और पता लगाया जाएगा कि उस कमरे में कौन रह रहा है और कौन उसे किराए पर दे रहा है। उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। छात्रावास में रहने वाले लोग रात में कमरे से बाहर नहीं घूमेंगे। अगर उनके कमरों में गैर-छात्र रह रहे हैं, तो उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के बाद, फकीर मोहन छात्रावास से बिजली और पानी के कनेक्शन काट दिए गए हैं। बताया जा रहा है कि नवीनीकरण कार्य के लिए कनेक्शन काटे जाएँगे।

दूसरी ओर, एबीवीपी ने कहा कि उत्कल विश्वविद्यालय में मादक पदार्थों की तस्करी बढ़ रही है। छात्रावास के कमरे बेचे या किराए पर दिए जा रहे हैं। कुछ छात्र संगठनों के लोग ऐसी गतिविधियों में शामिल हैं। वे परिसर में अराजकता फैला रहे हैं।

पुरी श्रीमंदिर परिक्रमा दीवार पर धमकी भरे संदेश, आतंकी हमले की आशंका बढ़ी

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : श्रीमंदिर का परिक्रमा मार्ग कड़ी सुरक्षा में है। सरकार ने प्रशासनिक तौर पर इसे श्रीमंदिर सुरक्षा क्षेत्र के रूप में दर्ज किया है। लेकिन इस सुरक्षा क्षेत्र में असामाजिक अशांति बढ़ती जा रही है। परिक्रमा मार्ग की दीवारों पर आतंकवादी हमलों की धमकी भरे लेख देखे गए हैं।जिसे पढ़कर श्रद्धालु हैरान रह गए। किसी ने दो जगहों पर कड़ी चेतावनी लिखी है, 'मंदिर को आतंकवादी नष्ट कर देंगे'। इसमें पीएम मोदी का नाम भी लिखा है। यह धमकी भरा लेख मंदिर के दक्षिण दिशा में देखा जा सकता है। बालीसाही प्रवेश द्वार के ठीक दाईं ओर, वृद्धा ठकुरानी की दीवार पर किसी ने दो जगहों पर यह धमकी भरा लेख लिखा है। एक तरफ 'मंदिर को आतंकवादी नष्ट कर देंगे', दोस्त को कई फ़ोन नंबर लिखे हैं और दूसरी तरफ, मुझे फ़ोन करो, वरना पूरी रहेगी, परिवार डूब जाएगा, आतंकवादी, आदि।

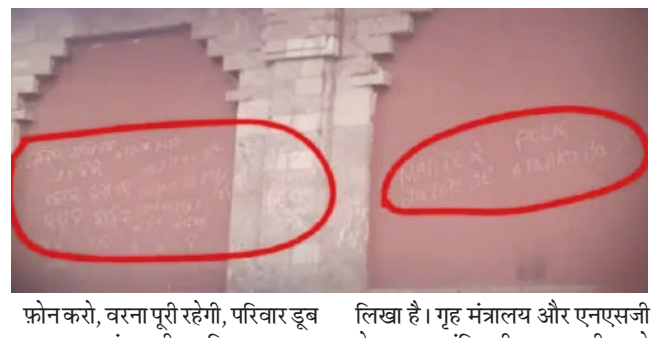

इसी तरह, दूसरी तरफ पुलिस का नाम और 'मंदिर को आतंकवादी नष्ट कर देंगे' लिखा है। उपद्रवियों ने यहाँ लगी कई सजावटी लाइटें भी तोड़ दी हैं। इस जगह पर कई सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। सुरक्षा गार्ड भी तैनात किए गए हैं। लेकिन स्थानीय लोग यह जानकर भी हैरान हैं कि दीवार पर आतंकवादी के नाम से यह धमकी भरा लेख किसने लिखा है। गृह मंत्रालय और एनएसजी ने बार-बार मंदिर की सुरक्षा कड़ी करने की सलाह दी है। अभी तक मंदिर के परिक्रमा मार्ग पर लगे सभी सीसीटीवी कैमरे काम नहीं कर रहे हैं। करोड़ों रुपये की लागत से इन्हें सिर्फ़ लोगों को दिखाने के लिए लगाया गया है। स्थानीय निवासी और मंदिर के पुजारी विश्वजीत महापात्र ने कहा कि प्रशासन मंदिर के आसपास सुरक्षा को महत्व नहीं दे रहा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023